मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 58 | अंक : 2 | अगस्त, 2017 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

॥ स्वयमेव मृगेन्द्रता ॥

सत्यमेव जयते

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा
एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

विद्यालय बने सेंटर ऑफ एक्सीलेंस

शिक्षण संस्थाओं के हित में समाज द्वारा वित्तीय एवं भौतिक संसाधन उपलब्ध करवाने की दिशा में भामाशाहों के अप्रतिम अवदान की उज्ज्वल परम्परा से हम भलीभाँति परिचित हैं। अपने खून-पसीने की कमाई को शिक्षा के उन्नयन के लिए मुक्त हस्त दान करने वाले दानदाताओं के एक से एक बढ़कर दृष्टान्त ध्यान में आते हैं। मोरखाना विद्यालय जिला बीकानेर ने ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है जिसे मैं आपके साथ शेयर करना चाहता हूँ। विद्यालय के पास कमरे बनाने के लिए वर्तमान भवन से सटी जमीन नहीं होने पर पास में स्थित एक फैक्ट्री के मालिक ने फैक्ट्री की भूमि विद्यालय को सहर्ष दान में दी। अपनी रोजी रोटी के साधन को भी शाला हित में भेंट कर दिया। त्याग का यह उत्कृष्ट उदाहरण है।

दान में मिली इस भूमि और विद्यालय के बीच में एक सार्वजनिक गली थी। सरपंच एवं गाँव के मोजिज व्यक्तियों ने विद्यालय में आयोजित ग्राम सभा में बैठकर सर्वसम्मति से वह सार्वजनिक गली भी स्कूल को अर्पित कर दी। गाँव वालों ने यह स्वीकार कर लिया कि उन्हें भले ही लम्बा रास्ता तय करके जाना पड़े लेकिन विद्यार्थियों एवं विद्यालय के हित में हर प्रकार का त्याग करेंगे। मैं मोरखाना गाँव को साधुवाद देता हूँ। उनकी यह नजीर निश्चय ही प्रदेश के अन्य भागों में प्रेरणा बनकर सामने आएगी। इस विद्यालय से उच्च माध्यमिक परीक्षा 2017 (कला वर्ग) में बैठे सभी 31 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए हैं। संख्यात्मक (टारगेट 100 प्रतिशत) एवं गुणात्मक (मिशन मेरिट) परीक्षा परिणाम का इससे बेहतर उदाहरण भला और क्या हो सकता है। मुझे ऐसे विद्यालयों, संस्थाप्रधानों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों पर गर्व है।

'मुख्यमंत्री विद्यादान कोष' एवं 'ज्ञान संकल्प पोर्टल' इस दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। राजकीय विद्यालयों को वित्तीय सम्बलन प्रदान करने तथा आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण के उद्देश्य से भामाशाह और औद्योगिक इकाइयाँ कॉर्पोरेट सोश्यल रेस्पोंसिबिलिटी (CSR) के तहत ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से जुड़कर शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे नवाचारों एवं आधारभूत सुविधाओं को बढ़ाने के लिए सहयोग कर सकते हैं। इनका शुभारम्भ इस माह, 05 अगस्त 2017 को माननीया मुख्यमंत्री महोदया के करकमलों से सम्पन्न होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी लोकप्रिय मुख्यमंत्री महोदया के मार्गदर्शन में आगामी समय में राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धियों के नये आयाम बनेंगे।

'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए राज्य की पहल' (SIQE) कार्यक्रम अब राजस्थान में अपनी पहिचान बना चुका है। इससे आधारभूत प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा को गुणमयी एवं तेजोमयी बनाने में सहायता मिली है। इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रदेश के प्रथम चरण के आदर्श विद्यालयों, ब्लॉक रिसोर्स विद्यालयों एवं द्वितीय चरण के कुछ चयनित विद्यालयों में प्रतिपुष्टि एवं प्रमाणीकरण (Feedback and Certification) का कार्य करवाया जा रहा है। यह बहुत अच्छी बात है कि हम जो काम कर रहे हैं, उसकी समय-समय पर समीक्षा तो होनी ही चाहिए। मुझे विश्वास है कि प्रतिपुष्टि एवं प्रमाणीकरण का यह कार्य बहुत अच्छे से वस्तुनिष्ठ तरीके से सम्पन्न होगा, जिससे हमारे भावी कार्यक्रमों की संरचना का आधार हमें मिल सकेगा।

हमारा संकल्प प्रदेश के सभी विद्यालयों को 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' के रूप में विकसित करने का है। इनमें कम्प्यूटर शिक्षा के लिए आई.सी.टी. लेब अवश्य होगी। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'वर्चुअल क्लास रूम' स्थापित करने के साथ ही छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालयों में विषय विशेषज्ञों के साथ विशेष संवाद कार्यक्रम रखे जाएँगे।

इस माह में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पावन पर्व है। **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।** के द्वारा निष्काम कर्म का सन्देश देने वाले भगवान वासुदेव के पावन पर्व के साथ ही निर्बल की रक्षा का संकल्प लेने वाला रक्षाबंधन का पर्व भी इसी माह है। इसी के साथ स्वतंत्रता दिवस भी स्वतन्त्रता सेनानियों को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ ही राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों के लिए आत्मचिंतन का आह्वान करते हुए हम मनाएँगे। ये दिन विद्यालयों में उत्साह एवं उल्लासपूर्वक मनाए जाने चाहिए।

'कृष्ण जन्माष्टमी, रक्षाबन्धन एवं स्वतन्त्रता दिवस-2017' की अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ।

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

> "यह बहुत अच्छी बात है कि हम जो काम कर रहे हैं, उसकी समय-समय पर समीक्षा तो होनी ही चाहिए। मुझे विश्वास है कि प्रतिपुष्टि एवं प्रमाणीकरण का यह कार्य बहुत अच्छे से वस्तुनिष्ठ तरीके से सम्पन्न होगा, जिससे हमारे भावी कार्यक्रमों की संरचना का आधार हमें मिल सकेगा।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 58 | अंक : 2 | श्रावण-भाद्रपद-आश्विन २०७४ | अगस्त, 2017

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

❁

वरिष्ठ सम्पादक
प्रकाश चन्द्र जाटोलिया

❁

सम्पादक
गोमाराम जीनगर

❁

सह सम्पादक
मुकेश व्यास

❁

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 15

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- आत्मावलोकन का प्रेरक अवसर 5

आलेख

- कृष्णम् वंदे जगद्गुरु 10
  ओम प्रकाश सारस्वत
- श्री अरविन्द : अतिमानसिक अवस्था के प्रवर्तक 13
  मनमोहन गुप्ता
- निवेश से पहले सचेत रहें। 15
  हरप्रीत कौर
- संस्कृत-भाषी संस्कृताभिमानी डॉ. अम्बेडकर 16
  डॉ. विक्रमजीत
- मानवीय मूल्य व पर्यावरण संरक्षक-गुरु जाम्भोजी 18
  डॉ. ओम प्रकाश बिश्नोई
- समझ का विकास ही शिक्षा है। 19
  रघुवीर सिंह उदावत
- हॉकी का जादूगर : मेजर ध्यानचन्द सिंह 20
  अजय पाल सिंह शेखावत
- विद्यार्थी और सड़क सुरक्षा 35
  भूरमल सोनी
- दिव्यांगता सफलता में बाधा नहीं 37
  रेखा बॉयले
- मलेरिया मुक्त अभियान 38
  कैलाश राम सांगवा
- हमारी उत्सव चेतना का वर्तमान परिप्रेक्ष्य 40
  कैलाश चन्द्र मीणा
- शिक्षक का दायित्व एवं योगदान 42
  कमल कुमार जांगिड़
- कला : जीवन का अभिन्न अंग 44
  वेहनाराम सोनगरा

रपट

- राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह 2017 6
  डॉ. मनीषा त्रिपाठी

मासिक गीत

- सरहद तुझे प्रणाम 12
  संकलन : **दशरथ कुमार प्रजापत**
- शिक्षकों (गुरु) के नाम पाती 36
  टेकचन्द्र शर्मा
- मातु-नमनम् 43
  सीताराम सोनी

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 21-34
- शाला प्रांगण से 47
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र : **रामबाबू माथुर** 19, 37

पुस्तक समीक्षा 45

- 111 कविताएँ, कवि : सुधीर सक्सेना
  समीक्षक : **डॉ. नीरज दइया**
- जीवो राव हमीर
  लेखिका : डॉ. हेमकुमारी शर्मा
  समीक्षक : **सांगसिंह इन्दा**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

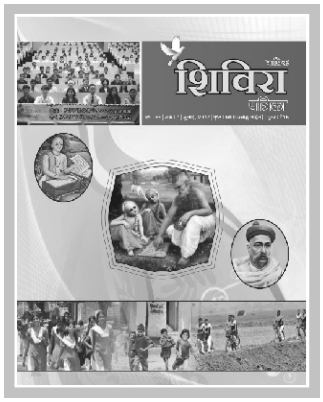

▼ चिन्तन

करम प्रधान बिस्व करि राखा।
जो जस करइ सो तस फलु चाखा।।

भावार्थ : भगवान ने यह विश्व कर्मप्रधान बनाया है। जो जैसा करता है, वैसा ही फल पाता है।

- 2017 का अंक मिला। हमारे गुरुजन की प्रेरणा से मैंने जुलाई अंक का अध्ययन किया। पत्रिका ज्ञान का अथाह सागर है। श्रीमान् शिक्षामंत्री महोदय द्वारा 'अपनों से अपनी बात' के तहत निष्ठापूर्वक कर्तव्यपालन की शिक्षा मानव मात्र के लिए उपयोगी व प्रेरणादायक है। 'दिशाकल्प' में निदेशक महोदय द्वारा सफल होने के साथ-साथ, श्रेष्ठ मानव भी बनने की अपील हृदयस्पर्शी है। जो स्वयं के सुधार को संसार की सबसे बड़ी सेवा बनने की प्रेरणा देती है। जयन्ती विशेष पर आधारित लेख प्रेरणाप्रद हैं। महापुरुषों का जीवन ही हमें पथप्रदर्शन करता हुआ भासित करता है। माननीय शिक्षा मंत्री जी द्वारा प्रेरित भामाशाह द्वारा अजमेर में पदवेश वितरण मर्मस्पर्शी लगा।

मनफूल, कक्षा 9 रा.आ.उ.मा.वि. आऊ, जोधपुर

- गोस्वामी तुलसीदास जी की जयन्ती पर आलेख उनके बारे में सब कुछ कह रहा है। कवि शिरोमणि की समग्र विशेषताएँ समाहित हो गई हैं। ''स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है मैं इसे लेकर रहूँगा'' के उद्घोषक 'भारतीय राजनीति के तिलक' शीर्षक पूर्णतः सटीक है। उनका राष्ट्रीय स्वतंत्रता में योगदान भुलाया नहीं जा सकता। चन्द्रशेखर आजाद संबंधी आलेख राष्ट्र के प्रति सर्वस्व त्याग की भावना जाग्रत करने हेतु पर्याप्त से अधिक है। 'तेरा वैभव अमर रहे माँ हम दिन चार रहे न रहे' उनके ये स्वर आज भी गुंजायमान हैं। 'प्रार्थना चेतना का स्वर' आलेख देखने में छोटा, पर है बड़ा गंभीर। 'लक्ष्य तक पहुँचे बिना.... विश्राम कैसा' इस माह का यह गीत प्रेरणास्पद है। अधिगम में पुनर्बलन की महत्ता को दर्शाता आदरणीय शिवनारायण जी का लेख शिक्षकों के लिए पाथेय बनेगा। वे इसे अवश्य पढ़ें। अंक संयोजन के लिए हार्दिक बधाई।

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

- माह जुलाई 2017 का 'शिविरा' अंक पढ़ा। सलिज वर्मा की रचना 'कवि कुल शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास' ज्ञानवर्द्धक लगी। सचमुच में रामायण एक कालजयी कृति है। डॉ. जयप्रकाश राजपुरोहित का 'भारतीय राजनीति के 'तिलक'' आलेख युवाओं के लिए प्रेरणास्पद है। 'गणेश उत्सव' व 'शिवाजी उत्सव' के जनक 'तिलक' विपरीत परिस्थितियों में भी राष्ट्रसेवा करने वाले विलक्षण व्यक्तित्व रहे हैं। 'एक पाती अपनों के नाम' रचना प्राथमिक स्तर के बालकों में गुणात्मक शिक्षा का शंखनाद करने वाली सशक्त रचना है। 'वृक्षारोपण का अभिनव पर्व' 'बालिकाओं में आत्मरक्षा' तथा 'शैक्षिक चिन्तन' के तहत प्रकाशित निबन्ध भी उपयोगी एवं समयानुकूल है। पत्रिका का कवर पृष्ठ आकर्षक तथा पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं का दिग्दर्शन कराने वाला है। आशा है युवा, मेधावी एवं कर्मठ निदेशक महोदय जी के कुशल नेतृत्व में राजस्थान का शिक्षा विभाग देश में अपनी अनूठी पहचान कायम कर सकेगा। शिविरा का यह अंक ज्ञानवर्द्धक, प्रेरणास्पद तथा हृदयस्पर्शी है। इस अंक की हर रचना हीरक-कण की भाँति अपनी आभा बिखेरती प्रतीत हो रही है। इस हेतु मैं सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शिवनारायण शर्मा, राजसमंद

- माह जुलाई 2017 का 'शिविरा' का अंक आकर्षक मुख पृष्ठ सहित प्राप्त हुआ। ऊर्जावान निदेशक महोदय ने शिक्षकों से शिक्षा के माध्यम से एक बालक को श्रेष्ठ मानव बनाने की अपेक्षा की है, शिक्षक और शिक्षा का यही उद्देश्य है। जुलाई माह अनेक जयंतियों का माह है संबंधित लेख प्रेरणादायी है।

महेन्द्र कुमार शर्मा, अजमेर

- शिविरा माह जुलाई 2017 के अंक में चन्द्रशेखर आजाद की जयन्ती पर प्रकाशित श्री रमेश कुमार शर्मा का लेख 'चन्द्रशेखर आजाद का चिन्तन' अच्छा लगा। चन्द्रशेखर आजाद द्वारा लिखी पंक्तियाँ-'किस तरह से जंग लड़ते हैं वतन के वास्ते, किस तरह से जान देते हैं वतन के वास्ते फकत दुनिया में बताने यह तुम्हें आए थे हम, खुश रहो अहले वतन, चलते हैं, वन्दे मातरम्!' एवं चन्द्रशेखर आजाद के चिन्तन का जो वर्णन लेखक द्वारा किया गया है, वह सराहनीय है। इसके अतिरिक्त भारतीय राजनीति के 'तिलक' एवं संदीप कुमार छलानी द्वारा लिखे गए वन महोत्सव पर 'वृक्षारोपण का अभिनव पर्व' अच्छे आलेख पढ़ने को मिले। श्री नारायणदास जीनगर ने जुलाई 2017 माह में आने वाली जयन्ती व पर्व का चित्रों द्वारा मुख पृष्ठ एवं जयप्रकाश राणा द्वारा चन्द्रशेखर आजाद पर 'हम दिन चार रहे न रहे' का संकलन भी प्रशंसनीय है।

आनन्द कुमार नायर, बीकानेर

सत्यमेव जयते

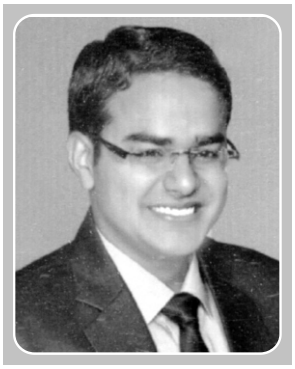

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

आत्मावलोकन का प्रेरक अवसर

विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए दृढ़-संकल्पित शिक्षकों और विभाग के समस्त कर्मचारियों को स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

15 अगस्त को सम्पूर्ण राष्ट्र उत्साह, उमंग और उल्लास के साथ राष्ट्रीय पर्व 'स्वतन्त्रता दिवस' मनाता है। प्रत्येक भारतीय, गर्व और गौरव के साथ देश की आजादी के लिए शहीद हुए महान सपूतों, क्रांतिकारियों को कृतज्ञतापूर्वक विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है। ''देश हमें देता है सब कुछ, हम भी कुछ देना सीखें...,'' यह संकल्प केवल विद्यार्थियों के लिए नहीं, हम सभी के लिए है। 'राष्ट्र प्रथम' का भाव हमारे चिन्तन का मूल मंत्र बना रहना ही चाहिए।

हमारा सौभाग्य है कि हमें शिक्षा जैसे पुनीत कार्य से राष्ट्र निर्माण में अपनी सहभागिता निभाने का महान अवसर मिला है, यह आत्मावलोकन का प्रेरक अवसर भी है। हम सुनिश्चित करें कि अपने कर्तव्य का निर्वहन पूर्ण मनोयोग और श्रेष्ठतम क्षमता से कर रहे हैं।

गत शिक्षा सत्र में राजकीय विद्यालयों के परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहे, इस सफलता की प्रेरणा और प्रभाव का ही सुफल है कि नवीन शिक्षा सत्र में भी नामांकन में उत्साहजनक वृद्धि हुई है। नामांकन वृद्धि शुभ लक्षण है, स्थाई रहे पर यह विशेष अभियान से प्राप्त केवल संख्यात्मक उपलब्धि नहीं रह जाए इस ओर हमें सचेत रहना है। विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और संस्कार देकर राष्ट्र को आदर्श नागरिक देने की हमारी जिम्मेदारी है। प्रत्येक राजकीय विद्यालय अपनी कार्यशैली से समाज में इतनी प्रतिष्ठा अर्जित करें जहाँ अभिभावक अपने बच्चों को सुन्दर भविष्य के स्वप्न साकार होते स्पष्ट देख सकें। पिछले दिनों सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों के भौतिक स्वरूप में भी गुणात्मक सुधार हुआ है, कक्षा-कक्षों के निर्माण, विद्यालय में दर्पण, आवश्यक जानकारियों के सूचना-पट, क्रियाशील शौचालय, चारदीवारी, शाला परिसर का रंग-रोगन आदि विद्यालय वातावरण को खुशनुमा बना रहे हैं।

क्राउड फण्डिंग के तहत समुदाय से प्राप्त सहायता राशि के कुशल प्रबन्धन, नियोजन एवं प्रभावी उपयोग हेतु विद्यालयों में **अक्षय पेटिका** लगाने का कार्य द्रुतगति से हुआ है। विद्यालय विकास की योजनाओं में भामाशाहों की सक्रिय सहभागिता तथा आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत करमुक्त दान की पात्रता हेतु एस.डी.एम.सी. के आयकर विभाग में रजिस्ट्रेशन के कार्य से भी राजकीय विद्यालय अब अभिभावकों, भामाशाहों और समुदाय के अधिक निकट होने से वास्तव में **अपना विद्यालय** बन रहे हैं।

राजकीय विद्यालयों को वित्तीय सम्बल प्रदान करने तथा आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण के उद्देश्य से **ज्ञान संकल्प पोर्टल** तथा **मुख्यमंत्री विद्यादान कोष** के माध्यम से भामाशाह और औद्योगिक इकाइयां, **कॉर्पोरेट सोश्यल रेस्पोन्सबिलिटी** (सी.एस.आर.) के तहत ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से जुड़कर शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे नवाचारों और बुनियादी सुविधाओं को बढ़ाने में राजस्थान सरकार को अपना सहयोग दे सकते हैं। राज्य की यशस्वी मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे द्वारा 05 अगस्त 2017 को जयपुर में 'फेस्टिवल ऑफ एज्यूकेशन' में इसका उद्घाटन किया जा रहा है।

विभिन्न संवर्गों की डी.पी.सी. तथा आर.पी.एस.सी. से चयनितों का काउन्सलिंग द्वारा अपने चाहे गए विद्यालयों के चयनोपरान्त पदस्थापन से विद्यालयों में संस्थाप्रधानों और शिक्षकों के पद तेजी से भरे गए हैं। शाला में पर्याप्त विषय अध्यापक होने से वहाँ का शैक्षिक वातावरण गुणवत्तापूर्वक शिक्षा देने में प्रभावी भूमिका निभा रहा है। एस.आइ.क्यू.ई. के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सतत आकलन, प्रशिक्षण, प्रबोधन और पर्यवेक्षण का कार्य प्रगति पर है। शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे नवाचारों को अपनाते हुए विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा आनन्ददायक वातावरण में प्रदान करें।

मुझे आशा है कि दृढ़ इच्छाशक्ति और सकारात्मक दृष्टिकोण से कार्य करते रहने से हमारे विद्यालय सही अर्थों में आदर्श विद्यालय बनेंगे। उत्कृष्ट शैक्षिक और भौतिक वातावरण विद्यार्थियों को अपना सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करेगा।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, रक्षाबंधन पर्व और संस्कृत दिवस की सभी को मंगलकामनाएँ।

(नथमल डिडेल)

"विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और संस्कार देकर राष्ट्र को आदर्श नागरिक देने की हमारी जिम्मेदारी है। प्रत्येक राजकीय विद्यालय अपनी कार्यशैली से समाज में इतनी प्रतिष्ठा अर्जित करें जहाँ अभिभावक अपने बच्चों को सुन्दर भविष्य के स्वप्न साकार होते स्पष्ट देख सकें।"

रपट

राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह 2017

❒ डॉ. मनीषा त्रिपाठी

भामाशाह परिचय

भामाशाह (1552 से 1600ई.) एक प्रख्यात जनरल, मंत्री तथा महाराणा प्रताप के करीबी सहयोगी थे। वे ओसवाल जैन समुदाय के कवड़िया गोत्र के सेठ थे। उनके पिता भारमल को राणा सांगा द्वारा रणथम्भौर किले का किलेदार बनाया गया। महाराणा प्रताप ने उन्हें मेवाड़ के प्रधानमंत्री के पद पर पदोन्नत किया। भामाशाह ने अपने छोटे भाई ताराचन्द के साथ मिलकर मेवाड़ के लिए कई लड़ाइयाँ लड़ीं। भामाशाह से ताराचन्द चार साल छोटे थे, जिन्होंने कई अवसरों पर मेवाड़ के सैनिक बलों की कमान सम्भाली। इन्होंने मुगल सेना के शिविरों पर हमला किया। वहाँ के धन को जीता, जिससे मेवाड़ का वित्त पोषण हुआ। भामाशाह को मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम था। वे अपनी शूरवीरता और दानवीरता के लिए इतिहास में अमर हैं।

दिनांक 28 जून 2017 को जयपुर स्थित बिड़ला सभागार में माननीया मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे सिंधिया के मुख्य आतिथ्य, शिक्षा राज्य मंत्री एवं पंचायतीराज मंत्री श्री वासुदेव देवनानी की अध्यक्षता, उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी के विशिष्ट आतिथ्य, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर के अध्यक्ष श्री बी.एल.चौधरी, अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री राजहंस, शिक्षा सचिव श्री नरेशपाल गंगवार की उपस्थिति में 23वाँ भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित हुआ। इस सम्मान समारोह में प्रारंभिक शिक्षा निदेशक श्री पी.सी.किशन एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल सहित शिक्षा विभाग के उच्च स्तरीय अधिकारी मौजूद थे। समारोह में 109 भामाशाहों एवं 31 प्रेरकों को विद्यालयों में किए गए अपने सहयोग के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत सरस्वती वंदना एवं राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् के गायन के साथ हुई। इससे पूर्व मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे का स्वागत करते हुए उन्हें परेड की सलामी दी गई।

माननीया मुख्यमंत्री महोदया ने अपने उद्बोधन भाषण में राष्ट्र प्रेम के पुरोधा एवं उदारता की प्रतिपूर्ति महामना भामाशाह के जन्म दिवस 28 जून को राज्य स्तरीय सम्मान का गौरव प्राप्त करने वाले भामाशाहों एवं प्रेरकों को बधाई के साथ शुभकामनाऐं देते हुए कहा कि ''ऐसे उदारमना सपूतों से ही स्वर्णिम अध्याय लिखे जाते हैं।'' माननीया ने शिक्षा विभाग में हुए अविस्मरणीय बदलावों का जिक्र करते हुए कहा कि ''राज्य सरकार शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए कृत संकल्पित है। इसीलिए ऐतिहासिक कदम उठाते हुए 5000 से अधिक माध्यमिक विद्यालयों को उच्च माध्यमिक में क्रमोन्नत करने के साथ-साथ लगभग एक लाख से अधिक शिक्षकों को पदोन्नत कर विद्यालयों का एकीकरण व स्टाफिंग मानदण्ड लागू करते हुए शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ किया गया। विद्यालयों में मांग के अनुसार संकाय प्रारम्भ किए गए। कम्प्यूटर शिक्षा एवं सेटेलाइट के माध्यम से शिक्षण प्रारम्भ किया गया। ग्रामीण बालिकाओं के लिए के.जी.बी.वी. एवं माँ शारदे आवासीय विद्यालय सफलतापूर्वक संचालित हो रहे हैं। विभाग का कार्य कम्प्यूटरीकृत कर दिया गया है जिसके कारण प्रभावी मोनेटरिंग संभव हुई है। सरकार द्वारा मेधावी छात्रों को लेपटॉप, छात्रवृत्ति, इन्सपायर अवार्ड आदि प्रदान किए जा रहे हैं। बालिकाओं के लिए नि:शुल्क साइकिल, ट्रांसपोर्ट वाउचर जैसी योजनाएँ सराहनीय कदम है। सी.बी.एस.ई. पैटर्न पर विवेकानंद स्कूल भी संचालित हैं। छात्र-छात्राओं को रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से व्यावसायिक शिक्षा प्रारम्भ की गई है। इन सभी प्रयासों से नामांकन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है जो शिक्षा समृद्धि का पर्याय बन गई है। इस अवसर पर भामाशाहों का सहयोग 'सोने पर सुहागा' का कार्य कर रहा है। भामाशाहों द्वारा दिए गए 250 करोड़ का योगदान उनकी उदारता एवं दानशीलता को दर्शाता है। लोक कल्याण और समाज सेवा के लिए तन, मन और धन से सहयोग करने वाले कीर्ति पुरुष सदैव मान

समारोह की खास बातें

1. **भामाशाह की 464वीं जयन्ती के अवसर पर '23वां राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह' मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।**
2. **109 भामाशाहों द्वारा 62.32 करोड़ रुपये का दान राजकीय विद्यालयों को एक शिक्षा सत्र में दिया गया।**
3. **शिक्षा राज्यमंत्री वासुदेव देवनानी द्वारा स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की सहायता से 30 राजकीय विद्यालयों में बनी स्मार्ट कक्षा-कक्षों का जिक्र किया गया।**
4. **आगन्तुकों द्वारा 'प्रशस्तियाँ' नाम की पुस्तिका का विमोचन किया गया।**
5. **1995 से 2017 तक 250 करोड़ रुपये की राशि का भामाशाहों के माध्यम से योगदान दिए जाने की जानकारी दी गई।**
6. **31 प्रेरकों को सम्मानित किया गया।**

सम्मान के अधिकारी होते हैं। अभी शिक्षा क्षेत्र में बहुत किया जाना शेष है। वंचित बालक-बालिकाओं को मुख्य धारा में जोड़ना, आधुनिक तकनीक एवं नवाचारों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आलोक जन-जन तक फैलाना जैसी कई चुनौतियाँ है।'' माननीया ने विश्वास व्यक्त किया कि ''आप जैसे निष्ठावान समर्थ भामाशाहों एवं शिक्षा विभाग के समर्पित अधिकारियों एवं शिक्षकों से हम उपलब्धियों के नए आयाम स्थापित करेंगे।'' उन्होंने संकल्पित किया कि ''हम राजस्थान को शैक्षिक सफलता की ऊँचाइयों तक ले जाएँगे।'' इसके साथ माननीया ने समस्त भामाशाहों एवं प्रेरकों का आभार व्यक्त किया और विश्वास दिलाया कि ''आपका महान् कार्य व्यर्थ नहीं जाएगा।''

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने कहा

कि अमेरिका व इंग्लैण्ड जैसे विकसित राष्ट्राध्यक्ष के पुत्र-पुत्रियाँ भी राजकीय विद्यालय में अध्ययन करते हैं। हमें राजस्थान के राजकीय विद्यालयों को भी उनकी तरह ही साधन सम्पन्न बनाना है जिससे हर वर्ग का बच्चा उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त कर स्वयं का भविष्य बनाते हुए राष्ट्र का नाम रोशन कर सके। उन्होंने घोषणा की कि ''राजस्थान शीघ्र 'एज्यूकेशन फेस्टिवल' आयोजित करने वाला देश का पहला राज्य होगा। यह आयोजन हमारी शिक्षा-प्रणाली को ग्लोबल एज्यूकेशन से जोड़ने का जरिया बनेगा।'' मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर पुस्तिका 'प्रशस्तियाँ' का विमोचन किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष शिक्षा राज्यमंत्री एवं

पंचायतीराज मंत्री श्री वासुदेव देवनानी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में भामाशाहों और प्रेरकों को शिक्षा विभाग में किए गए उनके योगदान के लिए धन्यवाद देते हुए दानवीर भामाशाह द्वारा महाराणा प्रताप की सहायता करने की कहानी की व्याख्या की व सम्मान समारोह का परिचय दिया। उनका कहना था कि ''जो व्यक्ति दूसरों की कमाई खाता है वह विकृति है, जो स्वयं का कमाया खाता है वह प्रकृति है एवं जो स्वयं कमाकर दूसरों को खिलाता है यह भारतीय संस्कृति है और इस संस्कृति के उदाहरण आज हमारे भामाशाह व प्रेरक हैं जिन्होंने 62.32 करोड़ रुपये का दान एक शिक्षा सत्र में राजकीय विद्यालयों को दिया है।'' राजस्थान की शिक्षा व्यवस्था में लागू नवाचारों एवं विभिन्न स्तर पर ऊँचाइयों की चर्चा करते हुए कहा, ''एज्यूकेशन (Education) शब्द का प्रत्येक अक्षर सार्थक है। E से एनरोलमेंट (नामांकन) बढ़ाना, D से डिसीपिलीन इन स्कूल, U से यूनीफोर्मिटी, C से कोन्फीडेंस इन पेरेन्ट्स, A से एकेडेमिक विथ स्टाफिंग, T से टेलेन्ट, I से इनोवेशन, O से अपोरच्यूनिटी, N से नेशनलिटी को चरितार्थ करता है।'' उन्होंने अजमेर नगर में 30 राजकीय विद्यालयों में बनी स्मार्ट कक्षा-कक्षों का जिक्र करते हुए राज्य के सभी विद्यालयों में भामाशाहों के सहयोग से स्मार्ट कक्षा-कक्ष बनाने हेतु आगे आने को कहा। देवनानी जी ने बताया कि ''शिक्षा के क्षेत्र में आए गुणात्मक सुधारों को लागू किए जाने एवं नवाचारों के कारण राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों और अभिभावकों को विश्वास कायम हुआ है। इन नवाचारों के कारण ही राजकीय विद्यालयों में गत तीन साल में 12 लाख नामांकन बढ़ा है। इन नवाचारों की गूँज पूरे देशभर में है। इस साल लगभग 8 लाख नामांकन वृद्धि की संभावना है।''

प्रारंभिक शिक्षा निदेशक श्री पी.सी.

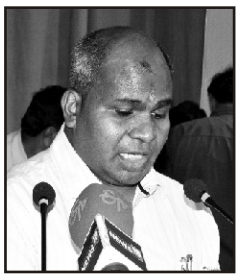

किशन ने अपने उद्बोधन में कहा कि ''राजस्थान की मिट्टी में वीरता के साथ-साथ संगीत का भी मेल है। अत: भामाशाहों को तबला, गिटार, हारमोनियम इत्यादि भी विद्यालयों को उपलब्ध करवाना चाहिए।''

चयनित भामाशाह की सूची 2017

क्र. सं.	भामाशाह का नाम व पता	दान राशि लाखों में
1.	न्यूक्लियर पॉवर कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लि., रावत भाटा, चित्तौड़गढ़	663.96
2.	श्री हरिप्रसाद बुधिया, कोलकाता-16	519.67
3.	हैवल्स इंण्डिया लिमिटेड, अलवर	397.67
4.	क्यू.आर.जी. फाउण्डेशन, अलवर	307.28
5.	हिन्दुस्तान जिंक राजपुरा दरीबा कॉम्पलेक्स, रेलमगरा, राजसंमद	271.63
6.	हिन्दुस्तान जिंक रामपुरा आगूचा खान हुरड़ा, भीलवाड़ा	243.25
7.	श्री छोगालाल जुगराज सालेचा चैरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई	209.48
8.	जागृति, जयपुर	163.73
9.	भारती फॉउण्डेशन,नई दिल्ली	154.00
10.	हिन्दुस्तान जिंक चेन्देरिया लेड जिंक स्मेल्टर, चित्तौड़गढ़	141.50
11.	श्रीमती भूरत्न प्रभा कुमारी, राजसमन्द	127.00
12.	श्री हस्तीमल जैन, मुम्बई-4	111.66
13.	कजारिया सिरामिक्स लिमिटेड भिवाड़ी, अलवर	106.05
14.	जेक्यूआर फाउण्डेशन, हरियाणा	105.86
15.	आशियाना हाउसिंग लिमिटेड भिवाड़ी, अलवर	103.22
16.	श्री कैलाश चन्द बड़ाया, जयपुर	100.00
17.	स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया (पूर्ववर्ती स्टैट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर), अजमेर	99.29
18.	मयूर यूनिकोटर्स लि., जयपुर	80.74
19.	एस.आर.एफ. फाउण्डेशन द्वारा एस.आर.एफ.लि., अलवर	78.60

20.	इब्तिदा, अलवर	78.53
21.	रूरल इलेक्ट्रीफिकेशन कॉर्पोरेशन लि., जयपुर	75.77
22.	श्रीराम पिस्टन्स एण्ड रिंग्स लि., पथरेड़ी, अलवर	70.19
23.	हीरो मोटो कॉर्पोरेशन लि. निमराना, अलवर	63.26
24.	होंडा मोटरसाईकिल एण्ड स्कूटर इंडिया प्रा.लि., टपूकड़ा, भिवाड़ी, अलवर	61.50
25.	हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लि., जोधपुर	56.25
26.	हिन्दुस्तान जिंक लि. देबारी, उदयपुर	53.70
27.	ग्रासिम जन सेवा ट्रस्ट ग्राम मोहनपुरा, कोटपुतली, जयपुर	53.68
28.	ओरियन्ट सिन्टैक्स (प्रो. एपीएम इण्डस्ट्रीज लि.) भिवाड़ी, अलवर	53.40
29.	आशियाना हाउसिंग लिमिटेड, जयपुर	51.65
30.	माता देवी शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट गाँधी धाम, गुजरात	50.00
31.	अल्ट्राटेक सीमेन्ट लि., आदित्य सीमेंट वर्क्स सावा-शंभुपुरा, चित्तौड़गढ़	49.75
32.	योमित जांगिड़ चेरिटेबल ट्रस्ट, जोधपुर	47.86
33.	श्री सिमेन्ट लि. रास, पाली	45.98
34.	मंदिर श्री गोविन्ददेव जी, जयपुर	43.50
35.	श्री गौरी शंकर हरभजनका, नई दिल्ली	41.01
36.	यूनाईटेड ब्रेवरीज लि. भिवाड़ी, अलवर	39.86
37.	सिगवर्क फाउण्डेशन (N.G.O.) भिवाड़ी, अलवर	39.60
38.	श्री किशोरी लाल अग्रवाल, महवा, दौसा	39.00
39.	शा. हजारीमल जवानमल कोठारी परिवार बांकली, पाली	38.92
40.	अल्ट्राटेक सीमेंट लि., बिड़ला व्हाइट, जोधपुर	37.45
41.	पेरनोड रिकार्ड इंडिया प्राइवेट लि., कारोड़ा (बहरोड़), अलवर	37.12
42.	श्री गिरधारी लाल जांगिड नवलगढ़, झुंझुनूँ	33.82
43.	श्री शान्तिदेव सेवा समिति, मुम्बई	33.00
44.	श्री राम प्रसाद महादेव भोमराजका ट्रस्ट, जयपुर	32.76
45.	जानकी देवी बजाज ग्राम विकास संस्थान पुणे, महाराष्ट्र	32.36
46.	राउण्ड टेबल इंडिया एण्ड लेडिज सर्किल इंडिया, भीलवाड़ा	30.64
47.	महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन, उदयपुर	30.07
48.	जिलेट इंडिया लि. भिवाड़ी, अलवर	27.66
49.	सेन्ट गोबेन इंडिया प्रा. लि. भिवाड़ी, अलवर	26.43
50.	एस.एम. सहगल फाउण्डेशन, गुडगाँव व दी मोजैक कंपनी फाउण्डेशन, गुडगाँव	26.23
51.	श्री हरिनारायण बड़ाया, बनीपार्क, जयपुर	25.00
52.	अक्षऑप्टि फाइबर लि., रींगस, सीकर	24.16
53.	जोधपुर राउण्ड टेबल ट्रस्ट, शास्त्रीनगर, जोधपुर	22.71
54.	वंडर सीमेन्ट लि. आर.के. नगर, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़	21.51
55.	कम्प्यूकॉम सोफ्टवेयर लि., जयपुर	21.00
56.	बॉश इंडिया फाउण्डेशन, जयपुर	20.90
57.	श्री छज्जूराम बैरवा, गंगापुरसिटी, सवाईमाधोपुर	20.00
58.	श्रीमती लीला बोहरा, चैन्नई	20.00
59.	श्री मेजर अली, रामगढ़ शेखावाटी, सीकर	20.00
60.	श्री चौथमाता ट्रस्ट चौथ का बरवाड़ा, सवाईमाधोपुर	19.90
61.	अक्ष ऑप्टि फाईबर लि. भिवाड़ी, अलवर	19.67
62.	नवीन कुमार धारीवाल मेमोरियल ट्रस्ट, कोलकाता	18.31
63.	ड्युरा लाइन इंडिया प्राईवेट लि., नीमराना, अलवर	18.31
64.	श्री नन्द किशोर खण्डेलवाल, प्रताप नगर, जयपुर	17.73
65.	श्रीमती मोहनीदेवी गोदारा, चाड़वास, चूरू	16.22
66.	मकर एजुकेशनल एण्ड वेलफेयर सोसाईटी, अलवर	16.14
67.	श्री दिनेश लौहार, सराड़ा, उदयपुर	15.55
68.	श्री हिम्मत सिंह नवलगड़, झुंझुनूँ	15.06
69.	एच.एस.आई.एल.लि. कहरानी, भिवाड़ी, अलवर	15.02
70.	श्री हीरालाल, लावंडा, रामगढ़ शेखावटी, सीकर	15.00
71.	श्री केशर देव गुर्जर, रवाँ खेतड़ी, झुंझुनूँ	14.73
72.	श्री दुर्गाप्रसाद लोचिब फरीदाबाद, हरियाणा	14.47
73.	वैद्य शंभुदयाल शर्मा, रींगस, सीकर	14.01
74.	रेशम देवी नानकचन्द मित्तल फाउण्डेशन, अलवर	13.96
75.	श्री सुमेर सिंह शेखावत सांभरलेक, जयपुर	13.86
76.	श्रीमती शशि चन्द्र शेखर सारडा, कोलकाता	13.86
77.	श्री शिवकरण जानूँ मलसीसर, झुंझुनूँ	13.85
78.	माताश्री गोमती देवी जन सेवा निधि (लुपिन), अलवर	13.62
79.	श्री मौ. सलीम चौहान, झुंझुनूँ	13.36
80.	ओ.एन.जी.सी., जोधपुर	13.10
81.	एफ.सी.आई.अरावली जिप्सम एण्ड मिनरल्स इण्डिया लि. जोधपुर	12.68
82.	श्री विद्याधर शर्मा, झुंझुनूँ	12.50
83.	अखिल भारतीय नाटाणी परिवार समिति, जयपुर	12.25
84.	श्री तखत सिंह राठौड़, सुमेरपुर, पाली	12.11
85.	एफ.एस.फाउण्डेशन, जयपुर	12.11
86.	श्री भंवर लाल साऊ, खींवसर, नागौर	12.02
87.	श्री उम्मेद सिंह, सीगड़ा, झुंझुनूँ	12.01
88.	श्री सूरजमल विजयवर्गीय चौमू, जयपुर	12.00
89.	श्री भंवर लाल साऊ खींवसर, नागौर	11.97
90.	श्री मालाराम खोजा खींवसर, नागौर	11.97
91.	श्री नरेन्द्र नाहटा सुजानगढ़, चूरू	11.75
92.	श्री श्री 108 श्रीरामनाथ जी महाराज बसवा, दौसा	11.51

93. लुपिन ह्युमन वेलफेयर एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, कृष्णानगर, भरतपुर 11.31
94. श्री सीताराम जांगिड़ नवलगढ़, झुंझुनूँ 11.11
95. श्री श्रीकिशन मीणा बजीरपुर, सवाईमाधोपुर 11.01
96. श्री शिवचरण योगी, सिकराय, दौसा 11.00
97. श्री शिवकरण मीना, जगतपुरा, जयपुर 11.00
98. श्री कालूराम मालवीया लुहार, लापोद, पाली 11.00
99. श्री नारायण दास गुरनानी, साकेत कॉलोनी, जयपुर 10.91
100. श्री उम्मेद सिंह राजपुरोहित, जोधपुर 10.50
101. श्री प्रेम चन्द सेठ बहरोड़, अलवर 10.50
102. श्री मौजीराम गुर्जर कोटपूतली, जयपुर 10.45
103. श्रीमती शान्ता देवी शारदा चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता 10.42
104. श्री मदन गोपाल तोसनीवाल, कोलकाता-01 10.40
105. एन.टी.एफ. (इंडिया) प्रा.लि., नीमराना, अलवर 10.39
106. श्री संतोष सिंह सांखला, मण्डोर, जोधपुर 10.31
107. श्री नेमीचन्द तोसनीवाल, कोलकाता-07 10.25
108. शिक्षा समिति लिखमीसर, हनुमानगढ़ 10.25
109. श्री प्यारेलाल पितलिया, चैन्नई 10.18

चयनित प्रेरकों की सूची 2017

क्र. सं.	प्रेरक का नाम	पदस्थापन स्थान
1.	श्री धीरज पालीवाल, जयपुर	लिपिक ग्रेड प्रथम, कार्यालय उपनिदेशक (माध्यमिक शिक्षा) जयपुर
2.	श्री विनोद कुमार शर्मा, जयपुर	वरि. शारीरिक शिक्षक, श्रीमती कमला देवी बुधिया रा.उ.मा.वि. हीरापुरा, जयपुर
3.	श्री विष्णुदत्त शर्मा, जयपुर	प्रधानाचार्य, श्रीमती कमला देवी बुधिया रा.उ.मा.वि. हीरापुरा, जयपुर
4.	श्री सुरेन्द्र सिंह, जयपुर	प्रधानाचार्य, श्रीमती कमला देवी बुधिया रा.उ.मा.वि. हीरापुरा, जयपुर
5.	श्री गोविन्द दास वैष्णव	वरिष्ठ अध्यापक, रा.बा.उ.मा.वि. देवगढ़, राजसमन्द
6.	श्रीमती मंजु सोनी	प्रधानाध्यापिका, रा.मा.वि. नाँगल पुरोहितान, जयपुर
7.	श्री मानाराम विश्नोई	वरिष्ठ अध्यापक, रा.उ.मा.वि. सुरावा पं.स. सांचौर, जालौर
8.	श्री अमित शर्मा	शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी, कार्यालय उपनिदेशक (माध्यमिक शिक्षा) अजमेर मण्डल, अजमेर
9.	श्री हर्ष बवेजा	मुख्य परियोजना प्रबंधक, रूरल इलेक्ट्रीफिकेशन, कॉर्पोरेशन लि., जयपुर
10.	श्री बृज बिहारी कौशिक	भिवाड़ी, अलवर
11.	श्री सत्यनारायण शर्मा	अध्यापक, रा.बा.उ.मा.वि. रियांबड़ी, नागौर
12.	श्री गुलाम हैदर	प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. कोलसिया झुंझुनूँ
13.	सुश्री निरंजना पंवार	अध्यापिका, रा.उ.मा.वि. भगत की कोठी, जोधपुर
14.	श्री शंकर सिंह जैतावत	वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक, पाली
15.	श्री सुरेश कुमार रजवानियाँ	प्रधानाध्यापक, चौमू, जयपुर
16.	श्री मो. आसिफ जैदी	सर सयैद ट्रस्ट भिवाड़ी, अलवर
17.	बृज भूषण कौशिक	बी.ई.ई.ओ कोटपूतली, जयपुर
18.	श्री चेतराम मीना	प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. टुडियाना, तह. महवा, दौसा
19.	श्री अनिल कुमार ओझा	अध्यापक, बांकली पाली
20.	श्रीमती अंशु यादव	प्रधानाध्यापक, रा.मा.वि. गुर्जरवास बहरोड़, अलवर
21.	श्री धनराज खोजा	वरिष्ठ अध्यापक, रा.उ.मा.वि. खड़काली, नागौर
22.	श्री रेशम लाल अरोड़ा	प्रधानाध्यापक, रा.मा.वि. लावण्डा, सीकर
23.	श्री जय कृष्ण दाधीच	अति. बी.ई.ई.ओ., जयपुर
24.	श्री शंकर लाल जाट	बी.ई.ई.ओ., सांगानेर, जयपुर
25.	श्री अख्तर हुसैन	प्रधानाचार्य, श्री धर्मतीर्थ शान्तिदेव रा.उ.मा.वि. माण्डोली नगर, जालौर
26.	श्री रामेश्वर लाल	प्रधानाचार्य, रा.आ.उ.मा.वि. अड़क्सर, नागौर
27.	श्री डालसिंह शेखावत	व्याख्याता, श्री जमनालाल बजाज, रा.आ.उ.मा.वि., काशी का बास, सीकर
28.	श्री ओम प्रकाश सारस्वत	उपनिदेशक, (मा.शि.) बीकानेर
29.	श्री अशोक बच्छावत	चूरू
30.	श्री नरेन्द्र सिंह राठौड़.	प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., घोड़ास, भीलवाड़ा
31.	श्रीमती दामिनी दाँत्या	प्रधानाचार्य, रा.बा.उ.मा.वि. जगदीश चौक, उदयपुर

व्याख्याता (हिन्दी),
राजकीय मोइनिया इस्लामिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर
मो. 9413809603

जन्माष्टमी

कृष्णम् वंदे जगद्गुरु

❒ ओम प्रकाश सारस्वत

भारतीय मनीषा में श्री कृष्ण का चरित्र अद्वितीय, अनुपम एवं बेजोड़ है। विभिन्न अवतारों में श्री कृष्ण अवतार चिन्तकों के लिए चिन्तन के नए-नए द्वार खोलता है। उनकी चंचलता और गम्भीरता दोनों शीर्ष स्तर की है। मक्खन से भरे मुख मण्डल के बावजूद 'मैं नहीं माखन खायो' और माँ के द्वारा ऊखल से बंधे बाल कृष्ण और महाभारत के युद्ध में गीता का उपदेश देने वाले भगवान कृष्ण-ये दोनों चरित्र चंचलता और गम्भीरता के सिरे उदाहरण हैं। श्री कृष्ण 64 कलाओं के ज्ञाता हैं। वे परम तेजस्वी, महाशक्तिशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व के धनी हैं। उनकी सत्य निष्ठा और वाक्पटुता अनुकरणीय है। वे न्याय के पक्षधर हैं। धर्म उनका आभूषण है। उनमें दृढ संकल्प, धैर्य, सहनशीलता, क्षमा भाव, उदारता, करुणा, सौम्यता, बड़ों का सम्मान, प्रेम भाव जैसे उदात्त माननीय गुण वंदनीय एवं ग्रहणीय हैं। कृष्ण सर्वशुंभकर हैं यानी सबका भला चाहने वाले है।

श्री कृष्ण पूर्णता के प्रतीक हैं, शिखर के प्रतिनिधि हैं। उनके मुखारविन्द से निकला श्रीमद्भगवद्गीता का अमर संदेश देश-काल, जाति, सम्प्रदाय से ऊपर है। जीवन की विभिन्न अवस्थाओं एवं परिस्थितियों का जितनी सरलता से विवेकपूर्ण विवेचन श्रीमद्भगवद्गीता में किया गया है, उसमें जीवन की शान और जीवट की तान सहज ही में दिखाई व सुनाई देती है। कृष्ण बड़े कमाल के हैं। युद्ध की मारकाट के बीच अपने प्रिय सखा के सारथी बनकर रथ हाँकने वाले, गाजर मूली की तरह कट-कट कर गिर रहे सैनिकों, रक्त की धार से साक्षात्कार करते हुए भी गीता का अमर ज्ञान सुनाने की उत्कृष्ट योग्यता भगवान श्री कृष्ण में ही है। स्थित प्रज्ञता का इससे श्रेष्ठ कोई और उदाहरण हो नहीं सकता।

शिक्षा के क्षेत्र में देखें तो भगवान श्री कृष्ण का चरित्र विभिन्न दृष्टि से शिक्षा एवं दिशा देने वाला है। जैसा कि पूर्व में वर्णित है, श्री कृष्ण पूर्णता के प्रतीक हैं। वे सदैव शीर्ष हैं। इसी संदर्भ

में शिक्षा और योग को लें तो श्री कृष्ण के बारे में प्रायः दी जाने वाली निम्नांकित दो उपमाएँ विचारणीय हैं-

शिक्षा - वंदे कृष्णम् जगद्गुरु।

योग - यत्र योगेश्वरः कृष्णः ।

योग व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक विकास की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है। भले ही इसका प्रादुर्भाव भारत में हमारे तत्त्ववेत्ता ऋषि मुनियों ने किया हो, मगर आज पूरे विश्व में यह स्थापित हो चुका है। प्रतिवर्ष 21 जून के दिन अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने की शृंखला में हाल ही में 21 जून 2017 के दिन विश्व के 197 देशों में सामूहिक योग करके योग को वैश्विक मान्यता देने के साथ ही भारत के इस अनमोल अवदान के लिए एक तरह से कृषि प्रदेश भारत को भी प्रणाम करते हुए कृतज्ञता प्रकट की गई। भगवान श्री कृष्ण गीता में कर्म का उपदेश देते हैं। वे कहते हैं कि ''हम निष्काम भाव से कर्म करें। अपना काम इतनी तल्लीनता और चतुराई से करें कि सतत कर्मता से हमें उसमें कुशलता प्राप्त हो जाए। निरन्तर, निर्बाध, नियमित और मनपूर्वक कार्य करने की यह स्थिति कुशलता की जननी है।'' इस आदर्श स्थिति को कृष्ण योग कहते हैं-योग : कर्मसु कौशलम्।

अब भगवान श्री कृष्ण की योग में स्थिति पर चर्चा करते हैं। वे परमयोगी, योगासन के परमज्ञाता, स्वयं सिद्ध और योग की सर्वोत्कृष्ट भूमिका वाले महान मनस्वी हैं। इसलिए उन्हें हैसियत की सर्वोच्च भूमिका में योगेश्वर कहा गया है। श्रीमद्भगवद्गीता के अट्ठारहवें अध्याय के अन्तिम श्लोक में संजय कहते हैं-

''यत्र योगेश्वरः कृष्णो.....।।''

यहाँ श्री कृष्ण को योग का ईश्वर कहा गया है। व्यवस्था में जानकार, ज्ञाता, शिक्षक, प्रशिक्षक, आचार्य, गुरु, पण्डित आदि कई उपमाएँ दी जाती है मगर इसकी शीर्ष उपमा तो ईश्वर ही होता है। भगवान से बड़ा कोई नहीं है; ईश्वर सर्वोपरि है; उसकी आज्ञा के बिना पत्ता भी खड़क नहीं सकता जैसे वृत्तान्त हम सामाजिक जीवन में सुनते हैं। ऐसे में भगवान श्री कृष्ण को योग का ईश्वर कहकर उनकी पूर्णता और महानता को स्वीकार किया गया है। वे योग के ईश्वर है।

श्री कृष्ण का शिक्षा देने वाला रूप भी बड़ा विलक्षण है। वे महाभारत के संग्राम में

लेखक परिचय

श्री ओमप्रकाश सारस्वत

शिविरा के पाठकों के लिए श्री ओमप्रकाश सारस्वत का नाम नया नहीं है। शिक्षाविद् एवं साहित्यकार श्री सारस्वत शिविरा पत्रिका के वरिष्ठ सम्पादक रहे हैं। आप शिविरा के नियमित लेखक एवं शुभचिंतक हैं। आपने लगभग एक दर्जन कृतियों की रचना की है। प्रमुख समाचार पत्र, पत्रिकाओं एवं आकाशवाणी से आपके आलेख प्रकाशित/प्रसारित होते रहे हैं। प्रभावी वक्ता, कवि, गीतकार एवं कार्यक्रम संयोजक के रूप में आप लब्ध प्रतिष्ठित हैं। आपने विभाग में विभिन्न पदों पर रहते हुए प्रतिमानकारी कार्य किए हैं। वर्तमान में आप माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में संयुक्त निदेशक (प्रशिक्षण) के पद पर कार्यरत हैं।

अर्जुन को गीता का उपदेश देते हैं। यहाँ वे शिक्षक एवं अर्जुन शिष्य हैं। उनका गुरुत्व इतना प्रबल, प्रभावी एवं ममत्व भरा है कि उन्हें सम्पूर्ण संसार द्वारा उन्हें शिक्षक मानकर उनका अभिनंदन किया जाता है-कृष्णम् वन्दे जगद्गुरु। जगद्गुरु यानि सम्पूर्ण संसार के गुरु।

शिक्षक का आदर्श इसी में है कि उसके मन में अपने शिष्य के प्रति मंगल भाव हो। उसे सिखाकर उत्तम स्थिति में ले जाने की मंशा हो। तब तो विकट से विकट परिस्थितियाँ भी उसके लिए कोई न कोई राह दिखा ही देती हैं। महाभारत के महासमर का रणक्षेत्र श्रीकृष्ण (शिक्षक) और अर्जुन (शिष्य) के लिए कक्षा कक्ष बन सकता है और युद्ध की भयावहता के मध्य की घटनाएँ शिक्षण अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) बन जाती है और इन स्थितियों में गीता का अमृत ज्ञान बरसता है। क्यों है न कमाल की बात! सांसारिक जीवन के नर्सरी से पढ़ाई शुरु होती है जो अधिस्नातक (पी.जी.) पर जाकर ठहरती है। नर्सरी में प्रवेश के समय बालक रोता-मचलता है और निष्णात डिग्री (पी.जी.) तक आते-आते उसका सारा मोह, सारा रोना-मचलना बंद हो जाता है। वह स्वयं के लिए सोचना और तदनुसार कार्य एवं व्यवहार करना प्रारम्भ कर देता है। आप हिसाब लगा लीजिए यह पूरे अठारह वर्ष और एक तरह से अठारह कक्षाओं का हिसाब बैठता है। इसी प्रकार गीता के अठारह अध्याय है। प्रथम अध्याय अर्जुन विषाद योग नाम से है जिसमें अर्जुन दुःखी और विचलित नज़र आता है। वह हथियार छोड़कर रथ के पिछले भाग में बैठ जाता है और यह घोषणा कर देता है कि वह युद्ध नहीं करेगा। यह गीता शास्त्र भी प्री-प्राइमरी कक्षा है। जन-जीवन में देख लीजिए छोटे-छोटे बच्चे बस्ता पटक कर मचल जाते हैं और साफ कह देते हैं कि वे स्कूल नहीं जाएँगे। महाभारत युद्ध की कक्षा में आचार्य व गुरु बने भगवान श्री कृष्ण धीरज रखते हैं। वे शनैः शनैः अर्जुन को प्रेरित करते हैं और उसे रथ के अग्रभाग पर लाने एवं युद्ध करने के लिए तैयार करते हैं, अंततोगत्वा वह युद्ध के लिए तैयार हो जाता है और न केवल युद्ध करता है वरन् युद्ध में विजय प्राप्त कर कीर्तिवान बनता है। ऐसे ही शिक्षक हठ कर रहे बाल गोपाल को प्रेमपूर्वक विद्यालय आने और पठन-पाठन करने के लिए अभिप्रेरित करते हैं। जैसे अर्जुन 'युद्ध नहीं करूँगा' का एलान करने के बावजूद योग्य शिक्षक का सहारा प्राप्त होने पर युद्ध नहीं, महायुद्ध जीतकर योद्धा नहीं, महायोद्धा के रूप में प्रकट होता है, ठीक इसी प्रकार 'मैं स्कूल नहीं जाऊँगा' की स्पष्ट घोषणा कर परिवार में दादा-दादी की गोद में छिप जाने वाले बालक को स्नेहपूर्वक स्कूल में प्रवेश दिलाकर पढ़ने के लिए तैयार करने वाले शिक्षक के बलबूते पर वही बालक शीर्ष पढ़ाई करके राष्ट्र एवं समाज के परम सम्मानित पदों को प्राप्त कर समाज सेवा करता है। अट्ठारह वर्ष पहले स्कूल एवं पढ़ाई से डरकर दादा-दादी की आँचल में शरण लेने वाला बालक टॉप सी.ई.ओ. बनकर प्रकट होता है। ऐसा सब शिक्षकों की बदौलत ही सम्भव है।

भगवान श्री कृष्ण का बाल रूप कितना प्यारा है। मोर मुकुटधारी, अधरों पर बांसुरी, पीताम्बरधारी, घुंघराले बाल और ठुमकभरी चाल। यह छटा किस अशान्त को शान्त नहीं कर देगी। उनका जन्मदिवस प्रति वर्ष पूरी दुनिया में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के रूप में समारोहित किया जाता है। श्री कृष्ण जन्माष्टमी अन्तर्राष्ट्रीय शाश्वत जन्मदिन है। यदि किसी को अपने जन्मदिन की जानकारी नहीं है तो इस दिन जन्मदिन मनाकर उल्लास मना सकते है। 'हाथी घोड़ा पालकी-जय कन्हैया लाल की' तथा 'नन्दघर आनन्द भयो-जय कन्हैयालाल की' जैसे आनन्द प्रदायक गीत मानसिक मलीनता व उदासी को क्षण भर में हरण कर लेने की ताकत रखते हैं।

हमारे घरों में लड्डू गोपाल यानि बालरूप में कन्हैया की पूजा की जाती है। कितनी मोहक एवं शान्ति व सुकून दिलाती है लड्डू गोपाल की पूजा। निःसंतान दम्पत्तियों के लिए कान्हा उनकी सन्तान होते हैं। कान्हा के नाम पर खाना, पीना, पहिनना, हँसी खुशी सब आ जाती है। घरों में कान्हा का जन्मदिन जिनके उल्लास से मनाया जाता है, वह बेजोड़ होता है।

बच्चे की झिझक मिटाकर उसे पढ़ने के लिए तैयार करने तथा सतत पढ़ते हुए अपने लक्ष्य को हासिल करने की शिक्षा श्री कृष्ण एवं अर्जुन के इस प्रसंग से आज की पीढी के गुरुजन को लेनी चाहिए।

शिक्षक को धैर्यवान एवं सहनशील होना चाहिए। बच्चा किसी भी प्रकार का प्रश्न करें, कितनी ही बार प्रश्न करें मगर धैर्य से साथ उसे सुनते हुए उसका समाधान करना चाहिए। अर्जुन को कक्षा में आकर पढ़ने (रणभूमि में आकर युद्ध करने) के लिए तैयार करने में कृष्ण को पसीना आ गया होगा लेकिन अन्ततः वे सफल हुए। इसी प्रकार गुरुजन को चाहिए कि वे दृढ संकल्पित होकर अपने उद्देश्य प्राप्ति के लिए कर्मशील रहें। सफलता अन्ततः उन्हें मिलकर रहती है।

भगवान कृष्ण का अवतार 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्' के लिए हुआ, जैसा कि हर ईश्वर अवतार के समय होता है। सज्जनों को तारने के लिए और दुष्टजन का विनाश करने के लिए अवतार होते हैं ताकि धर्म और सत्य की फिर से स्थापना हो सके (धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे)। शिक्षा विभाग के मंच से शिक्षक इस शाश्वत उद्देश्य को प्राप्त करने में आहुति दे सकते हैं। इस प्रकार संसार में शान्ति और आनन्द की स्थापना करने की दिशा में गुरुजन भूमिका निभा सकते हैं। यह भगवान कृष्ण के जीवन चरित्र से शिक्षा मिलती है।

श्री कृष्ण का सखाभाव कितना निराला है। अर्जुन यदि सखा है तो उसके लिए रथ के सारथी बन गए हैं। सारथी बनकर न केवल रथ संचालन कर रहे हैं बल्कि उसकी रक्षा के लिए ढाल बनकर खड़े हो गए हैं। अर्जुन को पूर्णता दिलाने की ठान लेते हैं तो ऐसा करके ही दम लेते हैं। उनके एक अन्य सखा सुदामा की बात करें। अति दीन-हीन सुदामा। विशेषता इतनी की वे भगवान कृष्ण के साथ बाल्यकाल में पढ़े थे। घर में दो जून के आटे की भी व्यवस्था नहीं। घरवाली के बार-बार आग्रह पर वे द्वारिकापुरी में अपने बचपन के साथी और अब द्वारका के महाराज द्वारकाधीष भगवान श्री कृष्ण से मिलने आते हैं। आगे की कथा आप सब जानते हैं। उन्होंने अपने मित्र को गले लगा लिया। ऊँचे सिंहासन पर बिठाकर कठोती में पानी लेकर स्वयं उनके पैर धोते हैं और उनके द्वारा लाए तंदुल खाकर तीन लोक का राज्य न्योछावर कर

देते हैं। सखा भाव हो तो ऐसा। श्री कृष्ण के चरित्र से मिलने वाली ये सीख अन्यत्त दुर्लभ एवं अनुकणीय है।

समाज शिक्षक से प्रेरणा व आलोक प्राप्त करता है। फलतः समाज में उसकी स्थिति अग्रणीय होती है। भगवान श्री कृष्ण को उनके दौर में सभी के द्वारा महानतम की उपमा दी जाती थी। एक प्रसंग आता है कि जब धर्मराज युधिष्टिर ने राजा महाराजाओं, संत-महात्माओं और विद्वानों की सभा बुलाई तो उनके सामने एक प्रश्न उपस्थित हो गया कि इनमें प्रथम व सर्वोपरि स्थान किन्हें दिया जावे। युधिष्टिर भीष्म से इसका समाधान चाहते हैं। तब भीष्म कहते हैं, ''युधिष्टिर जहाँ स्वयं भगवान श्री कृष्ण उपस्थित हों, वहाँ यह प्रश्न उठता ही नहीं हैं। यह स्थान तो उन्हीं को शोभा देता है और इसी से हम सभी शोभायमान होते है।'' यह विशिष्ट हैसियत गुरुजन की समाज में होती हैं। वर्षों पहले जब नित्य घर से स्कूल और स्कूल से घर (up-doon) की प्रवृत्ति नहीं थी और शिक्षक पदस्थापन स्थान वाले गाँव में रहकर अध्ययन-अध्यापन व स्वाध्याय करते थे तब ग्रामीण अपनी बैठकों एवं मामलों में गुरुजन की सबसे पहिले सलाह लेते थे और जैसा वे कहते-वैसा ही करते भी थे। यह स्थिति आज भी सुदूर गाँवों में देखी जा सकती है।

भगवान श्री कृष्ण नीति के पर्याय है। वे महान नीतिकार है। गीता के अन्तिम अध्याय (18 वाँ) के अन्तिम श्लोक (78 वाँ) को देखिए-

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो, भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्ममः।।

यहाँ भगवान श्री कृष्ण को योगेश्वर कहा है और अर्जुन को गाण्डीव धनुर्धर। कृष्ण नीति कार है और अर्जुन उसके क्रियान्वितिकार। संसार में नीति के प्रतिनिधि कृष्ण और क्रियान्विति के प्रतीक अर्जुन हैं। जहाँ नीति और क्रियान्विति में साम्यता होती है, वहाँ श्री विजय, विभूति, यश, प्रतिष्ठा और बरकत होती है। समाज में शिक्षक और शिष्य नीति और क्रियान्विति के प्रतीक हैं। वे जैसी नीति बताएँगे और जैसी क्रियान्विति शिष्यगण करेंगे, वैसे ही समाज की रचना होगी। अतः गुरुजन को चाहिए कि वे अपने अनुभव एवं वाणी व कुशलता से शिष्यों को नीति बताए तथा नीति पथ पर चलने की सीख दें। इसी में समग्र का भला है। श्रीमद्भगवद्गीता शास्त्र को श्रुतियों की रानी कहा जाता है। गीता उपनिषदों का सारांश है। इसमें जीवन का सार भरा पड़ा है। जितना अध्ययन करते हैं, उतने ही गहरे अर्थ और जहन में आते जाते हैं। दुनियाभर में इस शास्त्र को पढ़ा व पढ़ाया जा रहा है। विश्व की लगभग सभी महत्त्वपूर्ण भाषाओं में इसका अनुवाद करते हुए टीकाएँ उपलब्ध है। श्री कृष्ण के उज्ज्वल चरित्र से शिक्षाएँ ग्रहण कर एक सुखी व समृद्ध समाज की संरचना की जा सकती है। जन्माष्टमी के पावन पर्व पर अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ इति शुभम्।

संयुक्त निदेशक (प्रशिक्षण)
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414060038

दुर्गुणी मनुष्यों के लिए तो सम्पन्नता भी अभिशाप सिद्ध होती है।

इस माह का गीत

सरहद तुझे प्रणाम

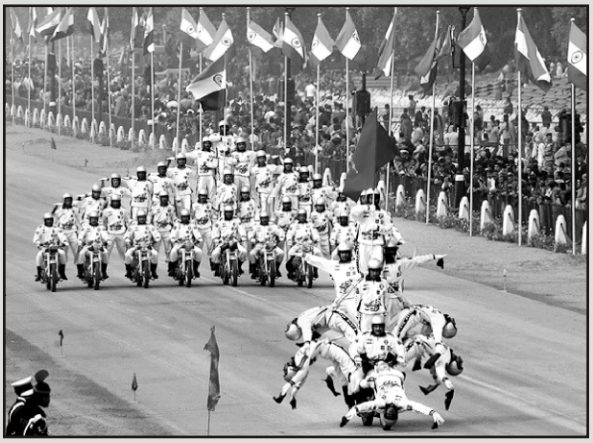

देश की रक्षा धर्म हमारा, देश की सेवा कर्म हमारा,
गूँज उठेगा जल, थल, अम्बर-जग में गौरव गान
सरहद तुझे प्रणाम-3

सीमाएँ हम रखें सुरक्षित
देश रहेगा सदा अखण्डित
इसी के हित में जीयें-मरेंगे-चलते सीना तान।।
सरहद तुझे प्रणाम-3

जन-जन में सद्भाव जगाएँ
भेदभाव सब दूर भगाएँ
एक देश है एक संस्कृति-समरस अमृत पान।।
सरहद तुझे प्रणाम-3

परम शिखर पर ले जाएँगे।
देश का वैभव प्रकटाएँगे
विश्वगुरु बन कर उभरेंगे-पाएँगे सम्मान।।
सरहद तुझे प्रणाम-3
देश की रक्षा.....प्रणाम।।

संकलनकर्त्ता-**दशरथ कुमार प्रजापत**
अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. नं.-1 पिण्डवाड़ा, जिला-सिरोही
मो. 8003498832

15 अगस्त जयन्ती दिवस

श्री अरविन्द : अतिमानसिक अवस्था के प्रवर्तक

❐ मनमोहन गुप्ता

15 अगस्त, सन् 1872 ई. को कलकत्ता के संभ्रान्त बंगाली परिवार में अतिमानसिक अवस्था के प्रवर्तक श्री अरविन्द का जन्म हुआ था। इनके पिता डॉ. कृष्णधन घोष थे। विनय भूषण तथा मनमोहन उनके बड़े भाई थे। इनसे छोटे भाई बारीन्द्र कुमार घोष थे। जो क्रांतिकारी आन्दोलन में सक्रिय होने के कारण जनता में अपनी लोकप्रियता अर्जित कर पाए थे। विनयभूषण तथा मनमोहन अग्रजों के साथ श्री अरविन्द पाँच वर्ष की अल्पायु में दार्जिलिंग के लॉरेटो कॉन्वेन्ट स्कूल में अध्ययन करने गए थे। पिता की इच्छानुसार यूरोपीय शिक्षा ग्रहण करने के लिए इन्हें इंग्लैण्ड भेजा गया था। उस समय इनकी आयु मात्र सात वर्ष की थी। इसी कारण श्री अरविन्द ने बंगला भाषा भी तब सीखी थी जब यह बड़े होकर भारत लौट आए थे।

इंग्लैण्ड में उन्हें मान्चेस्टर के ड्रूएट परिवार में रखा गया था। श्री अरविन्द को घर पर ही शिक्षा दी जा रही थी। श्री ड्रूएट लेटिन के विद्वान थे। उन्होंने बालक अरविन्द को लेटिन भाषा इतनी अच्छी सिखा दी थी कि मात्र 13 वर्ष की उम्र में जब वे लंदन के सेंट पॉल स्कूल में प्रविष्ट हुए, तब प्रधानाध्यापक ने स्वयं उन्हें ग्रीक भाषा का ज्ञान कराया था। उसे भी यह अपेक्षाकृत अल्प समय में ही सीख गए थे। उसी कारण प्रधानाध्यापक महोदय ने उनकी स्कूली शिक्षा भी पूर्ण करा दी थी।

उसके पश्चात् छात्रवृत्ति लेकर वे कैम्ब्रिज के किंग्स कॉलेज में अध्ययन करने के लिए वहाँ दो वर्ष तक रहे। इसी अवधि में उन्होंने अंग्रेजी और फ्रेंच साहित्य तथा यूरोपीय इतिहास का भी अध्ययन कर लिया था। श्री अरविन्द ने इटालियन, जर्मन और फ्रेंच भाषाएँ भी सीख ली थी। अंग्रेजी में कविता लिखना उन्होंने पहले ही आरंभ कर दिया था। यहीं पर उन्होंने लेटिन व ग्रीक में कविताएँ लिखकर अनेक पुरस्कार प्राप्त कर लिए थे। साथ ही ट्राइपोस के प्रथम खण्ड की परीक्षा में वे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए थे। बी.ए. की उपाधि उन्हें मिल सकती थी, लेकिन उस

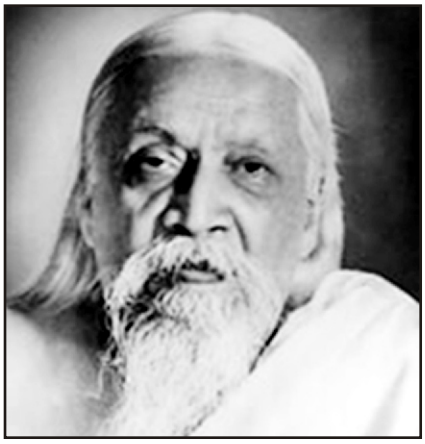

ओर उन्होंने विशेष ध्यान नहीं दिया था। उसके उपरान्त उन्होंने इंडियन सिविल सर्विस परीक्षा में भी भाग लिया था। घुड़सवारी परीक्षा में असफल रहे। ऐसी प्रतियोगिताओं में दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त कर भी उपाधि प्राप्त की जा सकती थी लेकिन उस ओर उनकी अधिक रुचि नहीं थी।

लंदन में श्री अरविन्द एक लॉज में रहे। जो वर्तमान में 'भुगतान अतिथि' की श्रेणी में आते हैं। यह समय उनके लिए बहुत ही कष्टप्रद निर्धनता पूर्ण था। अधिकांशतः पूरे वर्ष भर उन्होंने प्रभातकाल में सैंडविच, रोटी और चाय तथा सायंकाल एक आने (उस समय की मुद्रा का सिक्का) के भोजन पर ही समय व्यतीत करना पड़ा।

श्री अरविन्द का शिक्षा के साथ ही राजनैतिक जीवन भी प्रारंभ हो गया था। इनकी पत्रकारिता में भी रुचि थी। इनके पिताजी उन्हें 'बंगाली' नामक अंग्रेजी समाचार-पत्र प्रेषित किया करते थे। उसमें अंग्रेजी सरकार की निन्दा लिखी होने के कारण इनके मानस पटल में भी अंग्रेजों के विरुद्ध विचारों के भाव गहरी छाप छोड़कर अंकित हो गए थे। कैम्ब्रिज में 'भारतीय मजलिस' नामक संस्था के सदस्य भी वे बन गए थे। लंदन में कुछ भारतीयों ने जो अध्ययन करने गए थे वहाँ 'कमल और कटार' के रोमांचकारी नाम की संस्था स्थापित की थी। अपने भाई विनयभूषण तथा मनमोहन के साथ वे भी उसके सदस्य बन गए थे जिसमें भारत को स्वतंत्र कराने का दृढ़ संकल्प लिया गया था। लेकिन यह संस्था अधिक सक्रिय नहीं हो पाई थी।

लंदन में ही श्री अरविन्द का परिचय बड़ौदा नरेश गायकवाड़ से हो गया था। वे 21 वर्ष की आयु में बड़ौदा आ गए। यहाँ लगभग 13 वर्ष रहे। इस अवधि में भूमि-व्यवस्था, राजस्व विभाग के प्रभारी और फिर महाराजा के सचिवालय में रहे और उसके उपरांत बड़ौदा कॉलेज में अंग्रेजी के प्राध्यापक तथा उपप्राचार्य भी बने।

उन्होंने 'वन्दे मातरम्' अखबार भी निकाला था। बड़ौदा नरेश की दृष्टि में आदर का पात्र होने के कारण वे उनके लिए भाषण भी तैयार करते थे। एक बार मंत्री के रूप में महाराजा के साथ कश्मीर यात्रा पर भी गए। वे गोखले की अपेक्षा तिलक से अधिक प्रभावित थे। इसी कारण उग्रधारी विचारधारा के फलस्वरूप मराठी के 'इन्दुप्रकाश' में उन्होंने एक लेखमाला भी प्रारंभ की थी। मात्र उनके दो आलेखों के प्रकाशन से ही सम्पूर्ण राजनीति में सनसनी फैल गई थी। नरम दल के नेता रानाडे भयभीत हो गए थे। श्री अरविन्द को आगाह भी किया गया। देशद्रोही के आरोप लगने की आशंका जताई गई। इससे अरविन्द की लेखनी में अवरुद्धता आई।

श्री अरविन्द के राजनैतिक जीवन का क्षेत्र असीमित है। योग में भी इनकी गहरी अभिरुचि थी। अस्तुः अब हम उनकी आध्यात्मिक अनुभव की यात्रा को स्पर्श करें तो अधिक श्रेष्ठ रहेगा। आलेख के मन्तव्य की ओर हम बढ़े तो आलेख की सार्थकता अधिक रहेगी।

राजनैतिक जीवन में अलीपुर जेल की सलाखों में श्री अरविन्द पूर्णतः परिवर्तित होकर आध्यात्मिक बन गए थे। श्री अरविन्द को इसी कारण महायोगी भी कहा जाने लगा था। लेकिन विस्मय की बात तो यह है कि योग के ज्ञानार्जन से पूर्व ही वे आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करने लगे थे।

सर्वप्रथम 7 वर्ष की अवस्था में अनुभव हुआ था। उसके पश्चात 13 वर्ष की आयु में जब वे यह अनुभव करने लगे कि उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में भाग लेना है तो आंतरिक प्रतीति का अहसास हुआ। उसके उपरान्त भारत लौटने पर बम्बई के अपोलो बन्दरगाह पर जहाज से उतरते ही उन्हें अपने अन्दर एक गहरी शांति का अहसास हुआ था जिसने उन्हें चारों ओर से आच्छादित कर लिया था। जो कई मास तक रहा। जब वे बड़ौदा नरेश के साथ मंत्री के रूप में कश्मीर यात्रा पर गए थे तब तख्त सुलेमान पर्वत पर घूमते हुए उन्हें शून्य अनन्त की उपलब्धि हुई। ठीक इसी प्रकार बड़ौदा में एक दुर्घटना के समय उन्हें अलौकिक प्रतीति हुई। जिसमें उनके अन्दर से एक ज्योतिर्मय पुरुष के प्रकटीकरण से उनकी रक्षा की अनुभूति का अहसास था।

प्रारंभ में श्री अरविन्द ने बिना गुरु के ही योग शुरू कर लक्ष्य प्राप्ति का प्रयास किया था। उसके पश्चात अपने एक मित्र गंगामठ के स्वामी ब्रह्मानंद के एक शिष्य से एक नियम प्राप्त हो गया था। वह मुख्य रूप से प्राणायाम करते-करते कभी-कभी तो 6-7 घण्टे तक व्यतीत कर देते थे।

सन् 1907 में उनकी भेंट विष्णु भास्कर लेले नामक एक महाराष्ट्रीय योगी से हुई। जो इनके लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई। लेले के साथ योग करते समय उन्हें प्रथम बार ब्रह्म का पूर्ण अहसास हुआ था।

एक बार जब इन्हें भाषण देना था। उस समय उनके मन में कोई विचार नहीं आ रहा था। तभी लेले ने इनसे कहा था कि 'जनता को नमस्कार करके प्रतीक्षा करें, भाषण की प्रेरणा उन्हें मन से भिन्न किसी अन्य स्रोत से प्राप्त होगी।' बस तभी से ऐसा होने लगा कि लेखन विचार तथा अन्य बाहरी कार्यों की प्रेरणा भी उन्हें उसी अतिरिक्त स्रोत से प्राप्त होने लगी थी।

4 अप्रेल सन् 1910 ई. को श्री अरविन्द पांडिचेरी पहुँचे। इस दिन से उनके जीवन का नया अध्याय आरंभ हुआ था। कहा जाता है कि तीस वर्ष पूर्व एक तमिल योगी ने भविष्यवाणी की थी कि उत्तर से दक्षिण में एक योगी आएँगे जो पूर्ण योग की साधना और प्रतिष्ठा करेंगे। श्री अरविन्द पांडिचेरी में 40 वर्ष तक रहे। इस मध्य उन्होंने जो कार्य किए उन्हें दो भागों में बाँटा जा सकता है। प्रथम भाग उनके दर्शन से सम्बन्धित है। जिसमें उन्होंने सृष्टि, मनुष्य, ईश्वर तथा भविष्य की छान-बीन करके कुछ विचार संसार को प्रदान किए थे। जो मानवता की दृष्टि से बहुमूल्य है। उसमें चिंतन और दर्शन का योगदान था। अपने तत्वज्ञान को भी श्री अरविन्द ने मूलतः भारतीय संस्कृति से ही उत्पन्न अर्थात् वेद, उपनिषद, गीता आदि की परम्परा की ही अगली शृंखला माना था। इन्होंने जो ज्ञान दिया उसमें एक व्यक्ति अपने जीवन में अपनी सीमाओं के साथ जो योगदान कर सकता है, उससे वह कई गुना अधिक है। इसलिए उन्होंने जो दर्शन दिया उसके क्रियात्मक रूप में व्यक्त करने के लिए जो कार्य किया और उसमें जो सफलता मिली, उसे उनका अतिरिक्त कार्य और उनकी अतिरिक्त कृपा ही माना जाना चाहिए। श्री अरविन्द ने विकास की आगामी अवस्था को इसी शरीर में उतार लाने का प्रयत्न किया था। उसे उन्होंने 'अतिमानस अवस्था' का नाम दिया था। उन्होंने प्रतिपादित किया था कि मानस की अवस्था तक हम पहुँच चुके हैं। इससे आगे की अवस्था में सत्य स्वयं मनुष्य में अवतरित हो जाएगा और अपने विविध रूपों और क्रीड़ाओं में अपनी अभिव्यक्ति देगा। यह सब तभी संभव हो पाएगा जब व्यक्ति उस उच्च भागवत चेतना तक पहले तो स्वयं आरोहण कर जाए, फिर उसे आत्मसात कर ले और इसके बाद उसे बुद्धि, शरीर तथा जीवन का रूपांतर करने के लिए नीचे उतार लाए।

इसके लिए उन्होंने 'पूर्ण योग' का नाम दिया था। अब तक भारत में जितने प्रकार के योग विकसित किए गए थे वे या तो कुछ विशेष शक्तियों की सिद्धि के लिए थे या एक विशेष मानसिक अवस्था की प्राप्ति के लिए थे। श्री अरविन्द के पूर्ण योग की प्रथम महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसका एक लक्ष्य निर्धारित हो गया था। दूसरी बात यह है कि उससे दुष्कर तपों को निकाल दिया गया था। उनके अनुसार ''साधनाएँ उतनी ही हों जो शरीर को शुद्ध करके उसे इस योग्य बना दें कि अतिमानस की शक्ति का आविर्भाव होने पर वह उसके वेग को संभाल सके। अतिमानस की प्राप्ति के लिए जो शक्ति चाहिए उसका उत्पादन भी ये साधनाएँ करती हैं।''

एक फ्रेंच बैंकर की पुत्री जो सन् 1914 में मार्च मास में भारत आई थीं। पांडिचेरी में उन्हें महर्षि अरविन्द के प्रथम दर्शन में ही आभास हो गया था कि यह व्यक्ति मानवता के भविष्य का निर्माता है। वह बचपन से ही योग साधना करती थीं। मात्र 13 वर्ष की आयु में ही उन्होंने श्री अरविन्द को अपनी कल्पना में देख लिया था। वह भारत में पांडिचेरी में 'माताजी' के नाम से जानी जाती थीं। वह एक वर्ष तक ही पांडिचेरी में रहीं। महायुद्ध आरंभ हो जाने के कारण फ्रांस लौट गईं थी। लेकिन इसी अल्पावधि में उन्होंने श्री अरविन्द के साथ मिलकर अंग्रेजी और फ्रेंच में 'आर्य' और 'Rarow de Grande Synthese' नामक दार्शनिक पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ किया। उसमें फ्रेंच पत्रिका सात माह चलकर बंद हो गई थी। अंग्रेजी पत्रिका साढ़े छः वर्ष तक चली थीं।

अतिमानस के अवतरण पर श्री अरविन्द ने कहा था ''मैं इसकी संभावना में ही नहीं अपितु इसकी सुशक्यता में भी विश्वास करता हूँ।'' अवतरण की अभिव्यक्ति के संदर्भ में ''यह सत्य है कि उच्चतर शक्ति का अधिकाधिक शक्तिशाली अवतरण हो रहा है। किसी योग ऋषि या महापुरुष के चारों ओर प्रकाश और रंग तथा उनके सूक्ष्म ज्योतिर्मय रूप की आभा जो दिखाई देती है वह कोई कल्पना नहीं है। इसका आशय है कि उस आभा मण्डल से आलोकित की दृष्टि अति भौतिक सद्वस्तुओं की ओर खुल रही है जो रंग या प्रकाश हमें दिखाई देता है, वह नाना स्तरों की शक्तियाँ हैं। प्रत्येक रंग एक विशेष शक्ति का सूचक है।''...अतिमानस शक्ति उतरती हुई दृष्टिगोचर होती है। परन्तु उसने शरीर या जड़तत्व पर अभी अधिकार नहीं किया है। अतिमानस के स्वरूप पर श्री अरविन्द ने कहा था ''इस पर अधिक वाद-विवाद उचित नहीं कि यह क्या और किस तरह करेगा? क्योंकि यह तो ऐसी चीजें हैं जो भागवत सत्य के द्वारा कार्य करते हुए स्वयं निश्चित करेगा। मन को उसका रास्ता निश्चित कदापि नहीं करना...।''

5 दिसम्बर सन् 1950 ई. को प्रातः 1 बजकर 26 मिनट पर श्री अरविन्द ने अंतिम साँस लेकर परलोकगमन की अनन्तयात्रा को प्रस्थान कर लिया था। अपनी अनन्तयात्रा का

श्री अरविन्द ने पूर्व में किसी को अहसास नहीं होने दिया था। फिर भी कुछ विचार है कि उन्हें अवश्य इसका आभास हो गया था। तभी तो कुछ माह पूर्व ही उन्होंने अपने प्रतीकात्मक महाकाव्य 'सावित्री' का लेखन जो मंथर गति से हो रहा था उसे बोल-बोलकर त्वरित रूप से लिखाना प्रारंभ कर दिया था और कहा कि ''अब इसे शीघ्र सम्पन्न करना है।'' उसमें 12 सर्ग की योजना निर्धारित थी। लेकिन 11 सर्ग ही पूर्ण करा पाए थे। अन्तिम 'मृत्यु' का सर्ग नहीं लिखा पाए थे। दूसरी अनुभूति का कारण यह था कि वे किसी पर पितृत्वपूर्ण करुणा को व्यवहारतः कभी प्रकट नहीं करते थे। लेकिन उन दिनों अपनी सेवा करने वाले सभी व्यक्तियों पर विशेष रूप से कृपालु हो उठे थे-शायद इसीलिए कि बाद में किसी को इसका अभाव न हो। साथ ही कोई शिकायत भी न रह जाए। अंतिम समय में वह बार-बार आँखें खोलते थे और पानी माँगने के साथ समय भी पूछ रहे थे। नब्ज रुकने से आधा घण्टा पूर्व डॉक्टर से उन्होंने बात भी की थी। संभवतः यह अतिमानसिक चेतना की ही ज्योति थी जो पूरे 90 घंटे तक उन पर प्रकाशमान रही। जिसके कारण उनके अंतिम संस्कार को स्थगित कर उनके अंतिम दर्शनों के लिए आमजनों को आने दिया गया। लगभग 111 घण्टे के पश्चात ही उनके शरीर की आभा लुप्त होकर जब दुर्गन्ध की ओर अग्रसित होने लगी तब 9 दिसम्बर सन् 1950 की सांध्य वेला में उन्हें समाधि दी गई। उस समय सम्पूर्ण जनमानस की आँखों से अश्रुओं की धारा प्रवाह हिचकियों के साथ श्रद्धांजलि दे रही थी।

अतिमानसिक अवस्था के प्रवर्तक श्री अरविन्द आज हमारे मध्य शारीरिक रूप से भले ही नहीं हैं लेकिन उनके कार्य प्रेरणास्तंभ के रूप में हमारे सम्मुख आज भी उपस्थित हैं। जो हमें उनके बताए मार्ग पर चलने के लिए एक ज्योति का काम करते हुए हमारे हृदय में अमर रहकर मार्गदर्शन का कार्य करते रहेंगे।

एस.बी.के. गर्ल्स हा. सै. स्कूल के पास,
मण्डी अटलबंद, भरतपुर-321001 (राज.)
मो: 9983409454

बच्चों में सुधार प्रताड़ना से नहीं प्रेम से होता है।

भारतीय रिजर्व बैंक

निवेश से पहले सचेत रहें।

❒ हरप्रीत कौर

क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटीज जिनका उद्देश्य मुख्यतः मध्यम एवं निम्न मध्यम वर्ग के लोगों में बचत को बढ़ावा देना व सदस्यों को साख सुविधा उपलब्ध करवाना है। इन सोसायटीज द्वारा स्थानीय स्तर पर सहकारिता विभाग द्वारा जारी पंजीकृत उपनियमों के अनुसार अपने सदस्यों से वित्तीय लेनदेन सम्पादित किया जाता है। इन सोसायटीज द्वारा अन्य सदस्यों से वित्तीय लेनदेन करना बैंकिंग रेगूलेशन एक्ट 1949 के अनुसार वर्जित है।

यहाँ यह तथ्य जनसाधारण के ध्यान में लाया जाना प्रासंगिक है कि ये क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटीज अपनी ऋण नीति स्वयं बनाती है एवं ब्याज दरों का निर्धारण भी स्वय करती है। इन सोसायटीज के दैनिक क्रियाकलापों में सहकारिता विभाग का कोई हस्तक्षेप नहीं होता है।

क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटियों के बैंक खातों एवं उनमें अमानत जमा की सूचना समितियों द्वारा विभाग को सामान्यतः उपलब्ध नहीं करायी जाती है।

सोसायटी की सिक्यूरिटी कहाँ-कहाँ पर है व कितनी जमा है तथा जमा राशि का नियोजन किन-किन क्षेत्रों में किया जाता है इसकी सूचना केवल संबंधित क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटियों के पास रहती है।

क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटियों की जमाएँ 'निक्षेप बीमा प्रत्यय एवं गारन्टी निगम' (डीआईसीजीसी) द्वारा बीमित नहीं होती है, अतः जोखिमाधीन है।

निवेशक निवेश करने से पहले सोसायटी के संस्थापकों की साख व ख्याति को ध्यान में रखना चाहिए व अनजान सोसायटी में निवेश करने से बचना चाहिए।

निवेशक निवेश करने से पूर्व देख लेवें कि सोसायटी के सदस्य उसके जानकार है तथा उनमें आपसी समझ, भरोसा व विश्वास की भावना विद्यमान है।

निवेशकों को इन सोसायटियों में निवेश का आधार केवल ब्याज की दर को नहीं बनाना चाहिए बल्कि अन्य जोखिमों का भी आकलन कर लेना चाहिए। खाताधारकों को खाते का वार्षिक विवरण एवं निश्चित समय उपरांत पासबुक को भरवाना चाहिए ताकि यह ज्ञात हो सके कि सोसायटी या बैंक द्वारा कोई छुपी हुई कटौती (hidden charges) तो खाते से नहीं की गयी है।

निवेशकों को किसी भी सोसायटी में निवेश करने से पहले सोसायटी की बैलेन्स शीट एवं आर्थिक स्थिति का गहन अध्ययन करना चाहिए।

क्रेडिट सोसायटी के सदस्यों को सोसायटी की वार्षिक आमसभा में भाग लेना चाहिए तथा यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि सोसायटी के संचालक मण्डल का चुनाव प्रजातांत्रिक रूप से हुआ है तथा उसमें एकाधिकार वाले निदेशक मण्डल का निर्वाचन नहीं हुआ है।

निवेशकों द्वारा निवेश से पूर्व इस तथ्य को भी गंभीरता के साथ परख लिया जाए कि क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटियों राजस्थान सहकारी सोसायटी अधिनियम 2001 अथवा मल्टीस्टेट को-ऑपरेटिव सोसायटी एक्ट 2002 के तहत पंजीकृत हो।

सहायक पंजीयक (बैंकिंग/अर्बन को ऑपरेटिव बैंक)
सहकारी समितियाँ, सहकारिता विभाग, राजस्थान
नेहरु सरकार भवन, भवानी सिंह रोड,
जयपुर- 302005
मो. 9782197222

भूल सुधार

शिविरा पत्रिका जुलाई 2017 के पृष्ठ 38 पर प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ विद्यालय पुरस्कार-2014 हेतु चयनित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की सूची में मण्डल स्तर पर क्रमांक 5 पर अजमेर का विद्यालय 'राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सराधना, अजमेर'' सुधारकर पढ़ने का कष्ट करें।

संस्कृत-दिवस

संस्कृत-भाषी संस्कृताभिमानी डॉ. अम्बेडकर

❒ डॉ. विक्रमजीत

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का व्यक्तित्व बहुमुखी-विविधायामी है। प्रस्तुत संक्षिप्त लेख में उनके इस विराट व्यक्तित्व के एक अनोखे और प्रायः अल्पश्रुत अल्पप्रचारित शुक्ल पक्ष को सप्रमाण उपस्थापित करने का यत्न कर रहा हूँ, इस विश्वास के साथ कि यह तुच्छ प्रयत्न संस्कृत के प्रति डॉ. अम्बेडकर की श्रद्धा-भक्ति के विषय में कतिपय लोगों के अज्ञान और तज्जन्य भ्रान्त धारणा व पूर्वाग्रह के निर्मूलन में साधक बनेगा।

डॉ. अम्बेडकर बाल्यावस्था में संस्कृत पढ़ना चाहते थे, किन्तु अस्पृश्य होने के कारण किसी संस्कृत-शिक्षक ने उन्हें संस्कृत पढ़ाने से मना कर दिया था यह विषय तो बाबा साहेब के जीवन से सम्बन्धित पुस्तकों में लिखा है और प्रचार में भी है। परन्तु उस समय जाति के कारण अवसर न मिलने पर भी संस्कृताध्ययन की उनकी उत्कट इच्छा मन में सतत बनी रही और सन् 1930 में नागप्पशास्त्री नामक पण्डित से संस्कृताध्ययन का आरम्भ किया।

नागप्पशास्त्री कर्णाटकीय थे। संस्कृत के गम्भीर अध्येता थे। मैसूरु-राजप्रासाद में राजकुमार व राजकुमारी को पढ़ाते थे। गौतम बुद्ध के विचार से प्रभावित होकर संस्कृत में 'बुद्धभागवत' लिखने में उद्यत थे। 1929 में कर्णाटक पधारे पं. मदनमोहन मालवीय जी शास्त्री जी द्वारा लिखे जा रहे 'बुद्धचरित' को देखकर प्रभावित हुए और उन्हें मुम्बई आने का आमन्त्रण दिया। इस आमन्त्रण को स्वीकार करके उसी वर्ष मुम्बई आए नागप्पशास्त्री की भेंट वहाँ गाँधी जी और डॉ. अम्बेडकर से हुई। डॉ. साहेब की संस्कृताध्ययन की अभिलाषा को जानकर उनके आग्रह पर शास्त्री जी ने सप्ताह में तीन दिन संस्कृत-पाठन अंगीकार किया। दो वर्ष तक निरन्तर यह अध्ययनाध्यापन का क्रम चला। तत्पश्चात् शास्त्री जी कार्यवश गुजरात चले गए किन्तु डॉ. साहेब उन्हें पुनः मुम्बई ले आए और फिर तीन वर्ष तक वही क्रम; इस प्रकार कुल पाँच वर्ष तक संस्कृताध्ययन किया। संस्कृत में विद्यमान ज्ञान राशि को अनुवाद की बजाय मूलरूप में जानने की ललक को प्रयत्नपूर्वक पूरा किया। यह विषय भी बाबा साहेब के जीवन के अध्येताओं को ज्ञात है, यद्यपि उनके इस विलक्षण संस्कृतानुराग का इतना प्रचार नहीं है।

परन्तु, 'भारत की राजभाषा संस्कृत हो' ऐसा एक संशोधन प्रस्ताव संविधान सभा में रखा गया था और उस प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने वालों तथा उसका मण्डन- समर्थन करने वालों में डॉ. अम्बेडकर भी अन्यतम थे, यह विषय तो बहुत ही कम लोगों को ज्ञात होगा!

एतद्विषयक प्रमाण के रूप में हिन्दी व अंग्रेजी के तत्कालीन प्रमुख समाचार-पत्रों यथा- THE HINDU (सित. 11, 1949), STATESMEN (सित. 11 व 15, 1949), HINDUSTAN STANDARD (सित. 11, 1949), THE NATIONAL HERALD (सित. 11, 1949), हिन्दुस्तान (सित. 12, 1949) इत्यादि के मुख पृष्ठों पर प्रमुखता से प्रकाशित समाचार द्रष्टव्य हैं, जिनकी प्रतिकृतियाँ इस लेख के साथ ही संलग्न हैं।

यहाँ यह जानना तो (संस्कृत-हितकामी जन के लिए) और भी रुचिकर एवं सुखद है कि संविधान सभा में जब राजभाषा के विषय में चर्चा हो रही थी तो डॉ. अम्बेडकर व पण्डित लक्ष्मीकान्त मैत्र संस्कृत में धारा प्रवाह वार्तालाप करने लगे। उस संस्कृत वार्तालाप या सम्भाषण का उद्देश्य निश्चय ही संस्कृत की सरलता, व्यावहारिकता व सम्भाषण योग्यता का प्रतिष्ठापन ही रहा होगा।

तत्सम्बन्ध में 'आज' नामक हिन्दी दैनिक में 15 सितम्बर 1949 को 'डॉ. अम्बेडकर का संस्कृत में वार्तालाप' शीर्षक से समाचार प्रकाशित हुआ तथा THE LEADER नामक आंग्ल दैनिक में भी 13 सित.1949 को THEY CONFER IN SANSKRIT शीर्षक से मुख पृष्ठ पर समाचार प्रकाशित हुआ था। इन पत्रों की प्रति कृति भी यहाँ संलग्न है।

संविधान सभा में संस्कृत परक प्रस्ताव के समर्थकों में डॉ. निज़ामुद्दीन मोहम्मद भी प्रमुख थे और उन्होंने भी संस्कृत के पक्ष में भाषण दिया था।

वस्तुतः यह सब नूतन जानकारियाँ बहुत समय बाद प्रकाश में आई हैं। देहली के राष्ट्रीय अभिलेखागार में शताधिक वर्षों के समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं की माइक्रो फिल्म संरक्षित हैं। उन सबका अन्वेषण- गवेषण करके 'संस्कृत भारती' द्वारा यह सब वृत्त प्राप्त किया गया है, जो 'सम्भाषण सन्देशः' नामक पत्रिका के जून 2003 के अंक में (श्री चमू कृष्ण शास्त्री के नाम से) प्रकाशित भी हुआ था।

आज

15 सितम्बर, 1949

डा० अम्बेडकरका संस्कृतमें वार्तालाप

नयी दिल्ली, १२ सितम्बर। केन्द्रकी गोष्ठीवार्तामें आज बड़ी उत्सुकता दिखाई दे रही थी। भाषाके प्रश्नपर एक-एक गुट जोरों से वार्ता कर रहे थे। लोगोंकी दिलचस्पी इतनी बढ़ी की अंबेडकर तथा पण्डित लक्ष्मीकांत मैत्र आपसमें संस्कृतमें बातचीत करने लगे। स्मरण रहे कि आप दोनोंने संस्कृतको राजभाषा माननेके लिए संशोधन उपस्थित किये हैं

THE LEADER

(Allahabad)

Sept 13th, 1949

THEY CONFER IN SANSKRIT

NEW DELHI, Sept. 12.—The lobbies were the centres of considerable interest today when animated group discussions were being held on the language issue.

An incident of agreeable surprise was the conversation in Sanskrit between Dr. Ambedkar and Pandit Lakshmi Kanta Maitra, both of whom have given notice of an amendment suggesting Sanskrit as the official language of the Union.—U. P. I.

इन सब नव प्राप्त प्रमाणों से ज्ञात होता है कि डॉ. अम्बेडकर ने न केवल संस्कृत के राजभाषात्व का समर्थन किया था, वे न केवल संस्कृत जानते थे, अपितु वे संस्कृत में बोलते भी थे !

बाबा साहेब संस्कृत भक्त थे व संस्कृत बोलते थे- उनके इस

अल्पज्ञात चेहरे से परिचित होना संस्कृतजीवियों, संस्कृतानुरागियों व अन्यों के लिए भी प्रीतिकर तो है ही, प्रेरक भी है

THE HINDU
Sept 11th 1949

INDIA'S STATE LANGUAGE

CLAIMS OF SANSKRIT

AMENDMENT TO BE MOVED TO ARTICLE

NEW DELHI, Sept. 10.

India's Law Minister, Dr. B. R. Ambedkar, is among those who have sponsored Sanskrit as the official language of the Indian Union. One of his supporters is Dr. B. V. Keskar, India's Deputy Minister for External Affairs, another Mr. Naziruddin Ahmed.

Questioned about this move, Dr. Ambedkar asked a P.T.I. correspondent this evening, "What is wrong with Sanskrit?" An amendment seeking Sanskrit to be India's official language will be taken up by the Constituent Assembly when the question of official language is considered by the House.

The amendment reads: Article 310 (1) The official language of the Union shall be Sanskrit.

Consequential changes substituting Sanskrit for Hindi have also been suggested for the rest of the Articles.—PTI

STATESMAN
Sept 15, 1949

SANSKRIT SCHOLARS DEMAND

STATESMAN
11th Sept. 1949

AMBEDKAR AMONG SPONSORS

SANSKRIT PROPOSED AS OFFICIAL LANGUAGE

ALLEGED MISAPPROPRIATION OF FUNDS

हिन्दुस्तान
(हिन्दी)
12 सितम्बर, 1949

राजभाषा संस्कृत हो

प्रस्तावकों में डा० अम्बेडकर भी

महासभा काश्मीर-

THE SUNDAY HINDUSTHAN STANDARD
Sept 11th, 1949

Sanskrit As Official Language Of Indian Union

AMENDMENT TO DRAFT PROVISIONS: AMBEDKAR AMONG SIGNATORIES

A RECORD NUMBER OF AMENDMENTS

MAIN CONTROVERSY ON NUMERALS

THE NATIONAL HERALD
11th Sept 1949

AMBEDKAR FAVOURS SANSKRIT

Amendment To Article On Language

अस्तु, बाबा साहब जैसे संस्कृत-प्रेमियों के सत्प्रयासों के पश्चात भी संस्कृतज्ञों की संघटित शक्ति के अभाव में संस्कृत को वह प्राप्तव्य स्थान प्राप्त न हो सका। बस 1) संविधान की अष्टम सूची में संस्कृत का प्रवेश हो, 2) राजभाषा के रूप में हिन्दी प्रधानतया संस्कृत से शब्दों को ग्रहण करे और 3)केन्द्र सरकार के विविध भागों, मन्त्रालयों व संस्थाओं के ध्येय वाक्य संस्कृत में हों- ये तीन सान्त्वना पुरस्कार (Consolation Prize) ही संस्कृत प्राप्त कर सकी।

बाबा साहेब की संस्कृत प्रीति निश्चय ही गर्वानुभूति का विषय है, पर संस्कृत-विषयक उनका स्वप्न तो अधूरा है; उसकी पूर्ति का दायित्व हमारा है। किंच, संस्कृत के माध्यम से समाज में सर्वविध समरसता की निर्मिति का महद्द्वार भी हमारे ही कन्धों पर है!

प्राध्यापक, राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर
मो. 9414604308

जयन्ती

मानवीय मूल्य व पर्यावरण संरक्षक-गुरु जाम्भोजी

❒ डॉ. ओम प्रकाश बिश्नोई

भारत भूमि सदैव से ही संत, महापुरुषों एवं ऋषि मुनियों की रमणस्थली रही है। यहाँ जप, तप एवं त्याग की प्रधानता रही है। मानवता जब-जब सांसारिकता के भँवरजाल में फँसकर अपने पथ से भटकी है तब-तब इन देवदूतों ने नाना रूपों में अवतार धारण कर अपने दायित्व का निर्वाह किया है। ऐसे ही देवपुरुष, बिश्नोई पन्थ के प्रवर्तक, धर्म-नियामक व समाज सुधारक गुरु जम्भेश्वर जी हैं।

इनका अवतरण राजस्थान के नागौर जिले के पीपासर गाँव में विक्रम सम्वत् 1508 (सन् 1451) भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को हुआ था। उनके पिता का नाम लोहटजी व माता का नाम हंसादेवी था। विश्नोई पंथ में जाम्भोजी को विष्णु का अवतार मानकर उनकी आराधना की जाती है।

गुरु जम्भेश्वरजी ने वि.सं. 1542 (सन् 1485) की कार्तिक कृष्ण अष्टमी को समराथल धोरे पर कलश स्थापित कर, हवन करके, अभिमंत्रित जल, जिसे 'पाहळ' कहते है, पिलाकर विश्नोई पंथ की स्थापना की। 29 नियमों की आचार संहिता प्रदान की। चारों वर्णों के लोग जिन्होंने 29 नियमों के पालन का संकल्प लिया वे विश्नोई कहलाये। गुरु जाम्भोजी के बताए 29 नियम मानव जाति के कल्याण व लोक मंगल की भावना से मण्डित हैं। 29 नियमों की आचार संहिता इस प्रकार हैः-

1. तीस दिन तक सूतक रखना।
2. पाँच दिन तक रजस्वला स्त्री को गृह कार्यों से अलग रखना।
3. प्रातः काल स्नान करना।
4. शील, सन्तोष व शुद्धि रखना।
5. द्विकाल सन्ध्या करना।
6. सायं को आरती करना।
7. प्रातः काल हवन करना।
8. पानी, दूध, ईन्धन को छान-बीन कर प्रयोग में लेना।
9. वाणी शुद्ध व मधुर बोलना।
10. क्षमा (सहनशीलता) रखना।

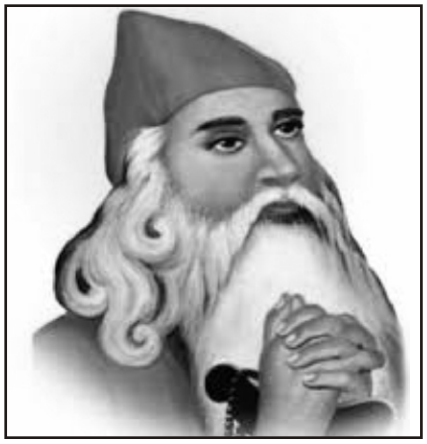

11. दया (नम्रता) से रहना।
12. चोरी नहीं करना।
13. निन्दा नहीं करना।
14. झूठ नहीं बोलना।
15. वाद-विवाद नहीं करना।
16. अमावस्या का व्रत रखना।
17. विष्णु का भजन करना।
18. जीवों पर दया करना।
19. हरे वृक्ष नहीं काटना।
20. काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार आदि को वश में रखना।
21. अपने हाथ से रसोई बनाना।
22. थाट अमर रखना।
23. बैल बधिया न करना।
24. अफीम नहीं खाना।
25. तम्बाकू खाना-पीना नहीं।
26. भाँग नहीं खाना।
27. मद्यपान नहीं करना।
28. मांस नहीं खाना।
29. नीले वस्त्र नहीं पहनना।

गुरु जाम्भोजी ने आमजन की बोल चाल की भाषा में जनता को अनेक 'सबदों' के माध्यम से उपदेशित किया जिनमें 120 सबद संकलित हैं जिसको 'सबदवाणी' या 'जम्भवाणी' कहा जाता है।

'पाछा खिसियां पण घटे, गुरु जाम्भोजी की आण।
सिर साटै रूंख रहे, तो भी सस्तो जाण।।'

हवन-गुरु जाम्भोजी ने मन की शुद्धि व पर्यावरण की शुद्धि के लिए प्रातः काल में हवन करना अनिवार्य बताया।

'होम हित, चित प्रीत सूं होय बास बैकुण्ठा पावों।' गुरु जाम्भोजी द्वारा प्रतिपादित यज्ञ का पालन आज भी विश्नोई समाज द्वारा 'सबदवाणी' के सस्वर उच्चारण के साथ किया जाता है।

नशा-गुरु जाम्भोजी ने उत्तम स्वास्थ्य के लिए सभी प्रकार के नशे को वर्जित बताया। नशा मनुष्य को खोखला कर देता है।

सत्संग-गुरु जाम्भोजी ने उत्तम संगति करने की सीख तथा सबदवाणी में कहा है कि-

'लोहा नीर किसी विध तरिबा, उत्तम संग सनेहु।'

जिस प्रकार लकड़ी की संगति से लोहा समुद्र के पार तैर सकता है ठीक उसी प्रकार उत्तम लोगों की संगति से मनुष्य को लाभ मिलता है।

खान-पान-गुरु जाम्भोजी ने सबदवाणी में शाकाहारी व सात्विक भोजन को उत्तम बताया जिससे मन व बुद्धि शुद्ध रहती है।

आत्म-अनुशासन-'पहले किरिया आप कमाइये, तो औरां ने फरमाइये।' सबदवाणी में गुरु जाम्भोजी ने कहा है कि दूसरों को उपदेश देने से पहले अपने आप का सुधार करना जरूरी है।

विनम्रता-'जो कोई आवे हो-हो करतो, तो आपज होइये पाणी।' गुरु जाम्भोजी ने सबदवाणी में कहा है कि यदि कोई गुस्से में आता है तो आप जल के समान शीतल हो जाइये।

वाणी पर संयम-गुरु जाम्भोजी ने सबदवाणी में कहा है कि 'सुवचन बोल सदा सुहलाली' अर्थात्-अच्छे वचन बोलोगे तो सदा खुशहाली रहेगी।

अहिंसा-गुरु जाम्भोजी ने मन, वचन व कर्म से किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं देने का कहा है।

शौच–गुरु जाम्भोजी ने शरीर व मन की पवित्रता को शौच कहा है। जल से शरीर शुद्ध होता है व मन सत्य बोलने से शुद्ध होता है। विद्या व तपस्या से जीवात्मा शुद्ध होती है।

'रूंख लीलो नहीं घावे'

गुरु जाम्भोजी प्रथम पर्यावरणविद् थे जिन्होंने आज से 532 वर्ष पूर्व हरे वृक्ष नहीं काटने व पर्यावरण की रक्षा का संदेश दिया था। विक्रम संवत् 1787 (सन् 1730) को जोधपुर रियासत में खेजड़ली गाँव में अमृता देवी बिश्नोई के नेतृत्व में 363 विश्नोई नर-नारियों ने अपना बलिदान दे दिया। लेकिन पेड़ों को नहीं काटने दिया। जिनमें 269 पुरुष व 94 महिलाएँ थी। सम्पूर्ण विश्व को पर्यावरण के लिए इस बलिदान से प्रेरणा लेनी चाहिए। जीव रक्षा, वृक्षरक्षा और प्रकृति संरक्षण के लिए विश्नोई समाज लगातार बलिदान देता रहा है।

गुरु जाम्भोजी की सांस्कृतिक चेतना अत्यन्त ही प्रबल है। भारतीय संस्कृति के सभी मूल तत्व उनके धर्म नियमों व वाणी में विवेचित हुए हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति के प्राचीन श्रेष्ठ आस्थाजन्य मूल्यों को स्थापित किया। तत्कालीन समाज की जड़ता को दूर कर परम्परागत मूल्यों, आदर्शों का युगीन आस्थाओं के साथ सुन्दर समन्वय किया है, जो सार्वकालिक प्रासंगिक व प्रेरणादायी है।

व्याख्याता
रा.उ. अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर
मो. 9829987479

शिक्षा

समझ का विकास ही शिक्षा है।

❐ **रघुवीर सिंह उदावत**

भारत ने स्कूलों से बाहर रहने वाले बच्चों को स्कूल में लाने के विश्वव्यापी अभियान में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। 2011 की जनगणना के अनुसार देश की 74% आबादी साक्षर है। क्या वास्तव में 74% आबादी शिक्षित हुई है? यह हमारे लिए विचारणीय बिन्दु है।

आँकड़ों से परे जाकर हमें बात करनी चाहिए, क्योंकि आँकड़े जिन सर्वेक्षणों पर आधारित होते हैं, वे कभी विश्वसनीय नहीं होते। जो आँकड़े हमें दिखाई देते हैं वे लोग साक्षर तो हुए हैं पर शिक्षित नहीं। क्योंकि जब तक इन्सान सही गलत का निर्णय नहीं कर सकता तब तक उसको शिक्षित नहीं कहा जा सकता है। साक्षर और शिक्षित में फर्क है। पढ़-लिख लेना मात्र ही शिक्षित होना नहीं है। शिक्षा का अर्थ तब है, जब वह जीवन को सुलभता से जीने व समस्याओं-चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाए तथा सही और गलत का निर्णय करने की क्षमता उत्पन्न करे।

हमारे देश में शिक्षा को लेकर अर्थहीन गंभीरता रही है। यहाँ तक कि ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट होने के बाद भी भाषा पर सही पकड़ नहीं हो पाती। हम देखते हैं कि बहुत कम पढ़े-लिखे लोग भी वास्तव में अत्यंत शिक्षित हैं क्योंकि उन्होंने अपने जीवन की चुनौतियों का सामना किया और समस्याएँ हल की। स्व. धीरू भाई अंबानी इसी का उदाहरण है। श्रीमान् नरेन्द्र मोदी की गिनती ऐसे लोगों में ही है; जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने अनुकूल मार्ग बनाए। इंफोसिस के श्रीमान् नारायण मूर्ति भी ऐसे लोगों में से है जिन्होंने शिक्षित शब्द को नए आयाम दिए। इन सबसे बड़ा उदाहरण स्व. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का है, जिन्होंने देश को नई दिशाएँ दी हैं। शिक्षा को कुशलता और कुशलता को उद्यमशीलता से जोड़ना हमारे समाज के लिए जरूरी है।

भारत में पिछले 69 वर्षों में जनता को विकास की मुख्यधारा में लाने के प्रयास तो हुए मगर हालात इतने खराब थे कि हम अपने ही साथ स्वतंत्र हुए चीन तथा जापान से पीछे हो गए। हम सिर्फ विकासशील ही रहे। विकसित देशों में शामिल होने की इच्छा शक्ति हमारे भीतर पैदा ही नहीं हुई। अमेरिका जैसा देश हमारे लिए 'ड्रीम नेशन' ही बने रहे।

जो आदमी पूर्ण रूप से साक्षर है परन्तु सही और गलत का निर्णय करने में असमर्थ है तो ऐसे लोगों को शिक्षित कहना अतिशयोक्ति होगा। यदि जीवन के प्रति समझ नहीं है, तो आप शिक्षित नहीं है। एक किसान एक शिक्षक से ज्यादा शिक्षित है अगर वह अपने खेतों में नए प्रयोग करता है, उसका खेत ही लैब बन जाता है। स्कूल, कॉलेज, खेत, उद्योग, राजनीति, संसद, सरकार सबको जीवन की प्रयोगशाला में बदलना होगा। व्यक्ति-व्यक्ति की समझ का विकास करना होगा। फिर देखिए भारत 'विश्व गुरु' बनता है या नहीं!

वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक
रा.बा.उ.मा.विद्यालय, जावाल
(सिरोही)
मो. 9772981485

राष्ट्रीय खेल दिवस विशेष

हॉकी का जादूगर : मेजर ध्यानचन्द सिंह

❒ अजय पाल सिंह शेखावत

हॉ की यानि 'ध्यानचन्द।' हॉकी का नाम सुनते ही जेहन में ध्यानचन्द की छवि सहज उभर जाती है। फुटबाल में पेले और क्रिकेट में जो स्थान ब्रेडमेन का है, वही स्थान हॉकी में ध्यानचन्द का है। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय हॉकी मैचों में 400 से अधिक गोल किए हैं उनकी कप्तानी में भारतीय टीम लगातार 1928, 1932, 1936 में ओलम्पिक गोल्ड मैडल जीतने में कामयाब हुई। उन्हें 'हॉकी का जादूगर' कहा जाता है। सारा विश्व उनके नाम का कायल रहा है।

मेजर ध्यानचन्द सिंह का जन्म 29 अगस्त, 1905 को प्रयाग (अब इलाहाबाद) उत्तरप्रदेश में हुआ। 1922 में प्राथमिक शिक्षा के बाद सेना के पंजाब रेजीमेंट में बतौर सिपाही भर्ती हुए।

1927 में लंदन फॉकस्टोन फेस्टिवल में उन्होंने अंग्रेजी हॉकी टीम के खिलाफ 10 मैचों में 72 में से 36 गोल किए। 1928 में एम्सडैम, नीदरलैण्ड में समर ओलम्पिक में सेंटर फारवर्ड पर खेलते हुए उन्होंने तीन में से दो गोल दागे। भारत ने यह मैच 3-0 से जीतकर स्वर्ण पदक हासिल किया।

1932 में लॉस एंजेल्स समर ओलंपिक में तो खेल की पराकाष्ठा थी कि भारत ने अमेरिकी टीम को 24-1 से धूल चटाकर स्वर्ण पदक जीता। इस वर्ष ध्यानचन्द ने 338 में से 133 गोल लगाए।

1936 में बर्लिन समर ओलंपिक में फाइनल मैच के पहले हुए एक दोस्ताना मैच में जर्मनी हो हराया। पहले हाफ तक 1-0 से आगे चल रही भारतीय टीम ने दूसरे हाफ में सात गोल दाग दिए। मैच देख रहे हिटलर अपनी टीम की शर्मनाक हार से बौखलाकर बीच में ही मैदान छोड़कर चले गए। 1948 में 42 वर्षों तक खेलने के बाद ध्यानचन्द ने खेल से संन्यास ले लिया।

मेजर ध्यानचन्द ने हॉकी के जरिये देश का आत्मगौरव बढ़ाया है। भारतीय जनमानस में हॉकी के पर्याय के रूप में आज भी उनका नाम

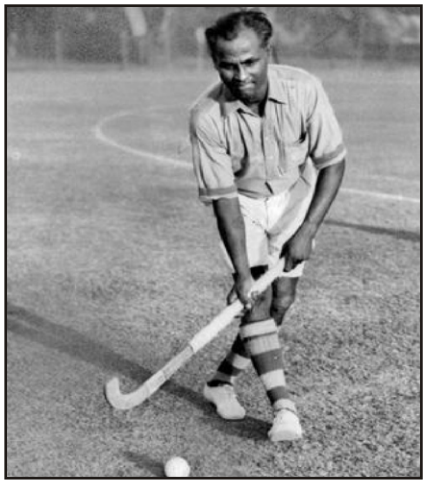

रचा-बसा है। भारत सरकार ने उनके सम्मान के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी है। उनका जन्म दिवस भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। दिल्ली का स्टेडियम उनके नाम पर 'ध्यानचन्द स्टेडियम' के नाम से प्रसिद्ध है। उनकी याद में सरकार ने ध्यानचन्द पुरस्कार रखा है और डाक टिकट भी जारी किया है।

भारत के अलावा विश्व के अनेक दिग्गजों ने भी ध्यानचन्द की प्रतिभा का लोहा माना है। क्रिकेट के महानायक सर डॉन ब्रेडमेन के एक संपादक ने ध्यानचंद की उत्तम खेल कला के बारे में एक टिप्पणी की है-''कलाई का घुमाव, आँखों देखी एक झलक, एक तेज मोड़ और फिर ध्यानचन्द का जोरदार गोल'। वियना में एक कलाकार ने अपनी पेंटिंग में ध्यानचन्द को आठ भुजाओं वाला बनाया। ध्यानचन्द के खेल से प्रभावित हिटलर ने उन्हें जर्मनी में बसने का न्यौता दिया। देशभक्ति से लबरेज ध्यानचन्द ने उनके इस प्रस्ताव को सविनम्र ठुकरा दिया।

युवा पीढ़ी के लिए ध्यानचन्द एक प्रेरणास्रोत हैं, ध्यानचन्द आज के हॉकी खिलाड़ियों के आदर्श हैं। ध्यानचन्द को 1956 में भारत के प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया था एवं उनके सम्मान में खेल जगत में ध्यानचन्द पुरस्कार दिया जाता है।

ध्यानचन्द पुरस्कार : ध्यानचन्द पुरस्कार खेलकूद में जीवनभर, आजीवन उपलब्धि के लिए 2002 में शुरू किया गया सर्वोच्च पुरस्कार है, हर साल ज्यादा से ज्यादा तीन खिलाड़ियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

ऐसे ही नहीं कहलाए हॉकी के जादूगर: किसी भी खिलाड़ी की महानता को नापने का सबसे बड़ा पैमाना उससे जुड़ी दंत कथाएँ होती है। इसमें ध्यानचन्द सदैव शीर्ष पर रहे-हॉलैण्ड चित्र में लोगों ने उनकी हॉकी स्टिक तुड़वाकर देखी कि कहीं उसमें चुंबक तो नहीं लगा।

जापान के लोगों को अंदेशा था कि उन्होंने अपनी स्टिक में गोंद लगा रखी है 1936 के बर्लिन ओलंपिक में उनके साथ खेले और बाद में पाकिस्तान के कप्तान बने आई.एन.एस. द्वारा वर्ल्ड हॉकी मैगजीन के एक अंक में लिखा था, ''ध्यानचन्द के पास कभी भी तेज गति नहीं थी बल्कि वो धीमा ही दौड़ते थे, लेकिन उनके पास गैप पहचानने की गजब क्षमता थी। लोग उनकी मजबूत कलाइयों और ड्रिब्लिंग के कायल थे लेकिन उनकी असली प्रतिभा उनके दिमाग में थी, वो उस ढंग से हॉकी के मैदान को देख सकते थे जैसे शतरंज का खिलाड़ी चैस बोर्ड को देखता है उनको बिना देखे ही पता होता था कि मैदान के किस हिस्से में उनकी टीम के खिलाड़ी और प्रतिद्वंद्वी मूव कर रहे है।''

राष्ट्रीय खेल दिवस पर इस लेख का मेरा उद्देश्य हॉकी के जादूगर ध्यानचन्द को श्रद्धांजलि देना है एवं युवा खिलाड़ियों के लिए एक संदेश है कि वे इस महान खिलाड़ी के जीवन से प्रेरणा लें एवं अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित कर सफलता प्राप्त करें।

कोई भी खेल आप खेलते हैं उस खेल की बारीकियों की जानकारी और उस खेल के प्रति सच्ची श्रद्धा एवं ध्यान केन्द्रण ही सफलता प्रदान कर सकती है।

उप प्रधानाचार्य
सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर
मो. 9828550552

आदेश-परिपत्र : अगस्त, 2017

1. मृत राज्य कर्मचारियों के आश्रितों की नियुक्ति के पश्चात ली जाने वाली टंकण परीक्षा, भाषा विभाग के स्थान पर जिला स्तर पर लिए जाने के संबंध में।
2. कक्षा-5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को स्कूल स्तर पर जाति प्रमाण पत्र दिए जाने के निर्देश जारी।
3. सत्र 2017-18 की 62वीं जिला एवं राज्य स्तरीय मा. एवं उ.मा. (17 व 19 वर्ष आयु वर्ग) विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु प्रतियोगिता पंचांग एवं आवश्यक निर्देश।
4. सत्र 2017-18 में आयोज्य 35वीं सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता का पंचांग तथा आवश्यक निर्देश अनुपालनार्थ।
5. हितकारी निधि कल्याणकारी योजना में वर्ष 2016-17 के लिए वार्षिक अंशदान की राशि निर्धारित दर से प्राप्त कर भिजवाने बाबत।
6. समस्त राजकीय विद्यालयों में छात्र उपस्थिति रजिस्टर के संधारण में एकरूपता एवं पारदर्शिता के ध्येय से निर्देश।
7. अधीनस्थ संस्था प्रधानों को बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक कार्ययोजना बनाकर क्रियान्विति सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित करने बाबत।

1. मृत राज्य कर्मचारियों के आश्रितों की नियुक्ति के पश्चात ली जाने वाली टंकण परीक्षा, भाषा विभाग के स्थान पर जिला स्तर पर लिए जाने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-मा/साप्र/बी-2/4352/02/2017/317 दिनांकः 03.07.2017 ● समस्त उपनिदेशक (माध्यमिक) शिक्षा विभाग, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) प्रथम/द्वितीय ● विषय : मृत राज्य कर्मचारियों के आश्रितों की नियुक्ति के पश्चात ली जाने वाली टंकण परीक्षा, भाषा विभाग के स्थान पर जिला स्तर पर लिए जाने के संबंध में। ● प्रसंग : परिपत्र क्रमांक प.3(1)कार्मिक/क-2/2013 दिनांक 21.6.2017

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक परिपत्र की छायाप्रति संलग्न कर लेख है कि अपने एवं अपने अधीनस्थ कार्यालय के मृत राज्य कर्मचारियों के आश्रितों की नियुक्ति के पश्चात ली जाने वाली टंकण परीक्षा, भाषा विभाग के स्थान पर जिला स्तर पर लिए जाने के संबंध में जारी परिपत्र में दिए गए निर्देशों के अनुसार कार्यवाही करावें।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **(भवानी सिंह शेखावत)** अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर।

● राजस्थान सरकार कार्मिक (क-2) विभाग ● क्रमांकः प.3(1) कार्मिक/क-2/2013 जयपुर दिनांकः 21.06.2017 ● 1. समस्त अति. मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/शासन सचिव/ विशिष्ट शासन सचिव ● 2. समस्त विभागाध्यक्ष (सम्भागीय आयुक्त एवं जिला कलक्टर्स) सहित। ● परिपत्र ● विषयः मृत राज्य कर्मचारियों के आश्रितों की नियुक्ति के पश्चात ली जाने वाली टंकण परीक्षा, भाषा विभाग के स्थान पर जिला स्तर पर लिए जाने के संबंध में।

राजस्थान मृत सरकारी कर्मचारियों के आश्रितों को अनुकम्पात्मक नियुक्ति नियम, 1996 के नियम-9 के अन्तर्गत प्रक्रियात्मक अपेक्षा में तीन वर्ष के भीतर स्थायीकरण के लिए पात्र बनाने हेतु विहित प्रशिक्षण/ विभागीय परीक्षा/कम्प्यूटर पर टंकण परीक्षा (अंग्रेजी/हिन्दी) उत्तीर्ण करना अनिवार्य है। भाषा विभाग के परिपत्र दिनांक 03.07.2015 एवं कार्मिक विभाग के परिपत्र दिनांक 26.08.15 के द्वारा टंकण परीक्षा का आयोजन भाषा विभाग द्वारा केवल जयपुर में निम्नानुसार किया जा रहा है-

क्र.सं.	आवेदन प्राप्त होने की अवधि	माह, जिसमें परीक्षा आयोजित होगी
1.	01 अगस्त से 30 नवम्बर तक	जनवरी
2.	01 दिसम्बर से 31 मार्च तक	मई
3.	01 अप्रैल से 31 जुलाई	सितम्बर

अनुकम्पा नियुक्ति प्राप्त कर्मचारियों की असुविधा को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है कि उक्त टंकण परीक्षा केवल कम्प्यूटर पर ही जिला स्तर पर जिला कलक्टर द्वारा गठित परीक्षा आयोजन समिति द्वारा ली जाएगी। जिला स्तर पर परीक्षा आयोजन समिति का गठन निम्नानुसार किया जाएगा-

1. अतिरिक्त जिला कलक्टर -अध्यक्ष
2. एनालिस्ट कम प्रोग्रामर -सदस्य
3. उपखण्ड अधिकारी, जिला मुख्यालय -सदस्य

अतिरिक्त जिला कलक्टर की अध्यक्षता में गठित उपर्युक्त समिति द्वारा कम्प्यूटर पर टंकण परीक्षा लिए जाने हेतु एनआईसी या अन्य उचित एजेंसी का सहयोग प्राप्त कर सकेगी। परीक्षा के आयोजन की तिथि का निर्धारण भाषा विभाग द्वारा वर्तमान प्रक्रिया अनुसार ही तैयार किए जाएंगे। प्रश्न पत्र तैयार करना, उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच करना, परीक्षा परिणाम घोषित करने तथा उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र जारी करने का कार्य, संबंधित गठित समिति द्वारा किया जाएगा।

अतः अब आगामी परीक्षा हेतु कार्मिक अपना आवेदन, संबंधित जिला स्तर पर गठित समिति को प्रेषित करेंगे। समिति परीक्षा के आयोजन पर होने वाले व्यय हेतु कोष की व्यवस्था, आवेदन पत्र के साथ प्राप्त होने वाले शुल्क राशि से करेगी।

वर्तमान में भाषा एवं पुस्तकालय विभाग में प्राप्त कम्प्यूटर पर परीक्षा हेतु आवेदन पत्र तथा कार्मिक विभाग के परिपत्र क्रमांक पत्र 3(1)कार्मिक /क-2/2013 दिनांक 24.6.2016 के अनुसार टाइपराइटर मशीन पर अंतिम परीक्षा हेतु एक अवसर प्रदान किया गया था। उन सभी कार्मिकों की भी अब टंकण परीक्षा टाइपराइटर पर नहीं ली जाकर कम्प्यूटर पर ही ली जावेगी।

अतः समस्त नियुक्ति प्राधिकारियों एवं जिला कलक्टर्स को व्यादिष्ट किया जाता है कि उक्त दिशा-निर्देशों की पालना सुनिश्चित करें।

(भास्कर ए. सावन्त) शासन सचिव

2. कक्षा-5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को स्कूल स्तर पर जाति प्रमाण पत्र दिए जाने के निर्देश जारी।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● संशोधित परिपत्र ● अतिरिक्त मुख्य सचिव, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, जयपुर के परिपत्र क्रमांकः एफ-11/एससी, एसटी, ओबीसी, एसबीसी/ जा.प्र.प./सान्याअवि/12/पार्ट-3/7201 दिनांक : 21.02.2017 एवं कार्मिक लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय, भारत सरकार के पत्रांकः 36028/1/2014-संस्थापन दिनांक 06.05.2016 के अनुसरण में विभाग के समसंख्यक परिपत्र दिनांक : 07.03.2017 द्वारा राज्य के विद्यालयों में राज्य सरकार ने कक्षा-5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को स्कूल स्तर पर जाति प्रमाण पत्र दिए जाने के निर्देश जारी किए गए है।

अतिरिक्त मुख्य सचिव, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, जयपुर के संशोधित परिपत्र क्रमांक : एफ-11/एससी, एसटी, ओबीसी, एसबीसी/जा.प्र.प/सान्याअवि/12/पार्ट-3/31927 दिनांक : 05.06.2017 के अनुसरण में विभाग के समसंख्यक परिपत्र दिनांक : 07.03.2017 में यह और सम्मिलित किया जाता है किः-

''जाति प्रमाण पत्र यथा संभव कक्षा-5 में अध्ययनरत विद्यार्थी को जारी किया जाएगा। यदि अपरिहार्य कारणों से किसी विद्यार्थी का उक्त जाति प्रमाण पत्र कक्षा-5 में जारी नहीं हो पाता है तो ऐसे विद्यार्थियों को जाति प्रमाण पत्र कक्षा-8 में भी जारी किया जा सकेगा।''

अतः राज्य में संचालित समस्त राजकीय सरकारी/गैर सरकारी विद्यालयों के प्राचार्य/प्रधानाध्यापक उक्त आदेश के अनुसरण में उपर्युक्त वर्णित प्रक्रियान्तर्गत जाति प्रमाण पत्र जारी करवाएंगे।

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. सत्र 2017-18 की 62वीं जिला एवं राज्य स्तरीय मा. एवं उ.मा. (17 व 19 वर्ष आयु वर्ग) विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु प्रतियोगिता पंचांग एवं आवश्यक निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● कार्यालय आदेश ● सत्र 2017-18 की 62 वीं जिला, राज्य स्तरीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक (17 व 19 वर्ष आयु वर्ग) विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु प्रतियोगिता पंचांग आवश्यक निर्देशों सहित अनुपालनार्थ प्रसारित किया जाता है। समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को निर्देशित किया जाता है कि अपने अधीनस्थ विद्यालयों में पंचांग एवं निर्देशों को अविलम्ब प्रसारित करें।

विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु निम्नानुसार खेल समूह बनाए गए हैं:-

प्रथम समूह		
फुटबॉल	17,19 वर्ष	छात्र
जिम्नास्टिक	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
हैण्डबाल	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
हॉकी	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
जूडो	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
सॉफ्टबाल	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
तैराकी	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
वॉलीबाल	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
कुश्ती	17,19 वर्ष	छात्र
द्वितीय समूह		
तीरंदाजी (इण्डियन राउण्ड व फीटा राउण्ड)	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
बेडमिन्टन	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
बास्केटबॉल	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
क्रिकेट	17,19 वर्ष	छात्र
खो-खो	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
लॉन टेनिस	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
टेबल टेनिस	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
कबड्डी	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
तृतीय समूह		
एथलेटिक्स	17 एवं 19 वर्ष	छात्र - छात्रा

प्रतियोगिता निम्न तिथियों के अनुसार ही आयोजित की जावे:-

समूह	विद्यालय स्तर	जिला स्तर	राज्य स्तर
प्रथम समूह	22-08-2017 से पूर्व	01.09.17 से 05.09.17 के मध्य (अधिकतम चार दिन)	17.09.17 से 22.09.17 तक
द्वितीय समूह	22-08-2017 से पूर्व	05.09.17 से 09.09.17 के मध्य (अधिकतम चार दिन)	24.09.17 से 29.09.17 तक
तृतीय समूह	22-08-2017 से पूर्व	03.10.17 से 06.10.17 के मध्य	30.10.17 से 04.11.17 तक

निम्नांकित खेल की राष्ट्रीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता माह सितम्बर/अक्टूबर में आयोजित होने के कारण उक्त प्रथम विशेष प्रथम समूहों की प्रतियोगिता तिथियां निम्नानुसार होगी :-

	खेल का नाम	विद्यालय स्तर	जिला स्तर	राज्य स्तर
1	फुटबॉल 17 वर्ष छात्र	01.08.2017 से पूर्व	01.08.2017 से 04.08.2017 तक	21.08.2017 से 26-08-2017
2	टेबल टेनिस 17,19 वर्ष छात्र	01.08.2017 से पूर्व	01.08.2017 से 04.08.2017 तक	21.08.2017 से 26.08.2017
3	टेबल टेनिस 17,19 वर्ष छात्रा	01.08.2017 से पूर्व	01.08.2017 से 04.08.2017 तक	21.08.2017 से 26.08.2017
4	खो खो 17,19 वर्ष छात्र	01.08.2017 से पूर्व	01.08.2017 से 04.08.2017 तक	21.08.2017 से 26.08.2017
5	खो खो 17,19 वर्ष छात्रा	01.08.2017 से पूर्व	01.08.2017 से 04.08.2017 तक	21.08.2017 से 26.08.2017

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियां कार्यक्रम विद्यालय/क्षेत्रीय/जिला स्तर तक का आयोजन विभागीय खेलकूद नियमावली एवं मार्गदर्शिका 2005 के अनुसार पूर्ववत जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं से पूर्व आयोजित करवाएं। दिनांक 29 अगस्त 2017 मेजर ध्यानचंद जयन्ती को खेल दिवस के रूप में विद्यालय स्तर पर विविध खेलों के आयोजन किए जावें।

सत्र 2017-18 की 62वीं राज्य स्तरीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक 17 वर्ष एवं 19 वर्ष आयुवर्ग विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिता आयोजक विद्यालयों के नाम व स्थान परिशिष्ट 1 व 2 पर संलग्न हैं।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2008-2009 में खेलकूद प्रतियोगिताओं के नियमों में परिवर्तन/परिवर्द्धन के संबंध में विस्तृत आदेश, क्रमांक: शिविरा-माध्य/खेलकूद/निजी/35427/05-06/108 दिनांक 04-07-08 के द्वारा पूर्व में प्रसारित किए जा चुके हैं, यथावत रहेंगे। सत्र 2017-18 की प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन हेतु निम्नांकित निर्देश प्रसारित किए जाते हैं :-

01. सभी अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि निर्धारित तिथियों के मध्य टीमों की संख्या के आधार पर न्यूनतम दिनों का कार्यक्रम तय कर जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं को आयोजित करें परन्तु क्षेत्रीय प्रतियोगिता आवश्यकतानुसार विद्यालयी स्तर की प्रतियोगिता के पश्चात एवं जिला स्तरीय प्रतियोगिता से पूर्व आयोजित करावें। राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएँ निर्धारित तिथियों एवं स्थानों पर निर्धारित विद्यालयों द्वारा ही आयोजित की जाएगी। तिथियों एवं प्रतियोगिताओं के स्थलों में कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा।
02. सत्र 2017-18 में सभी स्तर की प्रतियोगिताओं में संभागित्व के लिए खिलाड़ियों की जन्म तिथि निम्नानुसार होगी:-

(1) 19 वर्ष आयुवर्ग-छात्र-छात्रा के लिए 01-01-1999 या उसके पश्चात एवं कक्षा 6 से 12 तक नियमित अध्ययनरत।

(2) 17 वर्ष आयुवर्ग-छात्र-छात्रा के लिए 01-01-2001 या उसके पश्चात एवं कक्षा 6 से 10 तक नियमित अध्ययनरत।

03. पूर्व की भांति राज्य के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विधार्थी ही इन प्रतियोगिताओं हेतु पात्र होंगे ।
04. शिक्षा विभागीय सभी खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु खिलाड़ी की पात्रता प्रवेश तिथि सभी कक्षाओं के लिए वास्तविक प्रवेश तिथि मान्य होगी।
05. प्रतियोगिता आयोजन के कार्यक्रम को निर्धारित करने (ड्राज डालने) की सुविधा हेतु सत्र 2016-17 में राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता के प्रथम आठ स्थानों के परिणाम परिशिष्ट-3 से 6 पर संलग्न किए जा रहे हैं।
06. सभी स्तर की विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन के समय प्रतियोगिता के सचांलन हेतु निदेशालय के आदेश क्रमांक-शिविरा/खेलकूद-3/ 35101/04-05 दिनांक 20 अगस्त 2005 के अनुसार ही प्रतिनियुक्तियाँ की जाएं। यथा संभव स्थानीय कार्मिकों/अध्यापकों की सेवाएँ ली जाएं।
07. सत्र 2017-18 की छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन शिक्षा विभागीय खेलकूद नियमावली एवं मार्गदर्शिका 2005 व उसके पश्चात समय-समय पर नियमों में हुए संशोधन एवं प्रदत् निर्देशों के अनुरूप ही किया जावे तथा खेलों के नियम संबंधित खेल संघों के जो वर्तमान में संशोधित रूप में लागू हैं, के अनुरूप ही प्रतियोगिताओं को आयोजित किया जावे, परन्तु विभागीय आदेशों/नियमों को ध्यान में रखते हुए अनुपालना हो।
08. विशिष्ट विद्यालय जैसे सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर, सत्रपर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र, शिक्षा विभागीय खेल छात्रावास के विद्यालय, संस्कृत शिक्षा निदेशालय के अधीनस्थ अध्ययनरत खिलाड़ियों का दल, राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद, जयपुर द्वारा संचालित खेल विद्यालय/छात्रावास/अकादमी के दल पूर्व की भाँति सीधे ही राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता में भाग ले सकेंगे।
09. राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद, जयपुर द्वारा संचालित खेल विद्यालय/छात्रावास/अकादमी में प्रशिक्षणरत/अध्ययनरत खिलाड़ियों की सूची मय पूर्ण विवरण दिनांक 05-08-2017 तक आवश्यक रूप से वाहक स्तर पर इस कार्यालय को भिजवावें (खेलवार छात्र सूची निर्धारित प्रारूप में सम्बन्धित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को 03 अगस्त 2017 तक प्रस्तुत की जावे जिससे जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) स्तर पर पूर्ण छानबीन पश्चात् प्रमाणित करते हुए उक्त सूचियां वाहक स्तर पर इस कार्यालय को दिनांक: 05.08.2017 तक भिजवाई जाएगी अन्यथा इन्हें सम्बद्ध खेल की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु ड्राज़ में सम्मिलित नहीं किया जा सकेगा। जिसका सम्पूर्ण दायित्व सचिव/अध्यक्ष राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद, जयपुर एंव संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) का होगा।
10. उक्त विशिष्ट विद्यालयों का दल पूर्ण नहीं होता है तो इन विशिष्ट विद्यालयों के खिलाड़ी एवं अन्य किसी विद्यालय का पूर्व में राष्ट्रीय विद्यालयी प्रतियोगिता में भाग ले चुका श्रेष्ठ खिलाड़ी किसी विशेष कारण से जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सका है तो राज्य स्तरीय चयन समिति के समक्ष उस खिलाड़ी का उक्त सत्र में प्रतियोगिता के समय अपने विद्यालय के संस्था प्रधान का नियमित

विद्यार्थी होने का पत्र मय योग्यता प्रमाण पत्र एंव राष्ट्रीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता में संभागित्व प्रमाण पत्र **(केवल पूर्व राष्ट्रीय विद्यालयी खिलाड़ी हेतु)** की प्रमाणित छाया प्रति सहित खिलाड़ी स्वयं लेकर उपस्थित होता है तो चयन समिति द्वारा उसका परीक्षण किया जाकर चयन होने की स्थिति में निर्धारित संख्या में ही पूर्व राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर की राज्य स्तर पर तैयार की जाने वाली चयन सूची में सम्मिलित किया जावेगा। ऐसे खिलाड़ी राज्य स्तरीय प्रतियोगिता स्थल पर चयन परीक्षण हेतु प्रतियोगिता समाप्ति से तीन दिन पूर्व प्रात: 11.00 बजे तक प्रतियोगिता आयोजक संस्था प्रधान को उपस्थिति देवें। छात्रा खिलाड़ी महिला प्रभारी के साथ उपस्थिति देवें।

11. सभी सत्रपर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र एवं शिक्षा विभागीय खेल छात्रावासों के संस्था प्रधानों को निर्देशित किया जाता है कि सत्र 2017-18 की राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में खेल विशेष हेतु प्रशिक्षण योजनान्तर्गत चयनित खिलाड़ियों में से ही अपने दल का गठन करें। विद्यालय के अचयनित खिलाड़ियों को सत्रपर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र/खेल छात्रावास के दल में सम्मिलित नहीं किया जावे। शिक्षा विभाग का विशिष्ट विद्यालय सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर के अन्तर्गत प्रवेश लिए खिलाड़ी संबंधित खेल में सीधे ही राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेंगे, एथलेटिक्स के छात्र अन्य खेलों में भी भाग ले सकते हैं, अन्य खेलों के छात्र एथलेटिक्स में भी भाग ले सकते हैं। इस हेतु विभाग द्वारा राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने पर ही राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेंगे। सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर के डे-स्कॉलर विद्यार्थियों का अलग से दल गठन कर अन्य सामान्य विद्यालयों के छात्र दलों की तरह जिला स्तरीय प्रतियोगिता में दल भिजवाया जा सकता है । डे-स्कॉलर को सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर के छात्रावासी खिलाड़ियों के चयनित दल में शामिल नहीं किया जावे ।
12. सत्र 2003-04 से राज्य सरकार के पत्र क्रमांक प.16( )शिक्षा-6/2002 दिनांक 07.01.2003 की अनुपालना में वर्तमान प्रतियोगिता शुल्क के नियमान्तर्गत संस्कृत शिक्षा के जिले के सभी विद्यालयों से कुल छात्र-छात्रा संख्या के अनुसार सामान्य वर्ग से 5/- एवं आरक्षित वर्ग से 2/- प्रति छात्र-छात्रा की दर से एकत्रित राशि का 50% (प्रतिशत) राशि राज्य के समस्त संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) नॉडल अधिकारी को प्रतियोगिताओं के आयोजन से पूर्व जमा करवाने की शर्त पर संस्कृत शिक्षा के खिलाड़ियों को 19 वर्ष एंव 17 वर्ष आयुवर्ग के छात्र वर्ग के निम्न खेलों :- वॉलीबाल, फुटबाल, कबड्डी, खो-खो, बेडमिंटन व कुश्ती (शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित वजनवार) में एवं एथेलेटिक्स 19 वर्ष एंव 17 वर्ष छात्र वर्ग के राज्य स्तर पर होने वाले इवेन्ट्स में निदेशालय संस्कृत शिक्षा, राजस्थान को भी विशिष्ट विद्यालयों की भांति पृथक इकाई मानते हुए राज्य स्तर पर सीधे भाग लेने की स्वीकृति शिक्षा विभागीय नियमान्तर्गत प्रदान की गई है । निदेशालय संस्कृत शिक्षा राजस्थान के 19 वर्ष एंव 17 वर्ष छात्र खिलाड़ियों द्वारा उक्त खेलों में राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता में पृथक इकाई के रूप में भाग लेने पर उसकी सूचना आयोजक विद्यालयों के संस्था प्रधान को प्रतियोगिता से 15 दिन पूर्व दी जाएगी । राष्ट्रीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगितार्थ चयन समिति द्वारा शिक्षा विभाग की निर्धारित प्रक्रियानुसार उन्हें चयन प्रक्रिया में शामिल किया जाएगा। यदि संस्कृत शिक्षा के खिलाड़ी का चयन राष्ट्रीय पूर्व प्रशिक्षण शिविर हेतु होता है तो उसका नाम चयन सूची में निर्धारित संख्या में ही शामिल होगा।
13. टेबल टेनिस, बेडमिंटन एवं लॉन टेनिस में दलीय स्पर्धा के साथ-साथ व्यक्तिगत स्पर्धा का आयोजन भी करवाया जावे। 17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा के व्यक्तिगत स्पर्धा के आधार पर ही जिले के दल का गठन चयन विधि द्वारा किया जाएगा। दोनों वर्ग 17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा में अच्छे खिलाड़ियों को आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करने हेतु टेबल टेनिस, बैडमिंटन व लॉन टेनिस की दलीय स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल में पहुँचने वाले दलों के दो खिलाड़ी एवं सेमी फाइनल में पहुँचने वाले दलों के 5 खिलाड़ी व्यक्तिगत स्पर्धा में भाग लेंगे। अन्य दलों से पूर्व की भाँति 01 ही खिलाड़ी व्यक्तिगत स्पर्धा में भाग ले सकेगा। व्यक्तिगत स्पर्धा हेतु ड्राज़ डालते समय अच्छे खिलाड़ी को सीडिंग दी जावे। इनकी ड्राज़ दलीय स्पर्धा में सेमी फाइनल में पहुंचने वाले दलों के निर्धारण होने के बाद डाली जाएं। क्वार्टर फाइनल में पहुँचने वाले दलों के 2 खिलाड़ियों एवं सेमीफाइनल में पहुंचने वाले दलों के 05 खिलाड़ियों के नाम व्यक्तिगत क्रमानुसार प्रभारी से लिखित में लिए जावें। उसके बाद सीडिंग देकर ड्राज़ डाली जावे। ड्राज़ डालते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि सेमीफाइनल में पहुँचने वाले दलों के प्रथम वरीयता वाले खिलाड़ियों का सेमीफाइनल से पहले मैच न हो सके । टेनिस प्रतियोगिता के क्वार्टर फाइनल से पूर्व के मैचों में बेस्ट ऑफ 13 गेम, क्वार्टर फाइनल व सेमीफाइनल में बेस्ट ऑफ 17 गेम तथा फाइनल में बेस्ट ऑफ 3 सैट द्वारा निर्णय किया जाए। (जनवरी 2015 से आई.टी.टी.एफ, टी.टी.एफ.आई. व एस.जी.एफ.आई द्वारा टेबल टेनिस बॉल का नाप 40+mm प्लास्टिक मेड वाइट कलर कर दिया गया है। जिसकी तदानुसार पालना सुनिश्चित हो।)
14. खिलाड़ी संख्या जो जिला स्तर पर निर्धारित है वही संख्या उनके लिए राज्य स्तरीय तथा राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता में लागू होगी। सुविधा की दृष्टि से सभी स्तरों पर संभागी खिलाड़ियों की संख्या सत्र 2017-18 में निम्न प्रकार से होगी :-

खेल का नाम	उमावि स्तर (19 वर्ष छात्र-छात्रा)		मावि स्तर (17 वर्ष छात्र-छात्रा)	
	जिला स्तर	राज्य/राष्ट्रीय स्तर	जिला स्तर	राज्य/राष्ट्रीय स्तर
तैराकी	प्रत्येक इवेन्ट में दो	प्रत्येक इवेन्ट में दो	प्रत्येक इवेन्ट में दो	प्रत्येक इवेन्ट में दो
वॉलीबाल	12	12	12	12
हैण्डबॉल	16	16	16	16

हॉकी	18	18	18	18
सॉफ्टबाल	16	16	16	16
फुटबॉल (छात्र)	18	18	18	18
जूडो	वजनवार जूडो का-1	वजनवार जूडो का-1	वजनवार जूडो का-1	वजनवार जूडो का-1
कुश्ती	वजनवार पहलवान-1	वजनवार पहलवान-1	वजनवार पहलवान-1	वजनवार पहलवान-1
जिम्नास्टिक	07	07	07	07
बास्केटबॉल	12	12	12	12
क्रिकेट (छात्र)	16	16	16	16
बेडमिंटन	05	05	05	05
टेबल टेनिस	05	05	05	05
कबड्डी	12	12	12	12
खो-खो	12	12	12	12
लॉन टेनिस	05	05	05	05
तीरंदाजी **(इण्डियन राउण्ड)**	04	04	04	04
तीरंदाजी **(फीटा राउण्ड)**	04	04	04	04
एथलेटिक्स	प्रत्येक इवेन्ट में दो	प्रत्येक इवेन्ट में दो	प्रत्येक इवेन्ट में दो	प्रत्येक इवेन्ट में दो

नोट-: एथलेटिक्स एवं तैराकी में प्रत्येक रिले में खिलाड़ियों की संख्या चार होगी।

15. एथलेटिक्स व तैराकी 19 व 17 वर्ष आयुवर्ग की छात्र-छात्राओं द्वारा व्यक्तिगत स्पर्धा में विभाग द्वारा निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने वाले प्रथम व द्वितीय, रिले में समय के आधार पर श्रेष्ठ चार, कुश्ती व जूडो के प्रत्येक भार में केवल प्रथम आने वाला, तीरंदाजी (इण्डियन व फीटा राउण्ड) में कुल अंकों के 30 प्रतिशत अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त कर मानदण्ड पूर्ण करने वाले खिलाड़ी व जिम्नास्टिक में कुल अंकों के 40 प्रतिशत अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त कर मानदण्ड पूर्ण करने वाले खिलाड़ी वरीयतानुसार निर्धारित संख्या में राज्य स्तर पर भाग लेंगे। निर्धारित मानदंड पूर्ण नहीं करने वाले खिलाड़ियों को उक्त खेलों की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में नहीं भिजवाया जावे। यह सुनिश्चित करने का दायित्व संबंधित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-नोडल अधिकारी), शिविराधिपति, टीम प्रभारी एवं प्रशिक्षक का होगा। जिम्नास्टिक की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में कुल 40 प्रतिशत अंक प्राप्त कर निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने वाले खिलाड़ी को ही मेरिट/भाग लेने का प्रमाण पत्र देय होगा। तीरंदाजी (इण्डियन व फीटा राउण्ड) की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में कुल 30 प्रतिशत अंक प्राप्त कर निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने वाले खिलाड़ी को ही भाग लेने का प्रमाण पत्र देय होगा लेकिन मेरिट प्रमाण पत्र के लिए न्यूनतम 40 प्रतिशत अंकों की बाध्यता यथावत रहेगी। दलीय स्पर्धाओं में भी दल द्वारा निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने पर दल के सभी सदस्यों को स्मरण/मेरिट प्रमाण पत्र दिए जाएंगे। राज्य स्तर पर निर्धारित मानदण्ड पूर्ण नहीं करने वाले खिलाड़ियों को भाग लेने/मेरिट प्रमाण पत्र नहीं दिए जावें। आदेश की अवहेलना करने वाले अधिकारी/कार्मिक के विरुद्ध खेलकूद प्रतियोगिता नियमावली, 2005 के बिन्दु संख्या 10.2.6 के अनुसार कार्यवाही की जाएगी।

16. खिलाड़ी, शारीरिक शिक्षक एवं संस्था प्रधान पात्रता/योग्यता प्रमाण-पत्र का भली-भाँति मिलान करें। संस्था प्रधान छात्र की जन्मतिथि, नाम, पिता का नाम, प्रवेशांक (स्कॉलर) रजिस्टर से मिलान करने के पश्चात छात्र-छात्रा के पात्रता/योग्यता प्रमाण पत्र को प्रमाणित करें। खेल में भाग लेने/मेरिट प्रमाण पत्र संस्था प्रधान द्वारा प्रमाणित योग्यता प्रमाण पत्र के आधार पर ही तैयार किए जाते हैं। अत: बाद में इन प्रमाण पत्रों में दर्शाई गई जन्मतिथि, नाम आदि में परिवर्तन किया जाना संभव नहीं होगा।

17. विद्यालय/जिलों की टीमों के साथ आने वाले शारीरिक शिक्षक/प्रशिक्षक को निर्णायक के रूप में नियुक्त किया जाता है तो सम्बन्धित शारीरिक शिक्षक निर्णायक के रूप में कार्य करेगा। आदेशों की अवहेलना करने वाले के विरुद्ध कार्यवाही की जावेगी।

18. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) जिला स्तरीय आयुवर्ग खेल प्रतियोगिताओं के समेकित परिणाम राज्य स्तरीय प्रतियोगिता से पूर्व निम्न प्रारूप में उपनिदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को निश्चित रूप से भिजवावें:-

क्र. सं.	खेल का नाम	प्रति. स्थल का नाम	प्रति. अवधि	प्रथम तीन स्थानों के परिणाम (विद्यालय के नाम सहित)	संभागी टीमों की संख्या	कुल खिलाड़ी संख्या	निर्णायकों की संख्या	अन्य कार्मिकों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9

गत वर्षो में यह देखने में आया है कि कतिपय जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा ही उक्त सूचना भेजी जाती है। अत: भविष्य में सभी जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा उक्त निर्धारित प्रपत्र में सूचना भिजवाना सुनिश्चित किया जाए।

19. खेलकूद प्रतियोगिता शुल्क गत सत्रों के अनुसार सभी विद्यालयों से निम्न दरों के अनुसार वसूला जाए:-

सामान्य वर्ग 05 रुपये प्रति छात्र-छात्रा

आरक्षित वर्ग (अनु.जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग) 02 रुपये प्रति छात्र-छात्रा

उक्त प्रतियोगिता शुल्क की कुल संग्रहित राशि में से 40 प्रतिशत राशि राष्ट्रीय प्रतियोगिता हेतु अपने अपने जिलों में आरक्षित रखें। उक्त राशि निदेशालय के आदेशानुसार ही उपयोग में ली जावेगी। शेष रही 60 प्रतिशत राशि का व्यय करने के संबंध में खेलकूद नियमावली 2005 में प्रदत्त निर्देशानुसार कार्यवाही सुनिश्चित की

जाएगी। संग्रहित की गई राशि की सूचना निर्धारित प्रपत्र में सत्र में दो बार दिनांक 30-09-2017 एवं 31-03-2018 तक सभी जिला शिक्षा अधिकारी (मा) अनिवार्यत: उप निदेशक (खेलकूद एवं शारीरिक, शिक्षा) माध्यमिक शिक्षा राज. बीकानेर को भिजवाएंगे। उक्त प्रतियोगिता शुल्क की राशि राजकीय राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त गैर सरकारी/निजी एवं अनुदान प्राप्त समस्त शिक्षण संस्थाओं द्वारा माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर तक के समस्त विद्यालयों को भुगतान करना अनिवार्य है, चाहे विद्यालय खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेता हो अथवा नहीं। प्रतियोगिता शुल्क का भुगतान नहीं करने वाले विद्यालयों पर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-नोडल) अपने स्तर पर नियमानुसार कार्यवाही करें।

20. प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित होने वाली जिला स्तरीय उच्च प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद छात्र-छात्रा प्रतियोगिता में यदि माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 6 से कक्षा 8 तक के छात्र-छात्रा खिलाड़ी भाग लेते हैं तो उक्त प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले खिलाड़ियों की संख्या के आधार पर 5 रुपये (पाँच रुपये) प्रति खिलाड़ी की दर से, जिसके अन्तर्गत सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग सम्मिलित हैं, के आधार पर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) द्वारा अपने जिले की समस्त विद्यालयों से ली गई प्रतियोगिता शुल्क की 60 प्रतिशत राशि में से जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक) को राशि जमा करवाएंगे। उक्त आदेश प्रारम्भिक शिक्षा राज., बीकानेर के पत्रांक शिविरा/प्रारं/खेकू/स्वाशि/7509/पंचाग/71 दिनांक: 27-8-01 के अनुसार इस कार्यालय के पत्रांक-: शिविरा/मा/खेलकूद-3/35101/वार्षिक पंचाग/2001-02/26 दिनांक 30-08-2001 से जारी किया जा चुका है ।

21. जिला एवं राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों के भाग लेने/मेरिट प्रमाण पत्र प्रतियोगिता स्थल पर खिलाड़ी को अनिवार्यत: वितरित किया जाए। संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी एवं उपनिदेशक इस ओर विशेष ध्यान देते हुए इसकी पालना सुनिश्चित करें। प्रमाण-पत्र खिलाड़ी के योग्यता प्रमाण-पत्र के फोटो से मिलान करने के पश्चात खिलाड़ी के प्रतिपर्ण पर हस्ताक्षर लेकर उपस्थित खिलाड़ी को ही दिया जाए। अनुपस्थित खिलाड़ी के प्रमाण-पत्र को अन्य किसी को नहीं दिया जावे। प्रमाण-पत्र पर क्रमांक छपवाने अनिवार्य हैं तथा प्रमाण-पत्र का प्रतिपर्ण गत सत्रों की भाँति छपवाया जाए एवं अभिलेख में सुरक्षित रखा जावे। मेरिट प्रमाण पत्र प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को ही दिया जावे। मेरिट प्रमाण-पत्र प्राप्त करने वाले खिलाड़ी को स्मरण प्रमाण-पत्र भी दिया जावे। व्यक्तिगत एवं दलीय स्पर्धा में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को भी मेरिट प्रमाण-पत्र दिया जावे। कुश्ती व जूडो में तृतीय स्थान का मेरिट प्रमाण-पत्र रेपीचार्ज पद्धति के आधार पर दो खिलाड़ियों को देय होगा।

22. तैराकी, कुश्ती, जूडो, जिम्नास्टिक, लॉनटेनिस एवं तीरंदाजी 19 वर्ष एवं 17 वर्ष आयुवर्ग की राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएँ खेलानुसार एक ही स्थान पर आयोजित होती हैं, जिसमें जिले के सभी आयु वर्ग के छात्र-छात्रा एक ही स्थान पर भाग लेते हैं। जिस जिले में दो जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) हैं, प्रतियोगिता स्थल पर दल के साथ जाने वाले दल नायक, प्रशिक्षक, शारीरिक शिक्षक के आदेश जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) नॉडल अधिकारी द्वारा प्रसारित किए जाएं। छात्रा दल के साथ महिला अधिकारी/प्रशिक्षक/शारीरिक शिक्षक/महिला प्रभारी को ही लगाया जावे। अपरिहार्य कारणों से महिला अधिकारी/प्रशिक्षक/शारीरिक शिक्षक के स्थान पर पुरुष अधिकारी/प्रशिक्षक/शारीरिक शिक्षक को लगाया जाता है तो प्रतियोगिता आयोजक द्वारा प्रतियोगिता स्थल पर पुरुष अधिकारी/प्रशिक्षक /शारीरिक शिक्षक आदि की एवं छात्रा खिलाड़ियों के आवास की व्यवस्था अलग-अलग स्थानों पर की जावे। यह ध्यान रखा जावे कि छात्रा टीम के साथ महिला प्रभारी अनिवार्य भेजी जाए। यह सुनिश्चित करना कि छात्राओं के साथ महिला प्रभारी भेजी गई है या नहीं, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) का उत्तरदायित्व होगा। जिला स्तरीय प्रतियोगिता स्थलों पर निर्णायक मंडल/चयन समिति में निर्धारित संख्यानुसार ही शारीरिक शिक्षकों को लगाया जाए। इस हेतु प्रतिनियुक्ति आदेश जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) के हस्ताक्षरों द्वारा ही जारी किए जाएं। जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में कार्यरत अधीनस्थ अधिकारी/उप जिला शिक्षा अधिकारी (शा.शि.) द्वारा प्रतिनियुक्ति आदेश अलग से प्रसारित नहीं किए जाएं।

23. S.G.F.I. (स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया) द्वारा कुश्ती, जूडो, कबड्डी, एवं एथेलेटिक्स प्रतियोगिता हेतु गत सत्र से वजन निर्धारण एवं इवेन्ट केटेगरी के नये मानदण्ड निर्धारित किए हैं, जिसकी प्रति आपको इस कार्यालय के पत्र दिनांक 14.08.2012 के द्वारा भेजी जा चुकी है। अत: जिला/राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं को इसी अनुरूप सम्पन्न करावें। निर्धारित मानदण्ड परिशिष्ट 9 पर संलग्न हैं।

24. एथलेटिक्स एवं तैराकी में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित स्पर्धा के अनुसार ही जिला/राज्य स्तर पर प्रतियोगिताओं में स्पर्धाएँ करवायें। इस हेतु निर्धारित स्पर्धा एवं इन स्पर्धाओं हेतु निर्धारित मानदण्ड परिशिष्ट:- 7 से 8 पर संलग्न है। (वेबसाइट पर)

25. निदेशालय पृथकीकरण के पश्चात जिन जिलों में दो जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) कार्यरत हैं उन जिलों सें राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में एक ही दल भाग ले सकेगा। जिला स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित करवाने हेतु जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) नॉडल अधिकारी होंगे।

26. जयपुर जिले से पूर्व की भाँति राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में खिलाड़ियों के दो दल भाग ले सकेंगे। छात्रा खिलाड़ियों का एक ही दल राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेगा। छात्रा खिलाड़ियों का जिला स्तरीय प्रतियोगिता हेतु जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) नॉडल अधिकारी होंगे।

27. चयन समिति द्वारा पूर्व राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर हेतु जो सूची बनाई जाती है वह प्रतियोगिता स्थल पर घोषित नहीं की जावे।
28. राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में अधिक आयु के खिलाड़ियों को खेलने से रोकने तथा निर्धारित आयु के खिलाड़ियों को खेल का पर्याप्त अवसर देने हेतु राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं के आरम्भ से एक दिन पूर्व आयोजकों द्वारा गठित अधिकृत मेडिकल बोर्ड द्वारा सभी सम्भागियों का आयु सम्बन्धी मेडिकल परीक्षण करवाया जाएगा। इस हेतु समस्त सम्भागियों को प्रतियोगिता आरम्भ से एक दिन पूर्व प्रात: 10.00 बजे तक प्रतियोगिता स्थल पर उपस्थिति देनी होगी। अन्यथा दल प्रतियोगिता से वँचित होंगे।
29. सभी खेलों में संबंधित खेल फेडरेशन के नवीनतम नियम मान्य होंगे परन्तु आयोजन की दृष्टि से टाई ब्रेक, समय, सैट आदि के सम्बन्ध में शिक्षा विभागीय नियम मान्य होंगे। लीग प्रणाली तथा लीग-कम-लीग अर्थात सुपर लीग प्रणाली से खेले जाने वाले सभी खेलों के मैचों में विजेता दल को 2 अंक व पराजित दल को 0 अंक एवं बराबर रहने वाले दलों को 1-1 अंक दिया जाएगा। विद्यालयी जिला/राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में लीग, लीग-कम-लीग अर्थात् सुपर लीग प्रणाली से खेले गए समस्त खेलों के मैचों में टाई पड़ जाने अर्थात् अंकों के आधार पर खेल परिणाम बराबर रह जाए तो टाई निम्नानुसार तोड़ी जाए :-

    मैच जब पहली लीग प्रणाली या लीग-कम-लीग प्रणाली पर खिलाए और दल बराबर रह जाते हैं तो प्राप्त गोल/स्कोर/सैट के औसत को आधार मान कर टाई तोड़ी जावे। गोल/स्कोर/सैट का तात्पर्य है ''जिस दल के पक्ष में जितने गोल/स्कोर/सैट हुए हैं उनमें से उसी दल के विपक्ष में हुए गोल/स्कोर/सैट का अन्तर निकाल कर टाई तोड़ी जाए। यदि इस पद्धति से निर्णय की स्थिति न बन पाए तो जिस दल के पक्ष में अधिक संख्या में गोल/स्कोर/सैट रहे, उसे ही विजेता घोषित कर दिया जाए परन्तु यह गणना प्रत्येक स्तर के क्रम में अर्थात् लीग के लिए अलग तथा लीग-कम-लीग (सुपरलीग) के लिए अलग-अलग लागू होगी दूसरे शब्दों में पहले लीग मैचेज के रहे परिणाम लीग-कम-लीग प्रणाली (सुपरलीग) में लागू नहीं होंगे। लीग या सुपर लीग प्रणाली से खेले जाने वाले मैचों में टीमों की संख्या दो (2) ही रह जाए या दो ही हो तो नॉक आउट प्रणाली की भांति उस मैच का खेल विशेष के अनुसार परिणाम निकाल कर आगामी मैच के लिए दल का निर्धारण किया जाएगा।
30. विद्यालयी/क्षेत्रीय/जिला/राज्य स्तरीय विद्यालयी कुश्ती/जूडो में जिस केटेगरी/वजन के लिए जिस खिलाड़ी का चयन किया गया है, चयन परीक्षण भी उसी केटेगरी/वजन के खिलाड़ियों का आयोजित कर वजनवार दल गठन किया जाए एवं उसी वजन/केटेगरी में ही वह खिलाड़ी क्षेत्रीय/जिला/राज्य/राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेगा।
31. एथलेटिक्स में प्रत्येक इवेन्ट् (दौड़ के अलावा) में खिलाड़ी को तीन-तीन अवसर दिए जाएंगे।
32. एथलेटिक्स एवं तैराकी की चैम्पियनशिप हेतु रिले में प्रथम, द्वितीय व तृतीय को क्रमश: 10-6-3 अंक तथा अन्य स्पर्धाओ हेतु 5-3-1 अंक दिए जाएंगे।
33. 17 व 19 वर्ष आयु वर्ग के छात्र-छात्रा टीम खेल व व्यक्तिगत खेलों में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता से पूर्व जिला स्तरीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाएं।
34. टीमों के अभिलेख, ध्वज आदि प्रतियोगिता स्थल पर ले जाने/जमा करवाने का उत्तरदायित्व संबंधित टीम/दल के दलाधिपति/दलनायक का होगा।

● संलग्न :- उपर्युक्तानुसार

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस. निदेशक,माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

● क्रमांक : शिविरा/मा/खेलकूद-3/35101/ वार्षिक पंचांग 2017-18/113-120 दिनांक 13-7-17

परिशिष्ट-1

62वीं राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद
(17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा) प्रतियोगिता वर्ष 2017-18 के आयोज्य विद्यालयों के नाम व स्थानों का विवरण

विशेष प्रथम समूह दिनांक 21.08.2017 से 26.08.2017 तक

क्र. सं.	खेल का नाम	वर्ग	प्रतियोगिता आयोजन स्थल
1	फुटबाल	17 वर्ष छात्र	नर्मदा देवी सिंघानिया इन्टरनेशनल स्कूल, पचेरी बड़ी, झुंझुनूं
2	खो-खो	17,19 वर्ष छात्र	ब्राइट स्टार इन्टरनेशनल उमावि, दूदू (जयपुर)
3	खो-खो	17,19 वर्ष छात्रा	किशनलाल जोशी राउमावि, डीग (भरतपुर)
4	टेबल टेनिस	17,19 वर्ष छात्र	रा पुरुषार्थी उमावि, चितौड़गढ़
5	टेबल टेनिस	17,19 वर्ष छात्रा	राआबाउमावि, भवानीमंडी (झालावाड़)

प्रथम समूह दिनांक 17-09-2017 से 22-09-2017 तक

1	फुटबॉल	19 वर्ष छात्र	राउमावि, कोटा रोड, बारां
2	जिम्नास्टिक	17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	राउमावि, बाकरा गाँव (जालोर)
3	हॉकी	17 वर्ष छात्र	राउमावि, प्रतापगढ़
4	हॉकी	19 वर्ष छात्र	रा बालकृष्ण उमावि, कांकरोली (राजसमन्द)
5	हॉकी	17 वर्ष छात्रा	राबाउमावि, सिरोही
6	हॉकी	19 वर्ष छात्रा	राबाउमावि, पचपदरा (बाड़मेर)
7	साफ्टबॉल	17,19 वर्ष छात्र	सूरज शिक्षण संस्थान उमावि, पाली
8	साफ्टबॉल	17,19 वर्ष छात्रा	राबामावि, बून्दी सिटी
9	तैराकी	17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	ग्रामोत्थान विद्यापीठ संस्थान, संगरिया (हनुमानगढ़)

10	कुश्ती	17,19 वर्ष छात्र	राउमावि, गुमानपुरा, कोटा
11	हैण्डबॉल	17,19 वर्ष छात्र	राउमावि, पीलीबंगा (हनुमानगढ़)
12	हैण्डबॉल	17,19 वर्ष छात्रा	से.ब.जा.राउमावि, रतनगढ़ (चूरू)
13	वॉलीबाल	17,19 वर्ष छात्र	राउमावि, रोलसाहबसर (सीकर)
14	वॉलीबाल	17,19 वर्ष छात्रा	राबाउमावि, सवाईमाधोपुर
15	जूडो	17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	राउमावि, केकड़ी (अजमेर)

● **(जीवन शंकर शर्मा)** उप निदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

परिशिष्ट-2

द्वितीय समूह दिनांक 24-09-2017 से 29-09-2017 तक

क्र. सं.	खेल का नाम	वर्ग	प्रतियोगिता आयोजन स्थल
1	तीरंदाजी	17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	रा चौपड़ा उमावि, गंगाशहर, बीकानेर
2	बेडमिन्टन	17,19 वर्ष छात्र	रामावि, पुलिस लाइन, जोधपुर
3	बेडमिन्टन	17,19 वर्ष छात्रा	रा रतनबहन बाउमावि, नागौर
4	बास्केटबाल	17,19 वर्ष छात्र	श्री ओसवाल जैन उमावि, अलवर
5	बास्केटबाल	17,19 वर्ष छात्रा	बी.आर.जे.डी.पब्लिक स्कूल, भौरूग्राम न्यांगल बड़ी-राजगढ़ (चूरू)
6	क्रिकेट	17 वर्ष छात्र	संगम स्कूल ऑफ एक्सीलेन्स, भीलवाड़ा
7	क्रिकेट	19 वर्ष छात्र	राउमावि, मनोहरपुर (जयपुर)
8	लॉन टेनिस	17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	डी.पी.एस, भूवाणा-प्रतापनगर, उदयपुर
9	कबड्डी	17,19 वर्ष छात्र	राउमावि, पावटा (जयपुर)
10	कबड्डी	17,19 वर्ष छात्रा	राबामावि, बाडा हैदरशाह (धौलपुर)

तृतीय समूह दिनांक 30.10.2017 से 04.11.2017 तक

क्र. सं.	खेल का नाम	वर्ग	प्रतियोगिता आयोजन स्थल
1	एथलेटिक्स	17,19 वर्ष छात्र	श्री गुरुनानक खालसा उमावि, श्रीगंगानगर
2	एथलेटिक्स	17,19 वर्ष छात्रा	राबाउमावि, सांगानेर (जयपुर)

● **(जीवन शंकर शर्मा)** उप निदेशक(खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

(परिशिष्ट 3 से 9 विभागीय वेबसाइट education.rajasthan.gov.in /secondary पर देखे जा सकते हैं।)

4. सत्र 2017-18 में आयोज्य 35वीं सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता का पंचांग तथा आवश्यक निर्देश अनुपालनार्थ।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● कार्यालय आदेश ● सत्र 2017-18 में आयोज्य 35 वीं सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता का पंचांग आवश्यक निर्देशों सहित अनुपालनार्थ प्रसारित किया जाता है। समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारम्भिक) को निर्देशित किया जाता है कि अपने अधीनस्थ विद्यालयों में पंचांग एवं निर्देशों को अविलम्ब प्रसारित करें।

35 वीं सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता निम्नांकित तिथियों में आयोजित की जावे :-

जिला स्तर पर :- 22-08-2017 से 23-08-2017 तक

राज्य स्तर पर :- 27-08-2017 से 29-08-2017 तक

राज्य स्तर पर नेहरू हॉकी (15 वर्ष छात्र) प्रतियोगिता आयोजन स्थल :-

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मालपुरा (टोंक)

आवश्यक दिशा-निर्देश

1. जिला स्तर पर विजेता टीम ही राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता में भाग लेगी तथा जिला स्तर पर विजेता टीम के जिन खिलाड़ियों ने प्रतियोगिता सत्र भाग लिया है वे ही खिलाड़ी उसी सत्र की राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता में भाग लेंगे। उस प्रतियोगिता सत्र में खिलाड़ियों का परिवर्तन नहीं किया जाए।
2. सत्र 2017-18 की 35 वीं सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता हेतु छात्र की जन्म तिथि 01.11.2017 को 15 वर्ष या उससे कम होनी चाहिए अर्थात 01.11.2002 या उसके पश्चात जन्म लेने वाले खिलाड़ी नेहरु हॉकी प्रतियोगिता (15 वर्ष छात्र) में भाग ले सकेंगे। साथ ही अन्तिम रूप से चिकित्सकीय प्रमाण पत्र जिसमें कि छात्र की आयु 15 वर्ष या उससे कम का प्रमाण पत्र हो आवश्यक रूप से संलग्न करें, इसके अभाव में छात्र प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकेगा। जन्मतिथि में विवाद के क्रम में सम्बन्धित संस्था प्रधान जिम्मेदार होंगे। अत: विद्यालय अभिलेख से मिलान कर जन्म तिथि अंकों व शब्दों में योग्यता प्रमाण-पत्र में दर्ज की जाए। इस प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु खिलाड़ी की पात्रता प्रवेश तिथि सभी कक्षाओं के लिए वास्तविक प्रवेश तिथि मान्य होगी।
3. राज्य स्तरीय नेहरु हॉकी प्रतियोगिता (15 वर्ष छात्र) में भाग लेने हेतु जिला स्तरीय नेहरु हॉकी (15 वर्ष छात्र) प्रतियोगिता में कम से कम 4 टीमों का भाग लेना अनिवार्य होगा। इस न्यूनतम निर्धारित संख्या में टीमें जिला स्तर पर भाग नहीं लेती हैं तो ऐसी स्थिति में प्रतियोगिता सम्पन्न करवाकर संभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित कर दिए जाएं, परन्तु टीम उस प्रतियोगिता सत्र में नेहरु हॉकी प्रतियोगिता (15 वर्ष छात्र) राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकेगी। उक्त सूचना जिला स्तरीय प्रतियोगिता प्रारम्भ होने के समय खिलाड़ियों को आवश्यक रूप से दी जाए।

4. सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी जिला स्तरीय प्रतियोगिता में टीमों की संख्या 4 या 4 से कम होने पर लीग प्रणाली से एवं टीमों की संख्या 5 या 5 से अधिक होने पर नॉक-आउट प्रणाली से की जाए।
5. जिला स्तर पर लीग प्रणाली में टाई पड़ने पर परिणाम हेतु निम्नानुसार टाई तोड़ी जाए:-

1. लीग प्रणाली से खेले जाने वाले सभी खेलों के मैचों में विजेता दल को दो अंक व पराजित दल को शून्य अंक एवं बराबर रहने वाले दलों को एक-एक अंक दिया जाएगा।
2. जिला स्तर पर आवश्यकतानुसार मैच जब लीग प्रणाली से खिलाए और दल बराबर रह जाते हैं तो प्राप्त गोल औसत को आधार मान कर टाई तोड़ी जाए। गोल का तात्पर्य है जिस दल के पक्ष में जितने गोल हुए हैं उनमें से उसी दल के विपक्ष में हुए गोल का औसत निकाल कर टाई तोड़ी जाए। यदि इस पद्धति से निर्णय की स्थिति ना बन पाए तो जिस दल के पक्ष में अधिक संख्या में गोल रहें हो उसे ही विजेता घोषित कर दिया जाए।
6. राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता नॉक आउट प्रणाली से आयोजित की जाएगी। नॉक आउट प्रणाली में टाई पड़ने पर विभागीय हॉकी प्रतियोगिता के अनुरूप ही टाई ब्रेकर नियम लागू किया जाएगा।
7. राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता में दल हारते ही आयोजक हारे हुए दल को कार्यमुक्त कर देवें। सेमीफाइनल में हारने वाली टीमों के मध्य तीसरे एवं चौथे स्थान के लिए मैच करवाए जाएं तथा 4 स्थानों के परिणाम निकाले जाएं।
8. जिला स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता हेतु आयोजन स्थल का निर्धारण जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक), नॉडल अधिकारी द्वारा किया जाएगा।
9. शिक्षा विभागीय अन्य विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता में जिले के दल राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेते हैं जिसकी व्यवस्था संबन्धित जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा की जाती है। उसी व्यवस्था/प्रक्रिया अनुसार ही जिले के दल को नेहरु हॉकी प्रतियोगिता (15 वर्ष छात्र) प्रतियोगिता के लिए भेजा जाए। खिलाड़ियों का दैनिक भत्ता, अनुसांगिक प्रभार, यात्रा व्यय (रियायती दर) आदि समस्त व्यय अन्य विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं की भांति नियमानुसार छात्र कोष से वहन किए जाएंगे। अलग से कोई बजट आवंटित नहीं किया जाएगा।
10. जिला स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता आयोजन पर होने वाले व्यय अन्य विभागीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं की भांति जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) के पास उपलब्ध खेलकूद की अनारक्षित राशि 60 प्रतिशत राशि में से नियमानुसार कर सकेंगे।
11. शिक्षा विभाग के विशेष विद्यालय जैसे सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर एवं सत्रपर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र विद्यालय में प्रवेश लिए खिलाड़ी दल यदि एक ही विद्यालय से पूर्ण बनता है तो सीधे ही राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता में भाग लेंगे।
12. जिला स्तर पर विजेता विद्यालय की सूचना व भाग लेने वाले खिलाड़ियों की सूची परिणाम प्राप्त होते ही विजेता विद्यालय के संस्था प्रधान द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक के माध्यम से राज्य स्तरीय नेहरु हॉकी प्रतियोगिता आयोजक संस्था प्रधान को समय पर भिजवाते हुए राज्य स्तर पर भाग लेने की सूचना भी भिजवाएं।
13. जिला स्तर पर विजेता टीम मय आवश्यक अभिलेखों के दिनांक **26.08.2017 की प्रात: 10:00 बजे** तक राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता आयोजक **प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि, मालपुरा (टोंक)** को अपनी उपस्थिति देंवे।
14. अन्य विभागीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं की भांति नेहरू हॉकी प्रतियोगिता का भी समस्त अभिलेख विद्यालय में तैयार किया जाए एवं सुरक्षित रखें।
15. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) अपने जिले का कार्यक्रम तैयार कर उक्त प्रतियोगितार्थ जिला स्तर पर उच्च प्राथमिक विद्यालयों की टीमों को शामिल करने हेतु आदेश की प्रति अपने जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक) व ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी को भी पर्याप्त समय पूर्व भिजवाए।
16. 34 वीं राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरु हॉकी प्रतियोगिता 2015-16 के प्रथम तीन स्थान के परिणाम इस प्रकार हैं :- 1. अलवर 2. श्रीगंगानगर 3. सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर
17. सब जूनियर नेहरू हॉकी (15 वर्ष छात्र) प्रतियोगिता हेतु जिला एवं राज्य स्तर पर प्रत्येक दल में खिलाड़ियों की संख्या 16 होगी।

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

● क्रमांक : शिविरा/मा/खेलकूद-3/35102/ 2017-18/नेहरु हॉकी/8-10 दिनांक 13-7-17

5. हितकारी निधि कल्याणकारी योजना में वर्ष 2016-17 के लिए वार्षिक अंशदान की राशि निर्धारित दर से प्राप्त कर भिजवाने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/हिनि/28203/2016-17 दिनांकः 19.07.2017 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) ● विषय :हितकारी निधि कल्याणकारी योजना में वर्ष 2016-17 के लिए वार्षिक अंशदान की राशि निर्धारित दर से प्राप्त कर भिजवाने बाबत। ● संदर्भ : इस कार्यालय का समसंख्यक पत्रांक शिविरा/हिनि/28203/ 2016-17 दिनांक 07.04.2017

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के संदर्भ में लेख है कि राज्य सरकार के आदेश क्रमांक : स-26(ग)-2/95 दिनांक 02.08.2002 की पालना में हितकारी निधि का वर्ष 2016-17 तक का अंशदान भिजवाने हेतु इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 07.04.2017 के द्वारा लिखा गया लेकिन अंशदान की प्राप्ति बहुत कम मात्रा में प्राप्त हो रही है।

अतः निर्देशित किया जाता है आप अपने अधीनस्थ कार्यालयों/विद्यालयों के शिक्षकों/कार्मिकों से हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान आवश्यक रूप से एकत्र कर आहरण वितरण अधिकारी के माध्यम से बैंक ड्राफ्ट अध्यक्ष, हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम से बनवाकर शीघ्र भिजवाया जाना सुनिश्चित करावें, इस सम्बन्ध में अपने स्तर से आवश्यक निर्देश जारी कर प्रति इस कार्यालय को सूचनार्थ प्रेषित करें।

इसे सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करें।

● **(अन्नपूर्णा त्यागी)** उप निदेशक (प्रशासन) एवं सचिव हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

6. समस्त राजकीय विद्यालयों में छात्र उपस्थिति रजिस्टर के संधारण में एकरूपता एवं पारदर्शिता के ध्येय से निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/2017/142 दिनांकः 19.07.2017 ● परिपत्र।

छात्र उपस्थिति रजिस्टर विद्यार्थियों के विद्यालय में नियमित एवं सतत ठहराव की सुनिश्चितता हेतु एक सशक्त तथा प्रेरक उपक्रम एवं अभिलेख है। चूँकि उक्त रजिस्टर विद्यार्थी के विद्यालय में उपस्थिति का तथ्यात्मक प्रमाण है, अतः इसमें काँट-छाँट, उपरिलेखन कदापि नहीं होना चाहिए। विद्यालय परिवीक्षण के दौरान भिन्न-भिन्न विद्यालयों में छात्र उपस्थिति रजिस्टर के संधारण के भिन्न-भिन्न तरीके सामने आए हैं। एतदर्थ समस्त राजकीय विद्यालयों में छात्र उपस्थिति रजिस्टर के संधारण में एकरूपता एवं पारदर्शिता के ध्येय से अग्रांकित निर्देश तत्काल प्रभाव से जारी किए जाते हैंः-

1. प्रत्येक कक्षा एवं वर्ग के लिए अलग-अलग छात्र उपस्थिति रजिस्टर बनाए जाएंगे। सम्बन्धित कक्षाध्यापक इन्हें प्रतिदिन आधार पर अद्यतन करते हुए संधारित करेंगे।
2. छात्र उपस्थिति सत्रारम्भ से संधारित की जाएगी। कक्षा में गत सत्र में अनुत्तीर्ण रहे तथा पूरक परीक्षा योग्य छात्रों के नाम लिखने के पश्चात् पिछली कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों के नाम लिखे जाएं।
3. नवीन प्रवेशित विद्यार्थियों के नाम प्रारम्भ में प्रवेश तिथि के क्रम में निरन्तर रूप से लिखे जाएं तथा प्रवेश कार्य समाप्ति पश्चात् सुविधानुसार वर्णमाला क्रम में अनुक्रमांक आवंटित करते हुए व्यवस्थित किए जा सकते हैं।
4. प्रत्येक विद्यार्थी की उपस्थिति प्रतिदिन दो बार अंकित की जाएगी। मध्यान्तर के पूर्व का समय पूर्वाह्न एवं मध्यान्तर के बाद का समय अपराह्न सत्र कहा जाएगा। उपस्थिति का अंकन माह के प्रथम दिवस के कॉलम में (1,2), द्वितीय दिवस के कॉलम में (3, 4) तथा इसी प्रकार निरन्तर रूप से प्रत्येक माह में दिनांकवार विभाजित कॉलम में किया जाएगा। उक्तानुरूप प्रत्येक कार्य दिवस हेतु दो मीटिंगों के आधार पर प्रति मीटिंग में उपस्थिति हेतु एक अंक की वृद्धि निरन्तरता में की जाएगी।
5. उपस्थिति रजिस्टर को प्रतिदिन एवं प्रति मीटिंग संधारित करते हुए विद्यार्थी की अनुपस्थिति की स्थिति में उपस्थिति के कॉलम में लाल स्याही से 'ए' (A) तथा अवकाश को 'एल' (L) से अंकित किया जाएगा। उपस्थिति रजिस्टर में कॉलम किसी भी स्थिति में रिक्त नहीं छोड़े जाएँ तथा ना ही उपस्थिति के कॉलम में (-) लगाया जाए।
6. स्काउटिंग, एन.सी.सी., खेलकूद प्रतियोगिता में संस्था प्रधान की अनुज्ञा से बाहर गए छात्र-छात्रा की उपस्थिति 'डी' (D) से अंकित करें। इन्हें उपस्थित मानते हुए आगामी दिवस की उपस्थिति अंकित की जाए यथाः-

1		2		3		4		5		6	7		8		9		10	
1	2	3	4	L	L	5	6	A	A	रविवार	7	8	D	D	D	D	13	14

7. प्रति मीटिंग कुल उपस्थिति, अनुपस्थिति, अवकाश का योग लगाया जाए। इस प्रकार माह के अन्त में कुल उपस्थिति, अनुपस्थिति, अवकाश का योग लगाया जाए। प्रति मीटिंग औसत उपस्थिति तथा माह के अन्त में छात्रों की वास्तविक संख्या का गोश्वारा निकाल कर जाँचकर्ता व संस्था प्रधान के हस्ताक्षर कराए जाकर प्रमाणीकरण कराया जाए। माह के अन्त में माह की उपस्थिति का योग गत माह के उपस्थिति पृष्ठ व सम्बन्धित माह की कुल उपस्थिति का योग कर औसत उपस्थिति निकाल कर अंकित की जाए। प्रत्येक माह में छात्र के नाम के साथ प्रवेशांक (S.R. No.) अवश्य अंकित किया जाए।
8. रजिस्टर के प्रारंभिक पृष्ठों पर छात्र सम्बन्धी सूचनाएँ, शुल्क ब्यौरा मय रसीद संख्या व दिनांक, शुल्क में छूट का आधार अंकित किया जाए।
9. राष्ट्रीय पर्व '15 अगस्त' व '26 जनवरी' को उपस्थिति का अंकन किया जाए तथा रविवार व अन्य अवकाशों को सम्बन्धित दिनांक के स्तम्भ में लिखा जाए।
10. अभिभावकों को प्रत्येक परख तथा अर्द्धवार्षिक परीक्षा पश्चात् प्रगति पत्र के माध्यम से विद्यार्थी की उपस्थिति बाबत् सूचना दी जाए तथा प्रतिमाह न्यून उपस्थिति वाले विद्यार्थियों की सूचना सम्बन्धित कक्षाध्यापक द्वारा संस्था प्रधान के माध्यम से अभिभावकों को आवश्यक रूप से दी जाए।
11. प्रत्येक विद्यार्थी के परीक्षा परिणाम का अंकन उपस्थिति रजिस्टर में सत्र के अन्तिम माह वाले पृष्ठ पर आवश्यक रूप से किया जाए।
12. प्रत्येक माह के अन्त में उपर्युक्तानुसार संधारित छात्र उपस्थिति रजिस्टर में दर्ज उपस्थिति सूचना का अंकन तत्काल कक्षावार शाला दर्पण पोर्टल पर करवाया जाना सुनिश्चित किया जाए।

उपर्युक्त निर्देशों की पालना समस्त संस्था प्रधानों द्वारा तत्काल प्रभाव से आवश्यक रूप से की जाएगी। साथ ही भविष्य में विद्यालय में विद्यार्थी उपस्थिति से सम्बन्धित समस्त प्रकार के अभिलेखों जैसे मिड-डे-मील, समान परीक्षा इत्यादि में भौतिक सत्यापन उपर्युक्तानुरूप संधारित उपस्थिति रजिस्टरों एवं शाला दर्पण पोर्टल में दर्ज डाटा के माध्यम

से किया जाना सुनिश्चित करेंगे। समस्त परिवीक्षण अधिकारी विद्यालय निरीक्षण के दौरान छात्र उपस्थिति रजिस्टर संधारण में उपर्युक्त निर्देशों की पालना के सम्बन्ध में वस्तु स्थिति का अवलोकन करते हुए तत्सम्बन्धी टिप्पणी निरीक्षण रिपोर्ट में अंकित करेंगे।

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

7. अधीनस्थ संस्था प्रधानों को बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक कार्ययोजना बनाकर क्रियान्विति सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित करने बाबत।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/2017/133 दिनांक 13.07.2017 ● 1. समस्त मण्डल उप निदेशक माध्यमिक शिक्षा ● 2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय ● विषय : अधीनस्थ संस्था प्रधानों को बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक कार्ययोजना बनाकर क्रियान्विति सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित करने बाबत। प्रसंग : शासन का पत्रांक : प.01(05)प्राशि/आयो./2.17, जयपुर दिनांक 28.06.2017

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि विगत वर्षों में राज्य सरकार द्वारा शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु लागू की गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं एवं उठाए गए सकारात्मक कदमों के प्रतिफल में बोर्ड परीक्षा परिणाम में मात्रात्मक एवं गुणात्मक रूप से उत्तरोत्तर सुधार परिलक्षित हुआ है। राज्य में विगत वर्ष की तुलना में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं के परिणाम का तुलनात्मक विवरण निम्नानुसार है :-

कक्षा : 10 व 12 के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य के परीक्षा परिणाम का गत वर्ष से तुलनात्मक विवेचन :-

परीक्षा का नाम	वर्ग	वर्ष 2016-परीक्षा परिणाम प्रतिशत में	वर्ष 2017-परीक्षा परिणाम प्रतिशत में
माध्यमिक	-	75.89%	78.96%
उच्च माध्यमिक	कला	86.51%	89.05%
	विज्ञान	88.53%	90.36%
	वाणिज्य	88.61%	90.88%

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि माध्यमिक परीक्षा एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा के तीनों वर्गों (कला, वाणिज्य एवं विज्ञान) में बोर्ड परीक्षा परिणाम समग्र एवं पृथक्-पृथक् रूप से सुधरे हैं, परन्तु कुछ जिलों/विद्यालयों के परीक्षा परिणाम में सुधार अभी भी अपेक्षित है। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा-2017 में बोर्ड के औसत परिणाम से न्यून स्तर प्रदर्शित करने वाले जिलों का परीक्षा व वर्गवार पृथक्-पृथक् विवरण निम्नानुसार है :-

वर्ष : 2017 में बोर्ड के औसत परीक्षा परिणाम से न्यून परिणाम वाले जिलों का विवरण

बोर्ड के औसत परीक्षा परिणाम से न्यून परीक्षा परिणाम वाले जिले								
क्र. सं.	माध्यमिक परीक्षा 2017		उच्च माध्यमिक परीक्षा-2017					
			कला वर्ग		वाणिज्य वर्ग		विज्ञान वर्ग	
	जिला कोड	जिला	जिला कोड	जिला	जिला कोड	जिला	जिला कोड	जिला
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	101	अजमेर	101	अजमेर	101	अजमेर	105	भरतपुर
2	103	बाँसवाड़ा	102	अलवर	102	अलवर	106	भीलवाड़ा
3	106	भीलवाड़ा	103	बांसवाड़ा	106	भीलवाड़ा	108	बून्दी
4	108	बून्दी	107	बीकानेर	108	बून्दी	109	चित्तौड़गढ़
5	109	चित्तौड़गढ़	109	चित्तौड़गढ़	109	चित्तौड़गढ़	110	चूरू
6	111	डूंगरपुर	111	डूंगरपुर	110	चूरू	111	डूंगरपुर
7	116	झालावाड़	117	जोधपुर	111	डूंगरपुर	113	जैसलमेर
8	118	कोटा	118	कोटा	116	झालावाड़	118	कोटा
9	120	पाली	120	पाली	118	कोटा	120	पाली
10	121	सवाई माधोपुर	121	सवाई माधोपुर	120	पाली	121	सवाई माधोपुर
11	123	सिरोही	123	सिरोही	121	सवाई माधोपुर	123	सिरोही
12	126	उदयपुर	126	उदयपुर	122	सीकर	124	श्रीगंगानगर
13	127	धौलपुर	128	दौसा	124	श्रीगंगानगर	125	टोंक
14	128	दौसा	130	राजसमंद	126	उदयपुर	126	उदयपुर
15	129	बारां	132	करौली	127	धौलपुर	127	धौलपुर
16	130	राजसमंद			129	बारां	128	दौसा
17	132	करौली			130	राजसमंद	129	बारां
18	133	प्रतापगढ़			132	करौली	130	राजसमंद
19							132	करौली
20							133	प्रतापगढ़

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हैकि सात जिलों-डूंगरपुर, कोटा, पाली, सवाई माधोपुर, उदयपुर, राजसमन्द तथा करौली में माध्यमिक परीक्षा तथा उच्च माध्यमिक परीक्षा के तीनों वर्गों (कला, वाणिज्य तथा विज्ञान) में समग्र परीक्षा परिणाम बोर्ड के औसत परीक्षा परिणाम से न्यून है, जो कि चिन्ताजनक है। इसी प्रकार चित्तौड़गढ़ जिले में उच्च माध्यमिक परीक्षा के तीनों ही वर्गों का समग्र परीक्षा परिणाम बोर्ड के औसत परीक्षा परिणाम से न्यून रहा है। उक्त आठों जिलों की यह स्थिति उन जिलों में शिक्षण व्यवस्था की सोचनीय दशा जाहिर करती है। अतः सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारियों को आगामी वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में जिले के परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सम्पूर्ण जिले के लिए वृहद् कार्ययोजना माह जुलाई में ही निर्मित की जाकर तदनुसार सार्थक क्रियान्विति हेतु निर्देशित किया जाता है। साथ ही माध्यमिक परीक्षा एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा के

विभिन्न वर्गों (कला, वाणिज्य एवं विज्ञान) में बोर्ड के औसत परीक्षा परिणाम से न्यून स्तर प्रदर्शित करने वाले अन्य जिलों के जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा भी सम्बन्धित कक्षा/वर्गों हेतु परीक्षा परिणाम उन्नयन की वृहद् कार्ययोजना निर्मित की जाकर क्रियान्विति सुनिश्चित की जानी है।

उपर्युक्त वर्णित जिलों के लिए निर्मित की जाने वाली वृहद् कार्य योजना के साथ ही राज्य के शेष समस्त जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा भी शासन के निर्देशों के अनुरूप आगामी वर्ष के लिए बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक एवं परिणामोन्मुख कार्ययोजना निर्मित करते समय अग्रांकित बिन्दुओं की तरफ विशेष ध्यान दिया जाना सुनिश्चित किया जाए :-

1. निर्धारित मानदण्डों से न्यून परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों हेतु विशिष्ट कार्ययोजना :-

वर्ष 2017 की उच्च माध्यमिक परीक्षा में सम्पूर्ण राज्य में 351 विद्यालयों का परीक्षा परिणाम प्रतिशत निर्धारित मानदण्डों से न्यून रहा है, वहीं माध्यमिक परीक्षा में ऐसे विद्यालयों की कुल संख्या 1354 है। एतद्र्थ प्रदेश में 1705 (351+1354) राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक गुणवत्ता का स्तर न्यूनतम निर्धारित मानदण्डों से भी न्यून स्तर पर है, अतः समस्त सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा उक्त समस्त विद्यालयों हेतु इस सत्र में बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन की विशिष्ट कार्ययोजना निर्मित करवाई जाएगी, जिसकी क्रियान्विति/प्रगति समीक्षा जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के शैक्षिक प्रकोष्ठ द्वारा सत्रपर्यन्त की जानी सुनिश्चित की जाएगी। निर्धारित मानदण्डों से न्यून बोर्ड परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों का जिलेवार विवरण अग्रांकित सारिणी के अनुसार है :-

बोर्ड परीक्षा-2017 में निर्धारित मानदण्डों से न्यून परीक्षा परिणाम वाले राजकीय विद्यालयों का जिलेवार संख्यात्मक विवरण

क्र. सं.	जिला कोड	जिला	उच्च माध्यमिक परीक्षा में न्यून परिणाम वाले विद्यालयों की संख्या	माध्यमिक परीक्षा में न्यून परिणाम वाले विद्यालयों की संख्या	कुल विद्यालय
1	101	अजमेर	14	49	63
2	102	अलवर	10	64	74
3	103	बांसवाड़ा	25	63	88
4	129	बारां	8	36	44
5	104	बाड़मेर	7	40	47
6	105	भरतपुर	16	48	64
7	106	भीलवाड़ा	8	62	70
8	107	बीकानेर	5	22	27
9	108	बून्दी	5	33	38
10	109	चित्तौड़गढ़	18	65	83
11	110	चूरू	2	22	24
12	128	दौसा	12	32	44
13	127	धौलपुर	5	49	54
14	111	डूंगरपुर	23	34	57
15	124	श्रीगंगानगर	14	32	46
16	131	हनुमानगढ़	2	7	9
17	112	जयपुर	3	53	56
18	113	जैसलमेर	3	7	10
19	114	जालौर	4	24	28
20	116	झालावाड़	6	37	43
21	115	झुंझुनूं	3	18	21
22	117	जोधपुर	14	41	55
23	132	करौली	12	51	63
24	118	कोटा	5	40	45
25	119	नागौर	17	43	60
26	120	पाली	26	61	87
27	133	प्रतापगढ़	6	55	61
28	130	राजसमन्द	6	45	51
29	122	सीकर	11	18	29
30	123	सिरोही	6	23	29
31	121	सवाई माधोपुर	7	33	40
32	125	टोंक	5	20	25
33	126	उदयपुर	43	127	170
		महायोग	**351**	**1354**	**1705**

2. सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा अपने जिले में उपर्युक्त सारिणी में प्रदर्शित न्यून परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों को तत्काल चिह्नित करते हुए आगामी बोर्ड परीक्षा में उक्त विद्यालयों के परीक्षा परिणाम उन्नयन की सुनिश्चिता हेतु निम्नांकित निर्देशों की पालना करते हुए ठोस कार्ययोजना निर्मित कर क्रियान्विति सुनिश्चित की जाएगी:-

अ. न्यून परीक्षा परिणाम वाले समस्त विद्यालयों को चिह्नित कर सर्वप्रथम जिला शिक्षा अधिकारी स्वयं तथा कार्यालय में पदस्थापित अति. जिशिअ, शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी को सम्मिलित करते हुए उक्त विद्यालयों के परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु प्रत्येक विद्यालय के लिए एक प्रभारी अधिकारी नामित करेंगे। जिन जिलों में ऐसे विद्यालयों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है, वहाँ RMSA के जिला कार्यालय में पदस्थापित अधिकारियों को भी आवश्यकतानुसार उक्त कार्ययोजना में शामिल किया जा सकता है।

ब. सम्बन्धित विद्यालय हेतु नामित प्रभारी अधिकारी द्वारा आवंटित विद्यालयों को सत्रपर्यन्त परिवीक्षण योजना में प्राथमिकता से शामिल किया जाएगा तथा उक्त विद्यालयों के संस्था प्रधान एवं स्टाफ की बैठक आयोजित कर परीक्षा परिणाम उन्नयन की वृहद

कार्ययोजना तैयार की जाएगी। प्रभारी अधिकारी द्वारा न्यून परीक्षा परिणाम से सम्बन्धित कारणों का निदान किया जाकर उपलब्ध स्टाफ को आवश्यकतानुसार सम्बलन प्रदान करते हुए आगामी वर्ष में परीक्षा परिणाम की गुणवत्ता सुधार हेतु ठोस कार्यवाही सम्पादित की जाएगी। प्रभारी अधिकारी द्वारा परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु उक्त विद्यालयों का योजनानुरूप सत्रपर्यन्त सतत पर्यवेक्षण एवं समुचित प्रबोधन किया जाएगा।

स. जिशिअ कार्यालय के शैक्षिक प्रकोष्ठ द्वारा उपर्युक्त विद्यालयों की परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्ययोजना बाबत पत्रावली संधारित की जाएगी, जिसका अवलोकन एवं प्रगति समीक्षा स्वयं जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा सतत रूप से की जाएगी।

द. मण्डल उप निदेशक द्वारा मण्डल क्षेत्राधिकार के उपर्युक्त चिह्नित विद्यालयों का फील्ड पर्यवेक्षण के दौरान प्राथमिकता से निरीक्षण किया जाएगा तथा परीक्षा परिणाम उन्नयन के सम्बन्ध में जिला कार्यालय द्वारा सम्पादित कार्यवाही एवं प्रयासों की मासिक आधार पर समीक्षा की जाएगी। मण्डलाधिकारी द्वारा आगामी वर्ष आयोजित बोर्ड परीक्षा के परिणाम घोषणा उपरान्त क्षेत्राधिकार के समस्त जिला कार्यालयों के अधीन उपर्युक्त चिह्नित समस्त विद्यालयों के परीक्षा परिणाम की समीक्षा एवं तुलना गत वर्ष से करते हुए परिणाम उन्नयन हेतु किए गए प्रयासों के परिप्रेक्ष्य में विद्यालय स्टाफ एवं संस्था प्रधान के साथ ही नामित प्रभारी अधिकारी का उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाएगा।

3. पाठ्यक्रम की पूर्णता: –

मौजूदा सत्र के प्रारम्भ से ही प्रदेशभर की उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नव नियुक्ति द्वारा व्याख्याताओं के पदों को भरे जाने की कार्यवाही सम्पादित की जा चुकी है। डीपीसी चयनित प्रधानाचार्यों/प्रधानाध्यापकों, व्याख्याताओं एवं वरिष्ठ अध्यापकों के रिक्त पदों पर पदस्थापन तथा 6 (डी) की कार्यवाही द्वारा अध्यापक लेवल–प्रथम तथा द्वितीय के रिक्त पदों पर प्रारम्भिक शिक्षा से अध्यापकों के समायोजन पश्चात् अधिकांश रिक्त पद भर जाएंगे। उक्तानुरुप उत्साहजनक शैक्षिक परिदृश्य में समस्त संस्थाप्रधानों से यह अपेक्षा की जाती है कि विद्यालय में अनुकूल शैक्षिक पर्यावरण विकसित करते हुए बोर्ड कक्षाओं का पाठ्यक्रम निर्धारित समयावधि (अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं से पूर्व) में पूर्ण करवाए जाने की कार्यवाही प्राथमिकता से सम्पादित करावें। इस वर्ष बोर्ड कक्षाओं (कक्षा–10 तथा 12) हेतु नवीन निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर द्वारा किया जा चुका है, जिन्हें समस्त पात्र विद्यार्थियों को समय पर निःशुल्क वितरित करवाए जाने की कार्यवाही समस्त संस्था प्रधानों द्वारा ब्लॉक नोडल केन्द्र प्रभारी एवं जिशिअ कार्यालय के सहयोग एवं समन्वय से करवाई जानी सुनिश्चित की जाए।

4. अधिगम स्तर के अनुरूप कठिनाई निवारण : –

विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की सुनिश्चितता हेतु प्रत्येक कक्षा में अपेक्षाकृत कठिन विषयों में विद्यार्थियों का अधिगम स्तर के अनुरूप चिह्नीकरण कर अतिरिक्त कक्षाओं के माध्यम से उपचारात्मक शिक्षण की सार्थक व्यवस्था करवाई जानी सुनिश्चित की जाए, जिससे कि विद्यार्थियों की अवबोधन (Understanding) क्षमता का विकास कर उनके अधिगम स्तर (Learning Level) में सुधार लाया जा सके। अतिरिक्त कक्षाओं के आयोजन तथा उपचारात्मक शिक्षण की प्रभावी व्यवस्था से विद्यालय के बोर्ड परीक्षा परिणाम में निश्चय ही आशातीत गुणात्मक सुधार परिलक्षित होगा।

5. पुनरावृत्ति एवं यूनिट टैस्ट : –

परख एवं अर्द्धवार्षिक परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं में मूल्यांकन से प्रत्येक कक्षा में विषयाध्यापक द्वारा कमजोर अधिगम स्तर वाले विद्यार्थियों का चिह्नीकरण सुगमता से किया जा सकेगा। शीतकालीन अवकाशोपरान्त बोर्ड कक्षाओं में पुनरावृत्ति के साथ–साथ विषयाध्यापक द्वारा यूनिट टैस्ट के माध्यम से उपचारात्मक शिक्षण की लब्धि का मूल्यांकन भी सतत रूप से किया जाए। आशानुरूप लब्धि प्राप्त न होने पर बोर्ड परीक्षा से तत्काल पूर्व किए जाने वाले दो सप्ताह के परीक्षा तैयारी अवकाश का उपयोग चिह्नित विद्यार्थियों के उपचारात्मक शिक्षण हेतु अतिरिक्त कक्षाओं के आयोजन अथवा सुपरवाइज्ड स्टडी (सम्बन्धित विषयाध्यापक द्वारा विद्यार्थी को सम्मुख बैठाकर व्यक्तिगत अध्यापन) के रूप में किया जावे।

6. संस्था प्रधान व विषयाध्यापक की भूमिका : –

परीक्षा परिणाम में पाठ्यक्रम को प्रभावी तरीके से पूर्ण करवाने के सम्बन्ध में संस्थाप्रधान का पर्यवेक्षण प्रभावी होने के साथ–साथ सम्बन्धित व्याख्याता/विषयाध्यापक की रुचि एवं लगन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि इनके द्वारा विद्यार्थियों की पहिचान प्रभावी तरीके से की जाकर अतिरिक्त कक्षाओं/रेमेडियल क्लासेज के माध्यम से प्रभावी शिक्षण करवाया जाए, तो निश्चित रूप से बोर्ड परीक्षा परिणाम में सुधार के साथ–साथ विद्यार्थियों का विद्यालय के प्रति लगाव भी बढ़ेगा। इस सम्बन्ध में समस्त संस्था प्रधानों एवं शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे प्रभावी पर्यवेक्षण के साथ–साथ स्वयं आगे बढ़कर प्रेरणादायक नेतृत्व का परिचय देते हुए विद्यार्थियों के प्रति मार्गदर्शक की भूमिका का उचित रीति से निर्वहन करेंगे।

सम्पूर्ण क्षेत्राधिकार में उपर्युक्त निर्देशों की पालना सर्वोच्च प्राथमिकता से करवाई जानी सुनिश्चित करें।

● **(नथमल डिडेल)** आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

उनसे मत डरिए जो आप के शरीर को नष्ट कर सकते हैं। आप तो उनसे डरिए जो आप की आत्मा को पतन के मार्ग में ले जाकर नष्ट कर देने वाले हैं।

माह : अगस्त, 2017	**विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम**	प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.8.2017	मंगलवार	उदयपुर	11	अनिवार्य हिन्दी–II	1	हिन्दी कहानी की विकास यात्रा
2.8.2017	बुधवार	जयपुर	10	समाजोपयोगी योजनाएँ	1	स्वच्छता अभियान
3.8.2017	गुरुवार	उदयपुर	5	हिन्दी	2	मेहनत की कमाई
4.8.2017	शुक्रवार	जयपुर	3	हिन्दी	2	मीठे बोल
5.8.2017	शनिवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		रक्षाबंधन व संस्कृत दिवस की जानकारी
8.8.2017	मंगलवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	2	परिवारों का आना–जाना
9.8.2017	बुधवार	उदयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	3	जल संसाधन
10.8.2017	गुरुवार	जयपुर	10	विज्ञान	2	मानव तंत्र
11.8.2017	शुक्रवार	उदयपुर	7	हिन्दी	4	शरणागत की रक्षा
12.8.2017	शनिवार	जयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	2	विश्व के प्रमुख दर्शन
14.8.2017	सोमवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम	हमारी शान हमारी जान हमारा तिरंगा–स्वतंत्रता दिवस	
16.8.2017	बुधवार	जयपुर	9	संस्कृत (तृ. भाषा)	3	सुभाषितानि
17.8.2017 गुरुवार से 19.8.2017 शनिवार तक प्रथम परख (सभी कक्षाओं के लिए)						
21.8.2017	सोमवार	उदयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	4	खेल प्रतियोगिता
22.8.2017	मंगलवार	जयपुर	11	अनिवार्य हिन्दी– II	5	देशभक्त
23.8.2017	बुधवार	उदयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	4	भारत में सामाजिक सुधार और धार्मिक पुनर्जागरण
24.8.2017	गुरुवार	जयपुर	12	हिन्दी–I	5	वीर रस के कवित्त
25.8.2017	शुक्रवार	उदयपुर	10	समाजोपयोगी योजनाएँ	4	भामाशाह योजना
26.8.2017	शनिवार	जयपुर	5	हिन्दी	6	स्वस्थ तन, सुखी जीवन
28.8.2017	सोमवार	उदयपुर	10	विज्ञान	5	दैनिक जीवन में रसायन
29.8.2017	मंगलवार	जयपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	6	देखो, जंगल अजब निराला
30.8.2017	बुधवार	उदयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	5	लोकतन्त्र

● निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

आवश्यक सूचना

'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा– नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय–समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग–अलग संलग्न करें।

–वरिष्ठ संपादक

जानकारी

विद्यार्थी और सड़क सुरक्षा

❐ भूरमल सोनी

अन्धाधुंध बढ़ते वाहनों के कारण प्रतिवर्ष दुर्घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है। इन दुर्घटनाओं में हताहत होने वालों में कम उम्र के बच्चों की संख्या अधिक है। इसे लेकर भारत सरकार व परिवहन विभाग चिंतित है। इन दुर्घटनाओं का कारण कम उम्र के बच्चों को वाहन की चाबी सौंपना है। 90% सड़क दुर्घटनाएँ वाहन चालकों की लापरवाही एवं यातायात नियमों के पालन के अभाव के कारण घटित होती हैं। अतः खासकर विद्यार्थियों को सड़क-सुरक्षा नियमों यथा रोड सिग्नल, रोड साइन, रोड मार्किंग, लाइसेंस, फिटनेस, उम्र, नियमों, सुरक्षा कारणों व अपराध व दण्ड का ज्ञान होना जरूरी है।

राज्य सरकार ने पाठ्यक्रम में भी इस विषय को जोड़कर विद्यार्थियों को यातायात नियमों, कानून कायदों से रुबरु करवाने का सतत प्रयास किया है। जरूरत है यातायात के सभी पहलुओं पर मंथन करने की, जिसमें विद्यालय स्तर व अभिभावकों का सहयोग अनुकरणीय सिद्ध होगा।

वर्तमान में 14 से 20 साल के बीच की उम्र में दुपहिया वाहन चलाने वालों की उम्र सबसे ज्यादा है, जिसमें केवल कुछ प्रतिशत के पास ही ड्राइविंग लाइसेंस होता है।

लाइसेंस सम्बन्धी नियम

1. प्रोफेशनल और सामान्य दोनों लाइसेंस के लिए आवेदन करने की उम्र कम से कम 18 वर्ष है।
2. 16 वर्ष की उम्र में 50 सी.सी. से कम के बिना गियर वाले वाहनों का लाइसेंस बनाया जाता है।
3. आवेनदनकर्त्ता का पहले लर्निंग लाइसेंस बनता है जिसकी अवधि 6 माह तक होती है। इसके लिए पासपोर्ट साइज फोटो, निवास व उम्र के प्रमाण की जरूरत होती है। लर्निंग लाइसेंस के 30 दिन बाद पुनः स्थायी लाइसेंस का आवेदन किया जा सकता है।

4. हल्के वाहन व भारी वाहनों के लाइसेंस की अलग-अलग प्रक्रिया है। आजकल ऑनलाइन लाइसेंस भी बनने लगे हैं।
5. लाइसेंस आवेदन के बाद नियमानुसार यातायात नियमों की कम्प्यूटर परीक्षा के अलावा वाहन चलाकर भी दिखाने की परीक्षा होती है।
6. लाइसेंस सम्बन्धी नियमों की पुस्तिका व अन्य जानकारी जिला परिवहन विभाग से प्राप्त की जा सकती है। शारीरिक अक्षम लोगों के लाइसेंस नहीं बनते। वैसे लाइसेंस बनाने से पूर्व चिकित्सा परीक्षण भी आवश्यक है।

यातायात के नियम

1. वाहन चालक को सीट बेल्ट व हेलमेट का उपयोग करना चाहिए।
2. यातायात नियमों, संकेत चिह्नों की पहिचान करना।
3. हमेशा दायीं ओर चलना, मोड़, चौराहा, रेल फाटक, वाहन गति, ट्रेफिक लाइट का ध्यान रखना।
4. सबसे ज्यादा दुर्घटनाएँ ओवरटेकिंग के कारण होती हैं। अतः वाहन का ओवरटेक सावधानीपूर्वक करें।
5. वाहन चालक को नशा नहीं करना चाहिए। अधिकतर दुर्घटनाएँ नशे व नींद की झपकी के कारण भी होती हैं।
6. लाल, हरे, पीले रंग के सिग्नल को भली भाँति समझकर वाहन का उपयोग करें।
7. सड़क पर चलते समय रोड पर लगे विभिन्न चिह्नों का भी ज्ञान करें।
8. निर्धारित गति सीमानुसार वाहन चलाएँ। अधिक तेज गति से वाहन कंट्रोल नहीं होते हैं और दुर्घटना को न्यौता देते हैं।
9. वाहन के ब्रेक समय-समय पर चेक करने चाहिए तथा लाइटों को भी सुचारु रखना चाहिए, साथ ही इण्डीकेटर का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।
10. हैड लाइट की रोशनी सीधी आँखों पर पड़ती है। सामने से आने वाले वाहन की रोशनी अगर कम नहीं की जाती तो दुर्घटना संभव है। अतः वाहनों की तेज रोशनी से बचें। ऊपर से आधी लाईट काले रंग से रंगनी चाहिए।
11. युवा व कम उम्र के बच्चे फिल्मों को देखकर रियल लाइफ में अक्सर वाहनों से स्टंट करते हैं जो कि खतरनाक व जानलेवा होता है।
12. वाहन चलाते वक्त आर.सी., लाइसेंस, इन्श्योरेन्स व परिचय पत्र आदि साथ रखें।
13. गाड़ी के साइड व्यू मिरर और रियर मिरर का प्रयोग करें। ताकि पीछे व साइड में आने वाले वाहनों की जानकारी हो सके।
14. रेल फाटक से दुपहिया वाहन निकालना, पटरी पार करना कानूनी जुर्म है। अतः रेल फाटक खुलने पर ही वाहन को दूसरी तरफ ले जाएँ। अक्सर युवा जोश में दुपहिया वाहन को बंद फाटक के नीचे से

निकालकर पटरी पार करते हैं। मानव रहित रेल फाटक से वाहन निकालते समय सावधानी बरतें।

15. वाहन की क्षमतानुसार ही वाहन का प्रयोग करें। जीवन अनमोल है थोड़ी लापरवाही के कारण जान जोखिम में न डालें। ड्राइविंग सीखने के लिए अच्छे ड्राइविंग प्रशिक्षण केन्द्र का चयन कर यातायात नियमों को समझें। वाहन व स्वयं की बीमा अवश्य करवाएँ, ताकि वाहन खोने व दुर्घटना होने पर आर्थिक राहत प्राप्त कर सकें।

यातायात अपराध एवं जुर्माना

यातायात नियमों की अवहेलना करना, अनदेखी करना, नियम तोड़ना आदि यातायात अपराध की श्रेणी में आते हैं। परिवहन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिये यातायात नियमों तथा जुर्माना राशि को कई गुना बढ़ाया गया है जो कि पूरे देश में शीघ्र लागू हो जाएगा-

1. बिना हेलमेट-धारा 194D अब 1000/- रु. (पहले - 200/)
2. बिना सीट बेल्ट-धारा-194 (3) 1000/रु.
3. बिना परमिट-धारा-192 (A) 10,000/रु. तक जुर्माना
4. शराब पीकर वाहन चलाना-धारा - 185,1000/-रु. जुर्माना
5. बिना बीमा-धारा-196-2000 जुर्माना
6. नियम तोड़ने पर-धारा-177(A) 500/- रु. जुर्माना
7. सामान्य अवहेलना-धारा-177-500/रु. जुर्माना
8. दुपहिया वाहन पर तीन सवारी बैठना-2000/- रु. जुर्माना तीन माह के लिए लाइसेंस रद्द
9. तेज गति से वाहन चलाना-धारा-189-500/- रु. जुर्माना
10. नाबालिग व अयोग्य वाहन चालक-धारा-199-25000/रु. जुर्माना तथा मालिक/माता-पिता/अभिभावक को तीन वर्ष तक की जेल।
    वाहन का J.J. एक्ट के अनुसार रजिस्ट्रेशन रदद् किया जा सकता है।
11. बिना हैलमेट धारक को जुर्माना के अलावा-3 माह के लिए लाइसेंस रदद् भी किया जा सकता है।

सड़क दुर्घटनाओं में पीड़ित की मदद

अक्सर देखा जाता है कि सड़क पर दुर्घटनाग्रस्त लोगों की मदद करने से आम आदमी घबराता है। कानूनी पचड़े में नहीं पड़ना चाहता। कानून की जानकारी के अभाव में वह ऐसा सोचता है। मगर अब घबराने-डरने की जरूरत नहीं है। क्योंकि - सुप्रीम कोर्ट ने अपने अहम निर्णय के अनुसार जीवन को बचाने को प्रथम वरीयता में रखकर सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय भारत सरकार को निर्देश जारी किए हैं। (13 मई 2015)

1. सर्वप्रथम दुर्घटना ग्रस्त पीड़ित को मदद कर शीघ्र अस्पताल पहुँचाएँ।
2. अस्पताल में पहचान बताना और ठहरना आवश्यक नहीं।
3. दुर्घटना से पीड़ित की मदद करने वाले को अपराधी नहीं माना जाएगा।
4. पीड़ित का इलाज निःशुल्क करना होगा व किसी प्रकार का दवाओं आदि के खर्चे की मांग नहीं की जाएगी।
5. मौका स्थल पर चश्मदीद गवाह के बयान सिर्फ एक बार ही होंगे।
6. परेशानी मुक्त कानूनी कार्यवाही आदि।
7. मानवीय दृष्टिकोण अपना कर किसी की जान बचाना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। स्कूलों में पाठ्यक्रम में जुड़े यातायात नियमों की जानकारी छात्र-छात्राओं को समय-समय पर दें ताकि सभी जन दुर्घटनाओं की रोकथाम में अपनी भागीदारी निभा सकें।

प्रतिवर्ष जागरूकता के लिए 'सड़क सुरक्षा सप्ताह' का आयोजन होता है। सड़क सुरक्षा सप्ताह को औपचारिक न बनाकर हकीकत में सन्देशित करने का प्रयास हम सभी मिलकर करेंगे तभी सड़क सुरक्षा विषय की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता विद्यार्थियों व आम जन के लिए कारगर सिद्ध होगी।

कला शिक्षक
रा.आ.उ.मा. वि. पलाना
बीकानेर (राज)
मो. 9252176253

शिक्षकों (गुरु) के नाम पाती

❐ **टेकचन्द्र शर्मा**

(1)
निराशा के गहन कूप से,
शिष्य को ले निकाल
सफल गुरु उसको कहें,
बने शिष्य की ढाल।।
बने शिष्य की ढाल,
चाल वही रंग लावे।
सभी भाँति से भला शिष्य का,
जब गुरु चाहे।।
कहे 'चन्द्र' कविराय, गुरु कृष्ण थे सच्चे।
अर्जुन शिष्य कृष्ण गुरु, दोनों थे अच्छे।।

(2)
शिष्य सुरक्षा, शिष्य हित,
जिस गुरु का हो सोच।
सच्चा गुरु बस वही है,
कहते हैं निःसंकोच।।
कहते हैं निःसंकोच,
पेच न इसको समझें।
वाद विवाद है व्यर्थ,
न इसमें कोई उलझे।।
कहे 'चन्द्र' कविराय, कृष्ण-सा गुरु जो पावे।
अर्जुन जैसे शिष्य फिर, क्यों न इतरावे।।

(3)
शिक्षक हूँ मैं इसलिए,
करता शिक्षक-बात।
सच्चे शिक्षक हम बनें,
चाहत मेरी तात।।
चाहत मेरी तात,
स्यात् सबको भा जावे।
जन्माष्टमी पर शिक्षक कृष्ण,
हमें याद आ जावे।।
कहे 'चन्द्र' कविराय, सुनो ऐ! शिक्षक साथी।
जन्माष्टमी शुभअवसर पर, लिख रहा मैं पाती।।

'शर्मा सदन', झुंझुनूं
मो. 9672973792

प्रेरणा

दिव्यांगता सफलता में बाधा नहीं

❒ रेखा बॉयले

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि जिस व्यक्ति के दोनों हाथ नहीं हों वह बड़ी ही सुंदर लिखावट से अपनी लेखनी चलाले या पैर नहीं होने के बावजूद फर्राटे से साइकिल चलाते हुए रोड की रफ्तार नाप ले।

कुछ ऐसा ही नजारा दिखाई देता है राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जेठाना के प्रांगण में ... जब यहाँ का उच्च माध्यमिक कक्षा का छात्र जितेंद्र दोनों हाथों और पैरों से दिव्यांग होते हुए भी अपने आत्मविश्वास के बलबूते निरंतर आगे की ओर कदम बढ़ा रहा है। अजमेर जिले की पीसांगन पंचायत समिति का एक छोटा सा गाँव जेठाना और वहीं का राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का छात्र है जितेन्द्र खटन वालिया, जिसके दोनों हाथ और एक पैर दिव्यांग है फिर भी वह बड़ी ही सुगमता से वो सारे कार्य कर लेता है जो शारीरिक रूप से सक्षम विद्यार्थी आलस्य या विद्यार्थी के गुणों का अभाव के कारण नहीं कर पाते हैं। यह दिव्यांग विद्यार्थी इस दिव्यांगता को दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास के बलबूते अपना वरदान बनाकर सबको चमत्कृत कर देता है। काबिले तारीफ होता है वह दृश्य जब वह हथेली व अंगुलीविहीन हाथों से बड़ी ही सुगमतापूर्वक अपनी जेब से पेन निकालता है, बस्ते को खोलकर कॉपी किताब निकालता है और जब लिखना शुरु करता है तो कोई भी उसे देखकर यकायक अपनी नजर पर विश्वास नहीं कर पाता है।

माध्यमिक परीक्षा में जब इस छात्र के समक्ष श्रुतलेख के द्वारा उत्तरपुस्तिका में लिखाए जाने का प्रस्ताव आया तो बड़ी ही दृढ़ता से खुद ही लिखने का इरादा जाहिर किया।

उसने खुद के आत्मविश्वास के बल पर माध्यमिक परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की और अब उच्च माध्यमिक परीक्षा में भी वह इसी प्रकार का कारनामा दिखाने जा रहा है। कहते हैं न कि प्रकृति हमसे कुछ छीनती है तो दोनों हाथों से वापस देती भी है। कोई न कोई ऐसी प्रतिभा

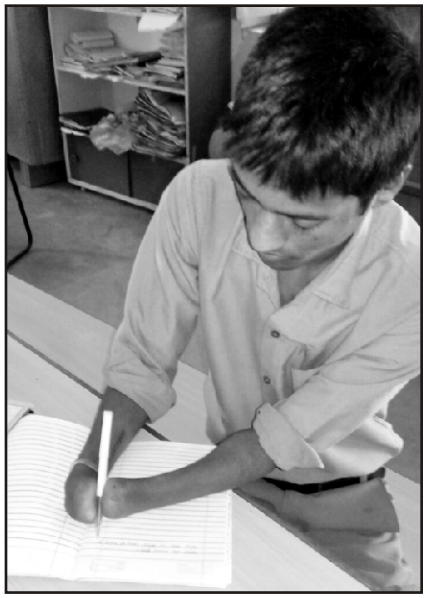

मनुष्य में पैदा कर देती है कि यह कमी ही उनके आत्मविश्वास को बढ़ाकर सफलता के नवीन आयाम स्थापित करवा देती है।

जहाँ उसके दोनों हाथ नहीं हैं वहीं उसके आत्मविश्वास ने उसको इतनी दृढ़ता प्रदान की है कि वह दोनों हाथ वाले व्यक्तियों से भी ज्यादा अच्छा काम कर पाता है, बड़े ही फर्राटे से साइकिल चला लेता है अपने सारे काम स्वयं कर लेता है.... पैर से विकलांग होते हुए भी वह कभी अपने को लाचार और असहाय महसूस नहीं करता है.. बिना दूसरों की सहायता लिए अपने सारे काम स्वयं करता है। आसानी से कप्यूटर चला लेता है... जहाँ बहुत सारे छात्र-छात्राएँ प्रकृति के उपहार स्वरूप पूर्ण स्वस्थ है और शारीरिक रूप से सक्षम है लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति की कमी और विद्यार्थी जीवन के गुणों का अभाव होने के कारण पीछे रह जाते हैं.. वहीं जितेन्द्र ऐसा मेहनती छात्र है जो कहीं अपनी शारीरिक अक्षमता उजागर होने ही नहीं देता।

रामकृष्ण परमहंस के दो शिष्य इसी बात पर झगड़ा करने लगे कि उनमें से कौन बड़ा है? उन्होंने गुरुदेव के पास जाकर पूछा-''हम दोनों में कौन बड़ा है?'' परमहंस बोले-''इतनी सी बात के लिए झगड़ने की क्या आवश्यकता है? जो दूसरे को बड़ा समझता है वही बड़ा है।''

शैक्षिक हो या सहशैक्षिक, कभी कहीं किसी से पीछे नहीं रहता, कार्यभार ग्रहण करते ही पहली बार जब मेरी निगाह उस पर पड़ी और जिस दृढ़ता से मैंने उसे जेब से पेन निकालते हुए देखा और कॉपी किताब पकड़ते हुए देखा, मुझे लगा वाकई इंसान चाहे तो कोई भी कार्य कठिन नहीं है, जिस तल्लीनता से वह अपना लिखित कार्य करता है अनुशासित रहता है और एक अच्छे विद्यार्थी के सभी गुणों का पालन करता है उसे देखकर निस्संदेह इस बात पर विश्वास होता है कि प्रकृति यदि हमसे कुछ लेती है तो दुगुना हमें वापस भी देखी है, चाहे उसके दोनों हाथ नहीं है, पैर से दिव्यांग है लेकिन फिर भी उसकी आंतरिक शक्ति कार्य करने की लगन उसे निश्चित रूप से नई ऊँचाइयों तक ले जाएगी और फिर से यह सिद्ध हो जाएगा कि ''जहाँ चाह है वहाँ राह है।''

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. जेठाना, पं.स. पीसांगन (अजमेर)
मो : 9783937297

स्वास्थ्य मानव का जन्मसिद्ध अधिकार हैं। स्वास्थ सुखी जीवन का सम्बल है। स्वास्थ्य मानव समुदाय एवं राष्ट्र का आधार स्तम्भ है। वह अपने परिवार, पड़ौसी नगर, समुदाय के प्रति सेवाएँ देने में समर्थ रहता है। वह अपनी कार्यक्षमता से पारिवारिक आजीविका, जीवन की चुनौतियों एवं कठिनाइयों का सामना साहसपूर्वक कर सकता है। अधिक उत्पादन एवं आर्थिक स्तर ऊँचा उठाने में स्वस्थ लोग मददगार रहते हैं।

यही कारण है कि सरकारें एवं स्वयंसेवी संस्थाएँ शहरों से ग्रामीण अँचल तक कार्य करती है। इसी सन्दर्भ में जॉन लॉक ने ठीक ही कहा कि ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।''

अतः आज अन्तर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य सम्बल के अनेक कार्यक्रम सरकार विशेष अभियान के रूप में चला रही है। आज हमारे राष्ट्र में अनेकों ऐसी बीमारियाँ फैली हुई है, जो हमारे राष्ट्र के मार्ग में अवरुद्ध बनी हुई है। इन अनेकों बीमारियों में से मलेरिया एक विकट समस्या के रूप में हजारों सालों से बनी हुई है। जो सम्पूर्ण विश्व में ये यक्ष प्रश्न हैं।

मलेरिया सबसे प्रचलित संक्रामक रोगों में से एक है जो कि भयंकर जन स्वास्थ्य समस्या है। यह रोग प्लास्मोडियम गण (plasmodium) के प्रोटोजोआ परजीवी के माध्यम से फैलता है। इस प्रोटाजोआ का नाम प्लास्मोडियम (plasmodium) इटली के वैज्ञानिक एतोरे मार्चियाफावा तथा आजेलो सेली ने रखा था। इसके एक वर्ष बाद क्यूबाई चिकित्सक कार्लोस फिनले ने पीत ज्वर का इलाज करते हुए पहली बार प्रमाणित किया कि मच्छर रोग को एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य तक फैलाते हैं। मलेरिया (malaria) पर सर्वप्रथम वैज्ञानिक अध्ययन 1880 ई. में हुआ था। जब एक फ्रांसीसी सैन्य चिकित्सक चार्ल्स लुई अल्फोंस लैवेरन ने अल्जीरिया में काम करते हुए प्रथम बार लाल रक्तकणिका (R.B.C) के अन्दर परजीवी को देखा था।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अनुमान के मुताबिक लगभग 1 से 2 लाख व्यक्तियों की हर साल मलेरिया के कारण मृत्यु होती है। इनमें अधिकांशतः 5 वर्ष से छोटे बच्चे शिकार होते

स्वच्छता अभियान

मलेरिया मुक्त अभियान

❐ कैलाश राम सांगवा

है। यह एक प्लास्मोडियम (plasmodium) नामक परजीवी प्रोटोजोआ की जातियों से होता है। सन् 1898 ई. में सर रोनाल्ड रॉस ने सर्वप्रथम पता लगाया। सर रोनाल्ड रॉस पहले ब्रिटिश भारत में स्वास्थ्य अधिकारी के रूप में नियुक्त थे। जिसने सर्वप्रथम सिकन्दराबाद (भारत) में मलेरिया परजीवी की खोज की थी। बाद में इनके शोध-पत्रों पर विश्वास नहीं करने पर उन्होंने वापस ब्रिटेन में जाकर नवस्थापित 'लिवरपूल स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन' में कार्य किया। ब्रिटेन में सन् 1902 ई. में रसायन शाला में 2000 मच्छरों के परीक्षण करने पर आपने शोध किया, जिसमें अन्तिम तीन (3) मच्छरों के परीक्षण करने पर आपने शोध में पाया कि मलेरिया के परजीवी द्वारा मनुष्य के रक्त कणिकाओं (r.b.c.) में प्रवेश करने पर वे द्विगुणित हो जाते है। मलेरिया के परजीवी का वाहक मादा एनोफिलेज (anopheles) मच्छर है। यह मच्छर रात को मनुष्य को काटता है। मलेरिया के रोगाणु की तीन प्रकार की किस्में है जो इस प्रकार है-मलेरिया टर्शियाना, क्वार्टाना और ट्रोपिका। जिसमें सबसे खतरनाक मलेरिया ट्रोपिका है। प्लास्मोडियम परजीवी गण की चार प्रजातियाँ है।

1. प्लास्मोडियम फैल्सीपैरम (plasmodium falciparum&p-f)
2. प्लास्मोडियम ओवेल (plasmodium ovale & p-o)
3. प्लास्मोडियम विवैक्स (plasmodium vivax & p-v)
4. प्लास्मोडियम मलेरिये (plasmodium malariae & p-m)

इन चारों में से सर्वाधिक खतरनाक प्लास्मोडियम फैल्सीपैरम तथा प्लास्मोडियम विवैक्स माने जाते है तथा प्लास्मोडियम मलेरिये भी मनुष्य को प्रभावित करते है। इस सारे समूह को 'मलेरिया परजीवी' कहते है। मलेरिया (malaria) शब्द की व्युत्पति मध्यकाल समय में इटालियन भाषा के दो शब्दों 'माला+एरिया' से हुई। जिनका अर्थ है mala यानि 'बुरी' तथा ria यानि 'हवा'। इस प्रकार अर्थ हुआ 'बुरी हवा', इसे दल दली बुखार भी कहते है। अंग्रेजी के "marsh fever" के या एग (ague)भी कहा जाता है क्योंकि यह दलदली क्षेत्रों में व्यापक रूप से फैलता है। मच्छर द्वारा काटने पर मच्छर की लार के साथ हंसिया कार स्पोरोजोइटे (porozoites) के रूप में प्लास्मोडियम शरीर में प्रवेश करता है। रक्त प्रवाह के समय यह यकृत (liver) में पहुँच जाता है। जहाँ पर यह द्विगुणित करता है। यह सात (7) से चौदह दिनों के अन्दर स्पोरोजोमट से 5000-10,000 गोलाकार मीरोजोइट (merozoite) बन जाती है। ये मीराजोइट हजारों की संख्या में यकृत में पुनः पहुँचकर छिप जाते है और अब लाल रक्त कणिकाओं (red blood corpuscles r.b.c) पर अटैक करते हैं जहाँ ये वृद्धि और बहुगुणन करते हैं। इन कोशिकाओं को चीरकर और अधिक मात्रा में मीरोजोइट निकलते है जो फिर (r.b.cs) पर अटैक करते हैं। एक सप्ताह में बार-बार बुखार, कंपकंपी तथा ठण्ड लगती है। सांस फूलना, चक्कर आना, रक्तहीनता के लक्षण उभरते है। ऐसा इसलिए होता है कि लाल रक्त कणिका बार-बार फूटती है और मीरोजोइट रक्त में विषाक्त पदार्थ निकालती है।

मच्छरों के काटने से मलेरिया नहीं इनके अलावा बहुत सारे रोग मच्छरों के काटने से फैलते हैं। जैसे-मनुष्य में चिकनगुनिया का संक्रमण CHIKV संक्रमित मच्छर के काटने से होता है। मच्छरों में यह संक्रमण CHIKV संक्रमित व्यक्ति को काटने पर होता है। एडिज एजिप्टी मच्छर के काटने से फैलता है, जो घरों में जमा पानी में प्रजनन करता है एवं दिन के समय काटता है, का प्राथमिक वाहक है। 'चिकनगुनिया' शब्द दक्षिण अफ्रीका की स्वाहली भाषा का है जिसका अर्थ है 'झुकादेना'। चिकनगुनिया की प्रमाणित दवा नहीं है। इसका इलाज 'बचाव ही उपचार है।' जो चिकित्सा उपलब्ध है वह मात्र लाक्षणिक

(SYMPTOMATIC) मच्छरों से फैलने वाला ऐसा ही एक और रोग है, जो डेंगू (DENGUE FEVER OR BREAK DONE FEVER) है जो मच्छरों के संक्रमण द्वारा फैलता है, इनके वाहक (1) एडिज इजिप्टी (2) एडिस एल्बोपिक्टस (3) क्यूलेक्स फटिगन्सस नामक मच्छर संचारित करते हैं। इस रोग से अचानक तेज बुखार आता है, चेहरे पर लाल पितियाँ आती है। इसमें जोड़ों, पेशियों में बहुत दर्द होता है। इस रोग को 'हड्डी बुखार' भी कहते है। इस रोगी के शरीर से खून बहने लगता है, खून रिसाव वाला डेंगू बुखार (dengue fever) 1958 ई. में फिलीपींस में सर्वप्रथम मालूम हुआ। भारत में डेंगू बुखार (dengue fever) का पहला मामला सन् 1963 ई. में कोलकाता में सामने आया था। वर्तमान में मलेरिया भूमध्य रेखा के दोनों तरफ विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है। इन क्षेत्रों में उष्णकटिबंधीय तथा उपोष्णकटिबंधीय जलवायु के कारण मलेरिया वाहकों को अनुकूल वातावरण मिल जाता हैं। जिससे यह अपनी उतरजीविता बनाये रखने में सक्षम हो जाते हैं। मलेरिया वितरण समझना थोड़ा जटिल है, मलेरिया प्रभावित क्षेत्र तथा मलेरिया मुक्त क्षेत्र प्रायः साथ-साथ होते हैं, सूखे क्षेत्रों में इसके प्रसार का वर्षा की मात्रा से संबंध है। हाल ही में ब्रिटेन की 'वेलकम ट्रस्ट' ने 'मलेरिया एटलस परियोजना' को इस कार्य हेतु वित्तीय सहायता दी। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 25 अप्रैल को मलेरिया दिवस मनाते है। पिछले कई सालों से 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' इस दिन को 'अफ्रीकी मलेरिया दिवस' के रूप में मनाता था। पूरे विश्व का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रथम बार 25 अप्रैल 2008 को मनाना शुरु किया। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संस्था विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) अनेकों अभियान चलाता है, अनेकों कार्यक्रम की रूपरेखा बनाकर हर राष्ट्र को भेजता है तथा वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाता है। भारत सरकार सर्वप्रथम सन् 1953 ई. में 'राष्ट्रीय मलेरिया संरक्षण कमेटी' बनायी। उसके बाद सन् 1958 में राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम घोषित किया। इसके बाद स्वास्थ्य मंत्रालय ने बहुत सारे कार्यक्रम चलाए लेकिन वही ढाक के तीन पात रहा। देश के लिए 'चढ़ता बुखार, बढ़ता मलेरिया खतरनाक' है। सन् 1992 के बाद राष्ट्रीय स्तर पर विशेष कोई जागरूकता कार्यक्रम नहीं चलाया। अब वर्तमान में हमारे देश में मलेरिया विशेष रूप में पांव पसारने लगा है, विशेष रूप से पश्चिमी राजस्थान दलदली क्षेत्र, नहरी क्षेत्र, गहन घनत्व वाले क्षेत्र, समुद्र तटीय क्षेत्र, घने वन क्षेत्र आदि क्षेत्रों में मलेरिया का प्रकोप है। जो कभी-कभी एक छोटा सा कीट, केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं आम नागरिक के लिए एक चुनौती भरा प्रश्न बन जाता है। जब तक आम नागरिक जागरूक नहीं होगा, उसकी जवाबदेही नहीं बनेगी; तब तक यह कीट अपना शासन चलाता रहेगा। व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ-साथ आम नागरिक को समग्र होकर राष्ट्र के इस अभियान में जवाबदेही बनकर कार्य करना होगा। तभी राष्ट्र मूलभूत बीमारियों से मुक्ति पा सकता है। ये सभी बीमारियाँ गन्दगी एवं दूषित वातावरण के कारण फैलती है। इस दूषित वातावरण के वास्तविक वाहक बदलती मानवीय जीवन शैली एवं प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप जीवन शैली नहीं अपनाने के कारण प्राकृतिक वातावरण का घटनाचक्र मानव शैली के विरुद्ध होने से मानव अनेक बीमारियों से जकड़ गया है, क्योंकि प्रकृति अपने वातावरण घटक बनाए रखने में सक्षम है। मानवीय विलासिता एवं तेज रफ्तार से चलने वाली जीवनशैली के कारण प्रकृति चक्र दूषित हो जाता है। जिसके कारण वातावरण में अनेक कीटाणु, जीवाणु एवं विषाणु अपना जीवन सरल बना लेते है जिसके शिकार आम नागरिक बनते है क्योंकि कोई भी जीव-जन्तु अपनी उत्तरजीविता बनाए रखना चाहते है। इस कारण उनको अनुकूल वातावरण आवश्यक है और वह अपने कार्य में सक्षम हो जाते हैं। यह राष्ट्र के लिए एक विकट समस्या बन जाती है। अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ-साथ हमारे घर, विद्यालय एवं अन्य सार्वजनिक स्थान साफ-सुथरे रखने चाहिए। घरों के आस-पास एकत्र गन्दगी एवं दूषित पानी के फैले रहने से वातावरण दूषित होता है। मलेरिया से बचने के लिए मच्छरों द्वारा काटे जाने से बचना चाहिए। मच्छरों की संख्या वृद्धि रोकने के लिए आस-पास के गड्डों में पानी एकत्र नहीं होना चाहिए एवं नम वातावरण बनने से रोकना चाहिए। घरों में D.D.T. के पाउडर का छिड़काव करना चाहिए। मलेरिया के लक्षण देखते ही रोगी को खून की जाँच कराकर उपयुक्त दवा जैसे-कुनैन कैमाक्विन, क्लोरोक्विन आदि चिकित्सक के परामर्शनुसार लेनी चाहिए। मलेरिया उन्मूलन के लिए सार्वजनिक स्थानों पर स्वयंसेवी संस्थाओं के आस-पास पानी के गढ्ढे, नालियों में पानी का जमाव, घरों के पानी के नल खुले नहीं छोडने चाहिए। इन सब का समुचित रूप से उपयोग करते हुए 'स्वस्थ राष्ट्र के स्वस्थ नागरिक' बनना चाहिए। सम्पूर्ण राष्ट्र में मलेरिया उन्मूलन जागरूकता कार्यक्रम चलाना चाहिए। जिसमें आम नागरिक, संचार मीडिया, प्रिन्ट मीडिया, स्वास्थ्य मंत्रालय आदि को जागरूकता कार्यक्रम में विशेष भागीदार बनना चाहिए। राष्ट्र स्तर पर 'मलेरिया उन्मूलन परिषद' बनना चाहिए, राज्य स्तर पर 'राज्य मलेरिया उन्मूलन कमेटी' बननी चाहिए तथा जिला तहसील एवं खण्ड स्तर पर मलेरिया उन्मूलन कमेटियाँ बनाकर केन्द्र सरकार को मोनीटरिंग करनी चाहिए। नगर या ग्राम स्तर पर 'मलेरिया उन्मूलन पंचायत कमेटी' बननी चाहिए जिसमें पंचायत मुखिया अध्यक्ष एवं वार्ड मेम्बर कमेटी सदस्य बनकर हर सप्ताह इस बीमारी की प्रगति रिपोर्ट खण्ड स्तर पर भेजनी चाहिए। यह श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रम राष्ट्र स्तर तक पहुँचना चाहिए। जिससे मलेरिया के फैलने में कमी की जा सकती है। आम नागरिक को इस पवित्र कार्य में भाग लेकर एक सजग स्वच्छ राष्ट्र का स्वस्थ नागरिक बनना चाहिए। तभी राष्ट्र प्रगति के पथ पर बढ़ेगा क्योंकि जिन राष्ट्रों में मलेरिया अधिक है उन राष्ट्रों की आर्थिक विकास दर मलेरिया मुक्त राष्ट्रों की अपेक्षा कम हैं। यह सर्वे रिपोर्ट वर्तमान में W.H.O. ने जारी की। 5 अप्रैल 2016 को श्रीलंका को 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' ने मलेरिया मुक्त राष्ट्र घोषित किया तथा 2015 में मालद्वीव को मलेरिया मुक्त घोषित किया। वर्तमान में विश्व में 33 देश ऐसे हैं, जिनको W.H.O. ने मलेरिया मुक्त देश घोषित किया। W.H.O. ने सन् 2030 तक 35 देशों को मलेरिया मुक्त करने का लक्ष्य रखा जिसमें भारत भी शामिल है। भारत सरकार ने इस वर्ष फरवरी में सन् 2030 तक मलेरिया मुक्त होने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

व.अ. (गणित)
रा.आ.उ.मा.वि. डेह (जायल) नागौर (राज.)
मो: 9772330428

सांस्कृतिक परम्परा

हमारी उत्सव चेतना का वर्तमान परिप्रेक्ष्य

❒ कैलाश चन्द्र मीणा

भारतीय उत्सव परम्परा अपनी सांस्कृतिक पुनर्स्मृतियों की परंपरा है। 'सात वार तेरह त्योहार' की उक्ति भारतीय भू-क्षेत्र के लिए सुप्रसिद्ध है। इन उत्सवों के माध्यम से हम अपनी प्राचीन सभ्यता के इतिहास तथा मुख्य सांस्कृतिक घटनाओं का पुनरवलोकन किया करते है। इनसे हमारी परवर्ती पीढ़ियों को सहज ही अपनी सांस्कृतिक विरासत की झलक मिलती रहती है। ये उत्सव हमारे समाज को प्रत्येक नए युग में हमारी प्रवृत्तियों के पुनर्मूल्यांकन का अवसर प्रदान करते हैं तथा हमारी परवर्ती संतति को पारंपरिक संस्कारों का प्रशिक्षण देते हैं।

यह एक अलग बात है कि आधुनिक भौतिकतावादियों ने उत्सवों को अत्यधिक खर्चीला बना दिया है। इसलिए इनकी बाहरी चमक दमक तो बढ़ी है लेकिन इनकी केन्द्रीय रचनात्मकता समाप्त होती जा रही है। जो उत्सव सार्वजनिक चौपालों में मनाए जाते थे और सामाजिक समन्वय के पोषक हुआ करते थे, आज वे एकाकी कक्ष-कपाटों में बन्द होते जा रहे हैं। नैतिक जीवनचर्या की भाँति उत्सव प्रक्रिया में भी व्यक्तिवादी दंभ प्रदर्शन सार्विक सरोकारों का मखौल उड़ाता सा जान पड़ता है।

हम इस बात को भली-भाँति जानते हैं कि भारतीय संस्कृति-वृक्ष की जड़ें अत्यन्त गहन तथा विस्तृत हैं जबकि विश्व की अनेक संस्कृतियाँ जड़-विहीन तथा परोपजीवी हैं। किन्तु कृत्रिम व्यामोह के आकर्षण में फँसे हम अपनी आत्मिक सहजता के उत्सर्ग पर उतारू हो रहे हैं। हम जानते हैं कि पाश्चात्य भाषा और संस्कृति पौर्वीय समाज और संस्कृति के उपवनों पर अमरबेल की भाँति आच्छादित हुई जा रही हैं, किन्तु हम अपने आलस्य के कारण अथवा अपने आत्मचिंतन की न्यूनतावश निरीहता-पूर्वक इनकी पीताभा पर आकर्षित हुए जा रहे हैं। यह हमारे चिंतन की न्यून उर्वरता का परिणाम है। यह हमारी भाषा और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में

हमारे न्यून आत्मविश्वास की परिणति है।

हमारी सांस्कृतिक परंपरा हमारी दो विरोधाभासी मानसिक प्रवृत्तियों की अनुभूतियों से सृजित हैं। श्रेष्ठ और नेष्ट सदैव आमने-सामने रहा करते हैं। देवासुर संग्राम हमारी इन्हीं दो मानसिक प्रवृत्तियों का प्रसिद्ध रूपक है। हमारे विविध उत्सव, हमारी मानसिक प्रक्रिया के नेष्टीय पक्ष को पराभूत करने के लिए श्रेष्ठता के पक्ष को संबल प्रदान किया करते हैं क्योंकि चिंतन-मनन और आत्मसंबल के अभाव में श्रेष्ठ के ऊपर नेष्ट का प्रभुत्व स्थापित होता जाता है, इसलिए चिंतन के हनुमान को जामवंत की भाँति ये उत्सव उसकी भूली हुई शक्ति का स्मरण कराया करते हैं।

उत्सव के समय हमारा मन श्रेष्ठ मानवीय प्रवृत्तियों के उत्स से सराबोर होता है। यह उत्स सार्वजनीन होता है। यह उत्स हमें सार्विक दायित्वबोध के लिए निरन्तर प्रेरित करता रहता है। भौतिक संलिप्तावश वैयक्तिकता के प्रभाव में यह सार्विक दायित्व-बोध मूर्छित हुआ जान पड़ता है। यही कारण है कि इन्द्र के बाह्य पराक्रम से व्यथित, कृष्ण के नेतृत्व में जो गोवर्धन पर्वत ब्रज के साधारण गोपी-ग्वालों के मन में उत्स-वर्धन का प्रेरक बना। वही महान सांस्कृतिक प्रतीक आज लोभ और लाभ के वशीभूत खनन प्रक्रिया के दौर से गुजर रहा है। हमारी संस्कृति-चेतना की आँखें बन्द हैं। कभी जब खुलें भी, और संभव है कि गोवर्धन का अस्तित्व ही नजर न आए। हमारे संस्कृति-स्रोत असंख्य वन-उपवन, इस उत्स-चेतना के अभाव में कानून की आँखें चुँधियाती कुल्हाड़ियों तथा आरियों की धार पर हैं। सरोवर पाटे जा रहे हैं, नदियों के मार्ग अवरुद्ध किए जा रहे हैं तथा पर्वतों के सीने को मशीनों के नाखूनों से निश्चिंत कुरेदा जा रहा है। उत्स-विहीन उत्सवों के औपचारिक परिन्दे आकाश में उड़ान भरने वाली अपनी प्रेरणा के पंखों को समेट रहे हैं।

कैलास-मानसरोवर हमारी साम्राज्यवादी निष्ठाओं के कारण हमारे सांस्कृतिक परिदृश्य से ओझल होते जा रहे हैं। गंगा, यमुना, गोदावरी लाभ की प्रक्रिया में बोतलों तक सीमित होती जा रही है। पत्थर और खनिज चुनिंदा लोगों की पसंद की दीवारों में चुने जा रहे हैं। वन-उपवन उनकी चौखटों, अलमारियों और शौकिया फर्नीचर में तब्दील होते जा रहे हैं। जीवन की रसात्मकता और सार्विक संवेदनाएँ वस्तुओं के संग्रहों में परिवर्तित होती जा रही हैं।

उत्सवों के अवसर पर दिखाई देने वाला पारस्परिक सद्भाव और सौहार्द्र अब एकाकीपन में परिवर्तित होता जा रहा है। लोक-संगीत और लोक-गीतों का यौवन ढलता जा रहा है। शास्त्रीय नृत्य और संगीत भी संरक्षण के उपाय खोजने लगे हैं। हमारे पारंपरिक वाद्य-यंत्रों को जंग अथवा दीमक खाती जा रही है। उत्सव और विवाहोत्सवों में संगीत के बदले शोर सुनाई देता है तथा नृत्य के बदले धमा-चौकड़ी दिखाई देने लगी है। पाश्चात्य नृत्य-संगीत पर विमोहित हमारी युवा पीढ़ी हमारी सदियों से सहेजी गई विरासत को भूलती जा रही है। न कहीं आल्हा-ऊदल की टेर सुनाई देती है, न शिव के विवाह का प्रसंग। न कहीं पाबू जी की फड़ बाँची जाती है, न कहीं अमर सिंह राठौर या स्याह-पौष की नौटंकी। न कहीं फागुन में होरी-धमार सुनाई देती है, न कहीं बिरहा, चैती या बसंत बहार,

रामलीला न रासलीला।

उत्सवों के अवसरों पर बाजारों में खूब खरीददारी होती है। दीपावली से पूर्व बाजारवादी मीडिया के द्वारा पुष्य नक्षत्र का भरपूर प्रचार किया जाता है। द्वार-दीवार बिजली के लट्टुओं की रंग-बिरंगी रोशनी से खूब जगमगाते हैं किन्तु संगमरमर के झरोखों में मिट्टी के दीपकों के लिए अब कोई स्थान नहीं। अपनी धरती पर अपनी मिट्टी की मिट्टी पलीत करने के उत्सव मनाए जाते हैं आजकल।

हम भारतवासियों की उत्सवप्रियता निरुद्देश्य नहीं है। प्रत्येक उत्सव की पृष्ठभूमि में कोई सामाजिक, राजनैतिक, पर्यावरणीय, जलवायु परिवर्तन विषयक, पर्यटन संबंधी अथवा शृंगारिक, मनोरंजनात्मक या मनोवैज्ञानिक उद्देश्य अवश्य निहित रहता है। प्रत्येक वर्तमान पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक विरासत को इन उत्सवों के माध्यम से आने वाली पीढ़ी को हस्तान्तरित करती रहती है। हमारी उत्सव प्रियता के कारण ही हमारी सुप्राचीन सांस्कृतिक धरोहर आज भी अपने मौलिक स्वरूप में विद्यमान है। इन्हीं के कारण हमारी दीर्घजीवी सभ्यता अनेक महाप्रलयों तथा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक झंझावातों के उपरान्त भी अपने संप्रभुतात्मक स्वरूप में गौरवपूर्वक विश्वपटल पर विराजमान है।

ये उत्सव हमें न केवल अपनी मिट्टी से प्यार करना, अपनी आबोहवा को अंगीकार करना बल्कि चुनौतियों को स्वीकार करना भी सिखाते हैं। इसलिए वर्तमान में अत्यन्त तेजी से बदलते सांस्कृतिक परिवेश में हमारी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को विलुप्त होने से बचाने के लिए हमारी उत्सव चेतना में नया उत्साह भरने की महती आवश्यकता है।

प्रधानाध्यापक
मु.पो. खोरी (शाहपुरा), जयपुर
राजस्थान-303103

परिस्थितियों को अपने अनुरूप बनाने के लिए मनःस्थिति को मजबूत करना आवश्यक है।

प्रेरक-प्रसंग

अपनेपन का अहंकार दान दें

एक तपस्वी किसी धर्मनिष्ठ राजा के महल में पहुँचे। राजा गद्गद् हो गए और कहा-''आज मेरी इच्छा है कि आपको मुँह मांगा उपहार दूं।'' तपस्वी ने कहा-''आप ही अपने मन से सबसे अधिक प्रिय वस्तु दे दें। मैं क्या मांगू।'' राजा ने कहा-''अपना राज्य कोष समर्पित करता हूँ।'' तपस्वी बोले-''वह तो प्रजाजनों का है। आप तो संरक्षक मात्र हैं।'' ''तो महल, सवारी आदि मेरे हैं, इन्हें ले लो।'' राजा ने कहा। तपस्वी हँस पड़े-''राजन्, आप भूल जाते हैं कि यह सब भी प्रजाजनों का है। आपको कार्य-सुविधा के लिए दिया जाता है।'' अबकी बार राजा ने अपना शरीर देने का विचार रख दिया तो तपस्वी बोले-''वह भी आपके बाल-बच्चों का है, इसे कैसे दे पाएँगे।'' राजा को असमंजस में देखकर तपस्वी बोले-''राजन् आप अपनेपन का अहंकार दान कर दें। अहंकार ही सबसे बड़ा बंधन है।'' राजा दूसरे दिन से अनासक्त की तरह राजकाज चलाने लगा।

दृढ़ इच्छाशक्ति

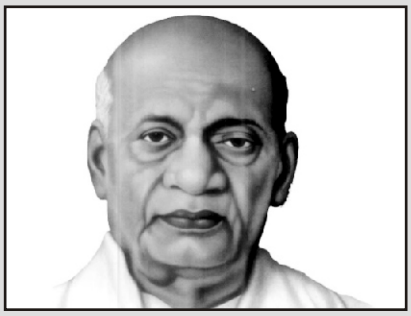

एक दिन एक महत्त्वपूर्ण मामले में वल्लभभाई पटेल न्यायालय में बहस कर रहे थे। न्यायाधीश का सम्पूर्ण ध्यान अपनी बहस पर केन्द्रित करने की वे भरसक कोशिश कर रहे थे। इसी बीच उन्हें एक अति आवश्यक तार दिया गया। वल्लभभाई ने वह तार पढ़ा, कागज को मोड़ लिया और अपनी जेब में रख लिया। बहस जारी रही। जब बहस समाप्त हुई और वे बैठ गए तभी उनके सहयोगियों को पता चल गया कि उनकी पत्नी का देहान्त हो गया है।

वल्लभभाई ने यह दुःखद समाचार पढ़ा और जैसे कुछ हुआ ही नहीं, इस लहजे में अपनी बहस जारी रखी और झूठे मुकदमें में फाँसी होने से एक व्यक्ति को बचा लिया।

यह थी उनकी कर्त्तव्य के प्रति ईमानदारी व लौह जैसी दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण ही वे आजादी के बाद भी सारी रियासतों का एकीकरण कर सके।

सुन्दर लेखन

शिक्षक का दायित्व एवं योगदान

❐ कमल कुमार जांगिड़

सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना-सीखने के इन सोपानों में चतुर्थ सोपान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः सुन्दर वर्णों का लिखना स्थाई छाप छोड़ता है। सुन्दर लेखन (हस्तलेखन) व्यक्तित्व का आइना होता है। कुछ बालकों का लेखन स्वाभाविक रूप से सुन्दर होता है, कुछ समय के साथ सुधार कर लेते हैं। यद्यपि शिक्षकों को चाहिए कि वे प्राथमिक स्तर पर ही लिखावट-सुधार हेतु प्रयास प्रारम्भ करें। विद्यार्थी अपने शिक्षक की लिखने की शैली का अनुसरण करते हैं।

हिन्दी के सन्दर्भ में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है, अतः सर्वप्रथम हमें हिन्दी वर्णों को लिखने का अभ्यास करवाया जाना चाहिए। कुछ शिक्षाविदों का मानना है कि गणित के अंकों का ज्ञान व लिखना सहज एवं रुचिकर हो सकता है परन्तु हिन्दी शिक्षण में लेखन पूर्व अभ्यास क्रियाएँ जैसे आड़ी, तिरछी रेखाएँ, वर्णों के मोड़ हेतु चित्रों के साथ विशेष क्रियाएँ करवाना एवं सतत ध्यान देने की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ 'क' से कबूतर के लिए 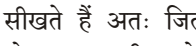 चित्रांकन अभ्यास में आकृति के साथ उच्चारण एवं अभ्यास क्रियाएँ स्थाई अधिगम को परिलक्षित करेंगी। उक्त प्रकार की संरचनाएँ सीखने एवं सृजनात्मकता के दृष्टिकोण से भी बहुत उपयोगी हो सकती हैं। शिक्षक स्वयं शुद्ध एवं सुन्दर वर्णों को श्यामपट्ट पर लिखे, तत्पश्चात् अंगुलियों एवं कलाई से हवा में अभ्यास करवाए। ध्यान रहे कि वर्णों का आकार वैसा ही होना चाहिए जैसा पाठ्यपुस्तकों में छपा हो अथवा वर्णों को मानकीकृत रूप में ही लिखना चाहिए। गणित के शिक्षकों को चाहिए कि वे संख्याओं के मानक रूप यथा 1, 2, 3, 4 आदि ही लिखें। प्रारम्भ में प्रायः देखने में आता है कि बालक लिखते हैं।

आंग्लभाषा शिक्षक के लिए Pre writing Exercises बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक स्वयं अभ्यास करते हुए (Finger and wrist Movement in air) विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ। C I ↄ writing strokes के माध्यम से प्रारम्भ में Small letters ही सिखाएँ।

विद्यार्थियों को लिखने के लिए पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए। प्रत्येक बालक को शिक्षक श्यामपट्ट लेखन के अलावा, उनकी अभ्यास-पुस्तिकाओं में स्वयं लिखकर बताएँ। सूक्ष्म अवलोकन करें। गृह सीमित, उपयोगी एवं लिखावट सुधारने के प्रयासों के दृष्टिकोण से ही दिया जाना चाहिए। जिससे गृह कार्य भी बोझ न बनकर सहज एवं सुगम हो सके।

चित्रांकन के माध्यम से यदि वर्ण पढ़ाए एवं सिखाए जा रहे हैं तो वर्ण की आकृति उक्त चित्र में प्रतिबिम्बित हो। जैसे- वृक्ष के पते या पत्ती से अ, ज, च, उ आदि वर्ण निकाले जा सकते हैं। अंग्रेजी में H से हट, C से कैट आदि। श्यामपट्ट का विविध रूपों में प्रयोग कर हस्तलेखन, वर्गीकरण करके सिखाया जा सकता है। इससे समय व श्रम की बचत भी होती है एवं शिक्षण भी प्रभावी होता है। सच तो यह है कि बालक अनुकरण से ही सीखते हैं अतः जितना सुन्दर हमारा लेखन होगा, उतना ही हमारे विद्यार्थियों में परिलक्षित होगा। शिक्षक की छवि अन्ततः बालकों में ही प्रतिबिम्बित होती है।

कुछ सहज-सरल एवं अभ्यास के लिए रेखांकन एवं चित्रावली-

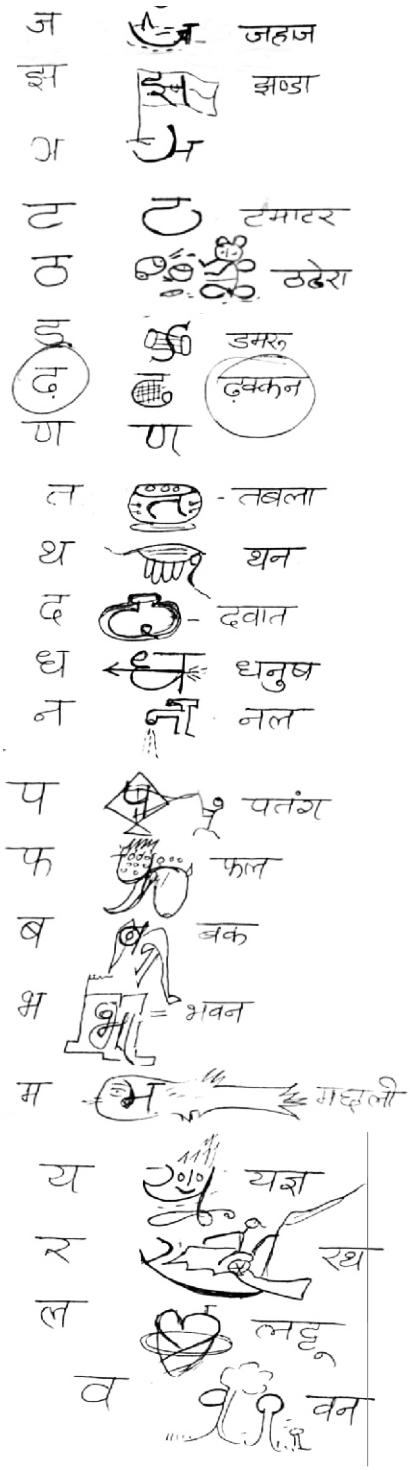

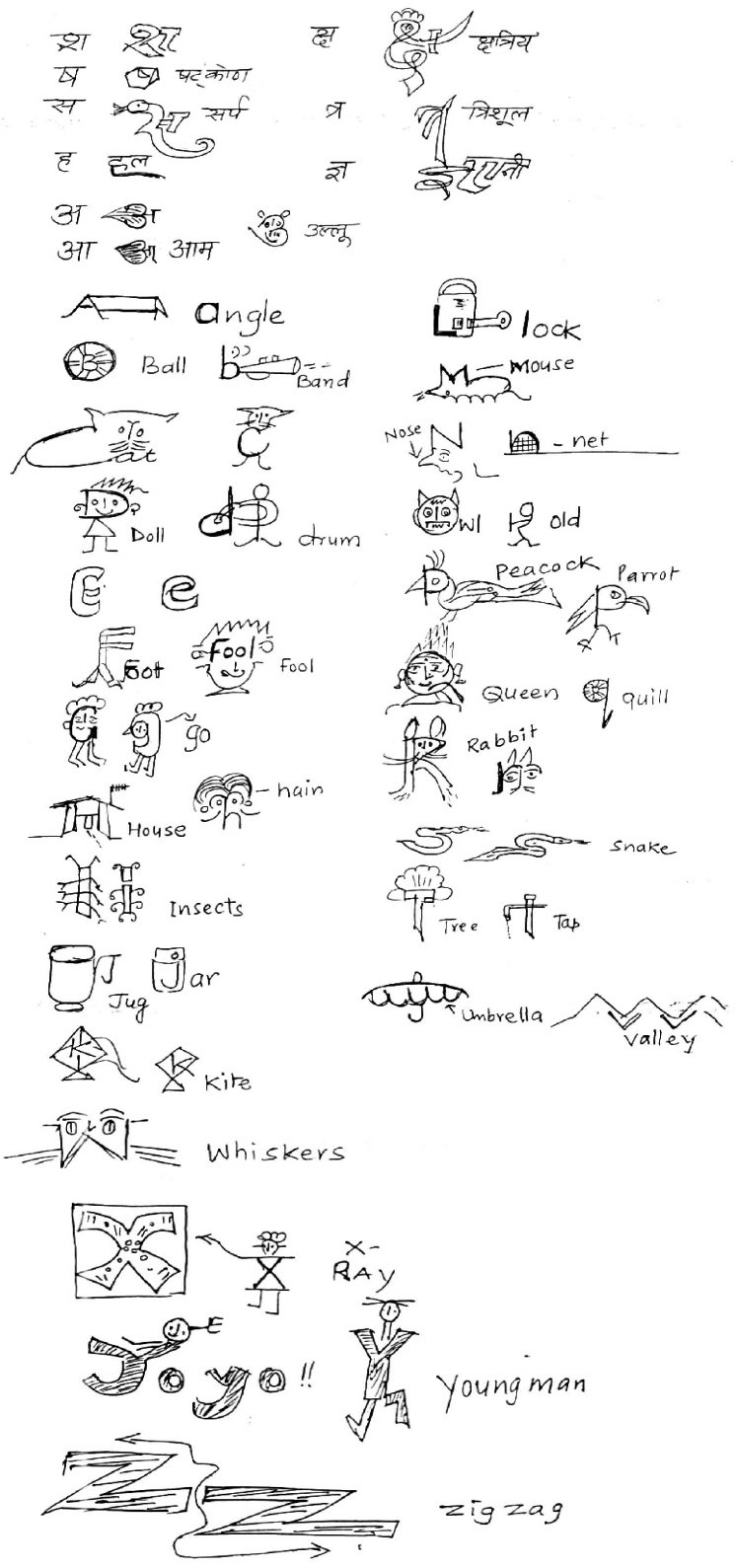

(अध्यापक)
कृष्णा विहार, पारीक कॉलोनी, कुचामन सिटी, नागौर
मो. 9928278014

संस्कृत दिवस

मातु-नमनम्

❒ सीताराम सोनी

धात्री मम् श्री सम्

जननी वा दात्री जन्म माम्।

धरित्री तुल्य मातृ मम्

धारिणी, उद्धारिणी।

पोषिता मम् शिक्षिताया

पितृ सह विकसित कृता

विभिन्नेषु आयामाषु

भार वहनम् प्राण यावत्

सृजन शक्तिः, भक्ति दत्वा-

पूरिताः संस्कारदा या

विमल धीः संपन्न कर्त्री

बलम् जलम् प्रसारिता या

ईश वन्दन, बोधदात्री

त्वम् ईशस्य छायाचित्रम्।

मातु! तुभ्यम् नमन कोटि,

क्षमे मामपराधनम् .....

मातु वन्दे, मातु नमनम्।

से.नि. व्याख्याता
रेल्वे स्टेशन के पास लाडनूं,
जिला-नागौर

कला शिक्षा

कला : जीवन का अभिन्न अंग

❒ वेहनाराम सोनगरा

मानव मन के विचारों की अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप में होती है। विकास के पूर्व यह संकेतों के माध्यम से होती थी। संगीत में यह अभिव्यक्ति ताल व लय में निकलती है। नाटक में हाव, भाव तथा नृत्य के माध्यम से व्यक्त होती है तो चित्रकला में रंग डिजाइन के रूप में स्पष्ट होती है।

कला बड़ी कामणी घर सुधारे काज,
कल्प घट में सोवणी मत होजे उदास।
कला पारखी हुनर तणी हर कोई के पास,
कला निपजे बड़ाई सूं उपजावे अनुराग।।

भारत में प्राचीन काल से ही कलाओं का विकास हुआ है। हमारे देश में चौसठ कलाओं के बारे में प्राचीन ग्रन्थों में बताया है। वैसे तो कला किसी भी कार्य को सुन्दर ढंग से करने को कहा जाता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कला का अपना स्थान है। नाट्य, संगीत तथा चित्रकला तो विशिष्ट कलाएँ है।

जीवन जीना भी एक कला है। कुछ व्यक्ति सर्वसाधारण होते हुए भी अपनी कला को दर्शाते है। कुछ लोग सर्वसाधनसम्पन्न होते हुए भी अपने जीवन को भार स्वरूप समझते है, तो कुछ व्यक्ति साधन विहीन होते हुए भी अपने जीवन को सुखमय बना लेते है। यही तो जीवन की कला है। कम साधनों से उत्तम कार्य कर लेना कार्य कुशलता है या कहें कि उत्तम कला है। वर्तमान शिक्षा जगत में कम्प्यूटरीकृत शैक्षिक कार्य होने के कारण अपनी कला को दक्ष और निखारना होगा।

कला का ज्ञान एवं तदर्थ रुचि समय का सदुपयोग करने में सहायक है। कला द्वारा व्यक्ति अपनी अतृप्त इच्छाओं को पूरी कर लेता है। माना कि एक गरीब व्यक्ति धनाढ्य व्यक्ति के जीवन को नहीं जी सकता, परन्तु वह अपने स्वप्नों को चित्र के माध्यम से व्यक्त कर सकता है। संगीत की धुन में अपने जीवन के दुःखों को भूल सकता है। कला सुखी एवं शान्त जीवन का आधार है।

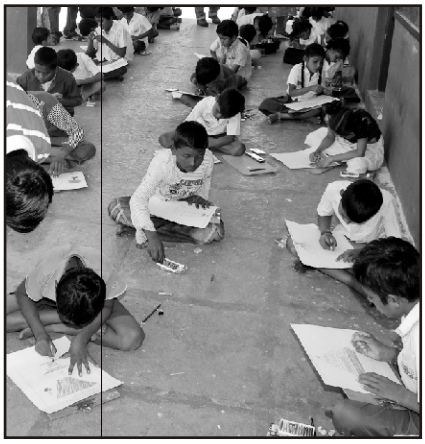

कला का सम्बन्ध जीवन से है। जीवन के हर क्षेत्र में कला को देखा जा सकता है। रसोईघर में भोजन बनाना पाक कला है। विद्यालयों में MDM में इस कला को निखारकर बालकों को स्वच्छ भोजन से स्वस्थ भारत का निर्माण कर सकते है। मकान व झोपड़ी बनाना स्थापत्य कला है। चौपाल के मनोरंजन यथा लोक नृत्य, लोक गीत एवं मन्दिरों में होने वाले भजन कीर्तन संगीत कला के परिचायक है। इस प्रकार कह सकते हैं कि कला हमारे जीवन का अभिन्न अंग है।

कला शिक्षा का जीवन में उपयोग

अपने मन के भावों को विभिन्न रूपों में प्रकट करना ही कला है। हम अपने विचारों की अभिव्यक्ति बोलकर, लिखकर या नृत्य के रूप में अथवा मूर्तियाँ या चित्र बनाकर करते हैं। ये सब कला के विभिन्न रूप हैं। एक कुशल कलाकार कम साधनों के माध्यम से भी अपनी कला प्रस्तुत कर सकता है। मैं भी एक संगीत कला प्रेमी हूँ। एक रसोइया यदि उसे पाक कला का अनुभव है, तो उसी भोजन सामग्री से स्वादिष्ट भोजन बना सकता है जबकि सामान्य रसोइया उसी सामग्री से स्वादिष्ट भोजन नहीं बना सकता। अपनी कला के द्वारा पोषाहार को स्वादिष्ट और गुणवत्तापूर्ण बना सकते हैं।

औरों के दुःख में हाथ बँटाने वाले ही सच्चे मित्र प्राप्त करते हैं।

विद्यालय में कला प्रदर्शन के क्षेत्र

विद्यालय में विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की अपेक्षा की जाती है परन्तु व्यावहारिक शिक्षा एवं कलात्मक अभिरुचि जीवन में सफलता देती है। विद्यालय में अपनी कलात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए अनेक अवसर मिलते हैं, जिनमें छात्र विभिन्न रूपों में अपनी कला का प्रदर्शन करता है। ये अवसर निम्नलिखित हैं:-

1. प्रार्थना सभा
2. महापुरुषों की जयन्तियों से सम्बन्धित कार्यक्रम
3. वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता
4. विद्यालय का वार्षिकोत्सव
5. राष्ट्रीय त्यौहार
6. विद्यालय प्रदर्शनी
7. समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शिविर
8. चित्रकला प्रतियोगिता
9. मेंहदी प्रतियोगिता
10. छात्र मेला
11. वन्य भ्रमण देशाटन व पर्यटन
12. शिक्षक अभिभावक स्नेह मिलन
13. विधिक जागरूकता प्रतियोगिता
14. जागरूकता रैली व झाँकी

उपर्युक्त अवसरों पर छात्र अपनी रुचि के अनुसार नाट्य, संगीत, कला तथा साहित्यिक विधाओं से सम्बन्धित प्रदर्शन कर सकता है।

कल की उम्मीद पर ये वक्त न खो, क्या
खबर कल ये समा हो कि न हो,
मंजिल मुझे मिले न मिले इसका गम नहीं
मंजिल की जुस्तजू में मेरा कारवाँ तो है।

व्याख्याता
जीनगर मौहल्ला, गुड़ामालानी,
जिला-बाड़मेर
मो. 9001736748

पुस्तक समीक्षा

111 कविताएँ

कवि : सुधीर सक्सेना चयन एवं **संपादन :** मजीद अहमद **प्रकाशक :** लोकमित्र, 1/6588, पूर्व रोहतास नगर, शाहदरा, दिल्ली **संस्करण :** 2016 **पृष्ठ :** 224 **मूल्य :** ₹ 395

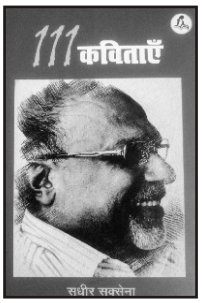

हिंदी कविता में विगत चार दशकों से सक्रिय कवि सुधीर सक्सेना की पुस्तक '111 कविताएं' उनके सात पूर्व प्रकाशित कविता-संग्रहों- 'कुछ भी नहीं अंतिम', 'समरकन्द में बाबर', 'रात जब चन्द्रमा बजाता है बाँसुरी', 'किताबें दीवार नहीं होती', 'किरच किरच यकीन', 'ईश्वर- हाँ... नहीं... तो' एवं 'धूसर में बिलासपुर' से चयनित कविताएँ है। संग्रह में इन सात कविता-संकलनों से चयनित कविताएँ कवि के इंद्रधनुषी सफर को प्रस्तुत करती हैं, वहीं इन सात रंगों में अनेक रंगों और वर्णों की आभा भी सुसज्जित नजर आती है। कहना होगा कि एक लेखक-कवि और संपादक के रूप में सुधीर सक्सेना की रचनाशीलता के अनेक आयाम हैं। वे किसी एक शहर अथवा आजीविका से बंधकर नहीं रहे, साथ ही वे विविध विधाओं में सामान्य और औसत लेखन से अलग सदैव कुछ विशिष्ट करने के प्रयास में आरंभ से ही कुछ ऐसा करते रहे हैं कि उनकी सक्रिय उपस्थिति को रेखांकित किया गया है। उनका कविता-संसार एक रेखीय अथवा सरल रेखीय संसार नहीं है कि जिसमें बंधी-बंधाई और किसी एक लीक पर चलने वाली कविताएँ हो। जाहिर है यह चयन और संकलन उनकी इसी विविधता और बहुवर्णी काव्य-सरोकारों को जानने-समझने का मजीद अहमद द्वारा किया गया एक उपक्रम है। सुधीर सक्सेना की काव्य-यात्रा के विषय में संपादक के कथन- 'उनकी कविताओं की शक्ति, सुन्दरता के आयामों की विविधता ही कवि को समकालीन हिंदी कविता की अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा करती है।' निसंदेह पाठकों और आलोचकों की सहमति पुस्तक के माध्यम से भी होती है।

पुस्तक के आरंभ में कवि सुधीर सक्सेना की काव्य-यात्रा पर प्रकाश डालती सुधी आलोचक ओम भारती की विस्तृत एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका है। साथ ही वरिष्ठ कवि-आलोचक नरेन्द्र मोहन का कवि सुधीर सक्सेना की काव्य-साधना पर एक पत्र पुस्तक में 'मंतव्य' के अंतर्गत दिया गया है। इससे यह पुस्तक शोधार्थियों और सुधी पाठकों के लिए विशेष महत्त्व की हो गई है। कविता-यात्रा के विविध पड़ावों पर यह गंभीर अध्ययन-मनन कविताओं के विविध उद्धरणों के माध्यम से नवीन दृष्टि और दिशा देने वाले हैं। इन आलेखों में जहाँ कवि के साथ अंतरंग-प्रसंगों को साझा किया गया है वहीं समकालीन कविता और सुधीर सक्सेना की कविता को लेकर विमर्श में हिंदी कविता में सुधीर सक्सेना का योगदान भी रेखांकित हुआ है। संग्रह में संकलित कविताओं में जहाँ कवि के काव्य-विकास और संभावनाओं की बानगी है, वहीं उनके सधे-तीखे तेवर और निजता में अद्वितीय अभिव्यंजना का लोक भी उद्घाटित हुआ है। इसी को संकेत करते ओम भारती लिखते हैं- 'सुधीर की कविता बरसों का रियाज, सधे-सुरों और सहज आलाप समेटती पुरयकीन कविता है। इसमें व्यंजना का रचाव है,तो लक्षणा का ठाठ भी है।'

संकलित कविताएँ वर्तमान जीवन के यथार्थ-बोध के साथ कुछ ऐसे अनुभवों और अनुभूतियों का उपवन है जिसमें हम उनकी विविध पक्षों के प्रति सकारात्मकता, सार्थकता और आगे बढ़ने-बढ़ाने की अनेक संभावनाएँ देख सकते हैं। कविताओं में कवि की निजता और अंतरंगता में प्रवाह है तो साथ ही पाठक को उसके स्तर तक पहुँच कर संवेदित करने का कौशल भी है। वे कविताओं के माध्यम से जैसे एक संवाद साधते हैं। कविताओं में कवि की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति से अधिक उल्लेखनीय उनकी सहजता, सरलता और सादगी में अभिव्यंजित होती विचारधारा है। जिसके रहते वे विषय और उसके प्रस्तुतीकरण के प्रति सजग-सचेत और हर बार नई भंगिमाओं की तलाश में उत्सुकता जगाते हुए अपने पाठकों को हर बार आकर्षित करते हैं। 'कुछ भी नहीं अंतिम' संग्रह के नाम को सार्थक करता यह संकलन अपनी यात्रा में बहुत बार हमें अहसास करता है कि सच में कवि के लिए कविता का कोई प्रारूप अंतिम और रुढ़ नहीं है। 'समरकंद में बाबर' के प्रकाशन के साथ ही हिंदी कविता में सुधीर सक्सेना को बहुत गंभीरता से लिया जाने लगा। वे जब ईश्वर के विषय में फैले अथवा बने हुए संशयों को कविता में वाणी देते हैं तो अपने अंतःकरण के निर्माण में अपने इष्ट मित्रों और साथियों की स्मृतियों-अनुभूतियों को भी खोल कर रखते हैं। 'ईश्वर- हाँ... नहीं... तो' और 'किताबें दीवार नहीं होती' जैसे संग्रहों की कविताएं सुधीर सक्सेना को हिंदी समकालीन कविता के दूसरे हस्ताक्षरों से न केवल पृथक करती है वरन यह उनके अद्वितीय होने का प्रमाण भी है। प्रेम कविताएँ हो अथवा निजता के प्रसंगों की कविताएँ सभी में उनकी अपनी दृष्टि की अद्वितीयता प्रभावशाली कही जा सकती है। ये कविताएँ कवि के विशद अध्ययन-मनन और चिंतन की कविताएँ हैं जिन में विषयों की विविधता के साथ ऐसे विषयों को छूने का प्रयास भी है जिन पर बहुत कम लिखा गया है। कवि को विश्वास है- 'वह सुख/ हम नहीं तो हमारी संततियाँ/तलाश ही लेंगी एक न एक दिन/ इसी दुनिया में।' वे अपनी दुनिया में इस संभावना के साथ आगे बढ़ते हैं।

'धूसर में बिलासपुर' लंबी कविता इसका प्रमाण है कि किसी शहर को उसके ऐतिहासिक सत्यों और अपनी अनुभूतियों के द्वारा सजीव करना सुधीर सक्सेना के कवि का अतिरिक्त काव्य-कौशल है। कविता की अंतिम पंक्तियाँ है- 'किसे पता था/ कि ऐसा भी वक्त आयेगा/ बिलासपुर के भाग्य में/ कि सब कुछ धूसर हो जायेगा/ और इसी में तलाशेगा/ श्वेत-श्याम गोलार्द्धों से गुजरता बिलासपुर/ अपनी नयी पहचान।' अस्तु कहा जा सकता है कि जिस नई पहचान को संकेतित यह कविता है वैसी ही हिंदी कविता यात्रा की नई पहचान के एक मुकम्मल कवि के रूप में सुधीर सक्सेना को पहचाना जा सकता है।

अच्छा होता कि इस संकलन में संग्रहों और कविताओं के साथ उनका रचनाकाल भी उल्लेखित कर दिया जाता जिससे हिंदी कविता के

समानांतर सज्जित इन कविता यात्रा को काल सापेक्ष भी देखने-परखने का मार्ग सुलभ हो सकता था। साथ ही यहाँ यह भी अपेक्षा संपादक से की जा सकती है कि वे अपना और कवि का एक संवाद इस पुस्तक में देते अथवा कवि सुधीर सक्सेना से उनका आत्मकथ्य इस पुस्तक में शामिल करते। इन सब के बाद भी यह एक महत्त्वपूर्ण और उपयोगी कविता संचयन कहा जाएगा। सुंदर सुरुचिपूर्ण मुद्रण और आकर्षक प्रस्तुति से कविताओं का प्रभाव द्विगुणित हुआ है।

समीक्षक : **डॉ. नीरज दइया**
सी- 107 वल्लभ गार्डन, पवनपुरी,
बीकानेर-334003
मो. 9461375668

जीवो राव हमीर

लेखिका : डॉ. हेमकुमारी शर्मा **प्रकाशक** : अंशुल प्रकाशन, बोहराजी का बाग, टोंक रोड, जयपुर **संस्करण :** 2012 **पृष्ठ :** 280 **मूल्य :** ₹ 500

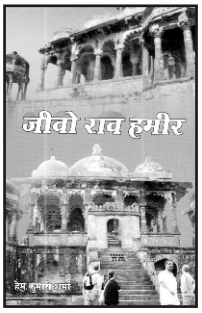

''जीवो राव हमीर'' संग्रह विदुषी लेखिका ने समकालीनता के दबाव व आग्रह को दरकिनार करते हुए पुरातन साहित्य का सिंहावलोकन किया है। डॉ. हेमकुमारी शर्मा की यह रचना गहन तिमिर में एक दीपक की लौ समान है। रणथम्भौर का राजा हमीर अपनी सादगी, पराक्रम, निर्भीकता, वीरता, सरलता, सदा चारिता, दृढ़निश्चयी स्वभाव, शरणागत वत्सलता तथा अपनी आन-बान व शान के लिए सुविख्यात है। राजस्थान वीर-प्रसविनी भूमि के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ के रणबांकुरे स्व मान-मर्यादा की रक्षा के लिए सदैव उद्यत रहते हैं। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' (माँ व मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।) राजस्थान के निवासियों के लिए 'प्राण जाय पर वचन न जाय' उक्ति भी सटीक बैठती है। यही कारण था कि यहाँ के शूर सामन्तों के पास शरणार्थी आते रहे और यहाँ के शासक अपने एवं अपने परिवार की बलि देकर भी उनकी रक्षा करते रहे। चौहान कुलभूषण रणथम्भौर के राव हमीर के बारे में एक उक्ति और भी प्रचलित है-

सिंघ सुवन सा पुरुष वचन, कदली फलै इक बार।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढै न दूजी बार।।

उपर्युक्त उक्ति हमीर के चरित्र की व्याख्या सुस्पष्ट ढंग से करती है। स्वाभाविक ही है कि इतने गुणों वाले राजा की प्रशस्ति में अनेक कवियों ने, तत्कालीन परम्परानुसार काव्य रचना की हो, इनमें से कुछ कृतियों को प्रकाशित होने का सौभाग्य मिला तो अधिकांश गुमनामी के अंधेरों में ही खोई रही। पिछले कुछ वर्षों में हिन्दी में जो साहित्यिक वातावरण बना, उसके चलते इस तरह की कृतियाँ और भी अधिक उपेक्षित हो गई। हमीर विषयक कृतियाँ भी एकदम भुला ही दी गई होती अगर डॉ. हेमकुमारी शर्मा का ध्यान महज संयोगवश इधर नहीं गया होता।

संयोगवश इसलिए कहना पड़ रहा है कि वे रणथम्भौर गईं और वहाँ उन्हें हमीर विषयक अनेक स्थलों का जिनका वास्तव में ऐतिहासिक महत्त्व है, का अवलोकन करने और उनसे सम्बद्ध अनेक ऐतिहासिक एवं इतर बातें जानने का मौका मिला। इसी से हमीर के विषय में जानने सुनने व समझने की रुचि और बढ़ी। यह बात भी यहीं खत्म हो गई होती, अगर उनके गुरुवर, उदयपुर विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के तत्कालीन आचार्य डॉ. कृष्णचन्द्र जी श्रोत्रिय ने उनके उत्साह को बढ़ाने के लिए हमीर विषयक काव्यों के साहित्यिक विवेचन का सत्परामर्श न दिया होता। डॉ. श्रोत्रिय जी की प्रेरणा और डॉ. हेमकुमारी जी के अनथक परिश्रम का ही सुफल है यह पुस्तक। इस पुस्तक में प्रत्येक काव्य का एक स्वतंत्र अध्ययन में और अन्त में समग्र काव्यों का तुलनात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन भी किया है जो डॉ. हेमकुमारी जी का उद्यमितापूर्ण व सराहनीय प्रयास है। डॉ. हेमलता जी ने इस पुस्तक को साहित्य जगत में लाने के लिए नयचन्द्र सूरिकृत 'हम्मीर महाकाव्य' (संस्कृत), भाण्डउ व्यास कृत 'हम्मीरायण', अमृतकलश कृत 'हम्मीर प्रबन्ध' जोधराजकृत 'हम्मीररासो' और कवि चन्द्र शेखर कृत 'हम्मीर हठ'-इन प्रकाशित कृतियाँ और कवि खेमकृत 'हम्मीरायण', ग्वाल कवि कृत 'हम्मीर हठ', महेशकृत 'हम्मीर रासो' नामक अप्रकाशित कृतियाँ का विशद एवं सर्वांगीण अध्ययन और विश्लेषण किया गया है। विदुषी लेखिका ने अपने अध्ययन में स्वीकृत साहित्यिक मानदण्डों के आधार पर इन कृतियों का सम्यक विश्लेषण विवेचन किया है।

विदुषी लेखिका ने अपने अध्ययन के लिए एक राजस्थानी वार्ता 'वात पातसाह अलावदीन अर हमीर हठीलारी' का भी उपयोग किया है परन्तु इस गद्य कृति को उन्होंने साहित्यिक अध्ययन के उपयुक्त नहीं समझा फिर भी इसकी कथा को टूटी हुई कड़ियों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त किया है। लेखिका ने इन कृतियों का जो विश्लेषण किया है वह यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि ये सभी कृतियाँ साहित्यिक कोटि में रखी जाने की पात्र हैं और न केवल इनका और अधिक अध्ययन-विश्लेषण होना चाहिए, इसी तरह की अन्यकृतियों को भी तलाशा और विश्लेषित किया जाना चाहिए।

मैं पुनः कृतित्व की श्लाघा करते हुए लेखिका डॉ. हेमकुमारी शर्मा को अपनी शैक्षणिक यात्रा के समय यशस्वी एवं इतिहास प्रसिद्ध हम्मीरदेव और उनके सुदृढ दुर्ग रणथम्भौर से जो दैवी प्रेरणा बीज-रूप में प्राप्त हुई, उसी का विशाल वटवृक्ष प्रस्तुत पुस्तक में प्रादुर्भूत हुआ है। उन्हें हम्मीर देव के भारत विख्यात चरित्र के सम्बन्ध में ज्ञान-पिपासा उत्पन्न हुई और उस जिज्ञासा की पूर्ति हेतु अथक परिश्रम कर तत्सम्बन्धी समस्त ज्ञात एवं अज्ञात काव्य उपलब्ध कर उनका आलोचनात्मक अध्ययन, विवेचन, संश्लेषण-विश्लेषण व अध्यवसाय कर निष्कर्ष निकाले जिनके परिणामस्वरूप इस पुस्तक का प्रादुर्भाव हुआ। लेखिका ने राव हम्मीर से सम्बन्धित तिमिराछन्न कोनों में अपनी प्रखर ज्ञान रश्मियां निक्षिप्त कर अद्यावधि अज्ञात तत्त्वों को उद्घाटित कर विद्वत्समाज के समक्ष महत्त्वपूर्ण और मौलिक सामग्री प्रस्तुत की है जो अनुसंधान क्षेत्र में अति उपादेय व साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाली सिद्ध होगी।

समीक्षक : **सांगसिंह इन्दा**
सेवानिवृत्त सहायक निदेशक मा.शि. राजस्थान,
भालू राजक, वाया-सेतरावा, जोधपुर (राज.)
मो. 9461879679

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें। -**वरिष्ठ संपादक**

रा.उ.मा.वि. गांगल्यावास ने मनाया विश्व स्वास्थ्य दिवस

विश्व स्वास्थ्य दिवस 2017 के अवसर पर रा.उ.मा.वि. गांगल्यावास ने तहसील कार्यालय रामगढ़ पचवारा परिसर जिला दौसा में 'सघन वनौषधि पौधारोपण' कार्यक्रम सम्पन्न किया। इस समारोह में जिला कलेक्टर दौसा श्रीमान् नरेश कुमार शर्मा, मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि श्री आर.सी. गुप्ता, आयुर्वेद विभाग के उपनिदेशक श्री ऋषि कुमार एवं S.D.M. रामगढ़ पचवारा सहित अनेक गणमान्य अधिकारियों ने सम्बोधित किया।

इस अवसर पर विद्यालय की ओर से 'वनौषधि प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया। इसमें 21 वनौषधीय पादपों का जीवन्त प्रदर्शन किया गया, साथ ही 50 औषधियों का 'मेरा संग्रह' नामजद भी प्रदर्शित किया गया। विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए औषधीय पौधों के 'पोस्टर' विशेष रूप से आकर्षण के केन्द्र रहे। जल संरक्षण पर एक विज्ञान मॉडल भी प्रदर्शित किया गया। जिला कलेक्टर व अतिथियों ने प्रदर्शनी, पोस्टर व मॉडल का अवलोकन कर शाला परिवार की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

रा.उ.मा.वि. केलवाड़ा (राजसमंद) की प्रतिभाओं को लेपटॉप वितरण

महाराणा कुम्भा राउमावि. केलवाड़ा (राजसमंद) में 09.05.2017 को राज्य सरकार की शिक्षा प्रोत्साहन योजना के तहत प्रतिभावान विद्यार्थियों को लेपटॉप वितरण का ब्लॉक स्तरीय समारोह आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि उप सरपंच श्री बालकृष्ण बाँगड़ व अध्यक्षता संस्थाप्रधान मोहनलाल बलाई ने की। इस कार्यक्रम में बालिका विद्यालय की प्रधानाचार्य मनोज कुमारी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रही।

कार्यक्रम प्रभारी हितेश टेलर ने बताया कि कुल 29 चयनित छात्र-छात्राओं को लेपटॉप वितरण किया गया। इस अवसर पर नर्बदा शंकर आमेटा, मदनदास, सत्यनारायण नागौरी, इस्पाक अली, ललित आमेटा, कस्तु टॉक ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन ललित श्रीमाली ने किया।

रा.उ.मा.वि. बड़ौद की छात्राओं को साइकिल वितरण किया

श्रीमती कस्तुरी देवी धातरिया राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, बड़ौद (बहरोड़) अलवर की सत्र 2016-17 में विद्यालय की कक्षा 9 वीं की प्रवेशित 50 छात्राओं को राज्य सरकार की शिक्षा प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत साइकिल वितरित की गई। इस अवसर पर संस्थाप्रधान ने सरकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया।

स्काउट दल ने आमजन को भी योगाभ्यास करवाया

रा.आ.उ.मा.वि. कुचौली (राजसमंद) के स्थानीय संघ कुम्भलगढ़ में स्काउटों ने विभागीय अधिकारियों के साथ आमजन को भी योगाभ्यास कराया। इस अवसर पर मानमल कोली समन्वयक, आयुर्वेदिक विभाग के डॉ. राकेश सैनी भी उपस्थित रहे।

रा.प्रा.वि. राजीव नगर, बीकानेर ने मनाया प्रवेशोत्सव

राजकीय प्राथमिक विद्यालय नायकों का मौहल्ला, राजीव नगर, बीकानेर में दिनांक 24.6.2017 को द्वितीय प्रवेशोत्सव समारोह के दौरान प्रारम्भिक शिक्षा बीकानेर के शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी श्री शिवशंकर चौधरी द्वारा विद्यालय के 70 विद्यार्थियों को विद्यालयी गणवेश का वितरण किया गया। संस्थाप्रधान श्री राजूराम नायक ने इस अवसर पर अपने स्व. पिताश्री कुम्भाराम की 10 वीं पुण्यतिथि पर शाला के समस्त विद्यार्थियों के गणवेश, कार्यक्रम का सम्पूर्ण व्यय मय अल्पाहार व प्रतीक चिह्नों के स्वेच्छा से स्वयं वहन करने की जिम्मेदारी ली। श्री चौधरी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि 'ऐसे आयोजन निश्चित रूप से नामांकन वृद्धि, ठहराव दर तथा जरूरतमंद को फायदा पहुँचाने वाले सिद्ध होंगे। कार्यक्रम में प्रेम नायक, रामदेव डगला, फतेहचन्द, विष्णुनायक, शनि, सुखदेव मदन लाल आदि ने भी विचार रखे।

सकारात्मक सोच ने बदली विद्यालय की तस्वीर

रा.मा.वि. जयसिंहपुरा (छोटा) लक्ष्मणगढ़, अलवर में संस्था प्रधान श्री राकेश कुमार शर्मा के नेतृत्व में स्टाफ एवं ग्रामीणों के सहयोग से एक वर्ष में ही विद्यालय की कायाकल्प कर अनुकरणीय कार्य किया गया है। विद्यालय परिवार ने अपने सकारात्मक प्रयासों से विशेष पहिचान बनाते हुए स्टाफ ड्रेस कोड लागू किया है। बच्चों व स्टाफ का आई. डी. कार्ड निर्धारित है। एक उद्यान भी विकसित किया है। इस प्रकार संस्थाप्रधान ने अपने कार्यग्रहण के पश्चात सकारात्मक सोच से विद्यालय की दशा और दिशा को ही बदल दिया। जर्जर भवन की मरम्मत, पुताई के बाद विद्यालय भवन सुन्दर व आकर्षक बन पड़ा है। आमजन के सहयोग से कक्षा 10 वीं के विद्यार्थियों के लिए फर्नीचर तैयार करवाया गया है। कुछ दिन पूर्व फिलीपींस की राजकुमारी मारिया आमोर ने भी विद्यालय का अवलोकन कर तारीफ की। विद्यालय में बाल संसद का गठन भी किया गया।

रा.मा.वि. सांवलोदा लाड़खानी में प्रतिभाओं का सम्मान

रा.मा.वि. सांवलोदा लाड़खानी (सीकर) में प्रवेशोत्सव व प्रतिभा सम्मान समारोह के दौरान ग्रामवासियों ने 21,000 रु. बच्चों के विद्यालय आवागमन के लिए वैन के किराए पेटे दिए। मुख्य अतिथि श्री गोरधन वर्मा (विधायक धोद) ने विद्यालय के हर क्षेत्र में अग्रणी होने पर शाला परिवार की प्रशंसा की। कार्यक्रम अध्यक्ष जिला प्रमुख श्री शोभ सिंह अनोखूं व प्रधानाध्यापक फूलसिंह भास्कर ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। विशिष्ट अतिथि प्रहलाद सिंह शेखावत के अलावा रोहिताश थालोड़, राजेश पूनिया ने प्रतिभाओं की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में राष्ट्रीय खिलाड़ी पूजा कंवर तथा विद्यालय परीक्षा परिणाम में सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त मोनिका को गोल्ड मैडल व प्रतीक चिह्न देकर, कुल 26 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

रा.उ.मा.वि. मोलिसर बड़ा में P.T.A. बैठक सम्पन्न

रा.उ.मा.वि. मोलिसर बड़ा (चूरू) तीसरी PTA बैठक की अध्यक्षता प्रतापसिंह, मु.अ. रामेश्वर जाँगिड़, वि.अ. ईश्वरसिंह राठौर व गीता देवी ने विचार व्यक्त किये। संस्थाप्रधान प्रतापसिंह सहारण ने वार्षिक प्रतिवेदन में नामांकन वृद्धि, विद्यालय विकास व परीक्षा परिणाम की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर विद्यालय के 9 (नौ) बच्चों को लेपटॉप मिलने पर विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। मेरिट में आने वाले विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया। साथ ही हवासिंह ने अभिभावकों को राजकीय विद्यालयों में प्रवेश दिलाने की शपथ दिलाई तथा नवप्रवेशित विद्यार्थियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर समस्त शाला परिवार व एस.डी.एम.सी. कार्यकारिणी तथा अभिभावक गण उपस्थित रहे।

जिला स्तरीय प्रवेशोत्सव (17-18) रा.बा.उ.प्रा.वि. शिवाजी पार्क अलवर में सम्पन्न

अलवर में जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा जिला स्तरीय प्रवेशोत्सव कार्यक्रम (2017-18) रा.बा.उ.प्रा.वि. शिवाजी पार्क, अलवर में सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि शहर विधायक श्री बनवारी लाल सिंघल एवं अध्यक्ष श्री अशोक खन्ना चैयरमेन नगर परिषद् तथा विशिष्ट अतिथि श्री विष्णु स्वामी उपनिदेशक (प्रा.शि.) जयपुर रहे। कार्यक्रम में अनेक जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक, स्थानीय समुदाय व अलवर शहर के संस्थाप्रधानों व भामाशाहों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। मुख्यअतिथि ने 40 नव प्रवेशी विद्यार्थियों का स्वागत किया तथा नामांकन बढ़ाने व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की अपील की।

संस्थाप्रधान श्रीमती हेमलता ने अपने कार्यकाल में किए गए नवाचार व विद्यालय की प्रगति के बारे में बताया कि विद्यालय की मरम्मत व रिनोवेशन विद्युतीकरण, मुख्यद्वार, पाथ-वे, वर्षाजल संरक्षण, वाटर कूलर, किड्स कॉर्नर, उद्यान, चित्रकारी से भवन सुन्दर व आकर्षक बन पाया। इस मौके पर भामाशाहों का सम्मान किया गया। जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.शि.) श्री रोहिताश्व मित्तल व एडीपीसी. श्री मनोज शर्मा ने राज्य सरकार की शिक्षा विभागीय योजनाओं पर जानकारी दी। संस्थाप्रधान ने सभी का आभार जताया।

रा.उ.मा.वि. कोटड़ा (जावाजा) (अजमेर) को मिली एक राष्ट्रीय उपलब्धि

विद्यालय को राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक जागरूकता का 'पेरामेरिका स्पिरिट ऑफ कम्यूनिटी अवार्ड 2017' के लिए चयन किया गया। स्काउट दल प्रभारी नरेन्द्र सिंह शेखावत ने दिल्ली में आयोजित भव्य समारोह में ओलंपिक खिलाड़ी सायना नेहवाल व सीईओ. अनूप पेबी के हाथों सम्मान प्राप्त किया। दल में स्काउट अजयपाल सिंह, रोहित, पंकज, पद्म व प्रताप शामिल थे। दल को यह पुरस्कार जीव जन्तु व पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता, उत्तरदायित्त्व की भावना, सुरक्षा व संरक्षण के साथ जागरूकता पर किए गए सुप्रयासों के प्रोजेक्ट रिपोर्ट के आधार पर दिया गया। लौटने पर संस्था प्रधान ने दल का भव्य स्वागत किया। SDMC. सदस्यों ने बधाई दी। रजत पदक के साथ दल को गोल्ड मैडल ट्रॉफी व 50,000 रु. प्रदान किए गए।

रा. चौपड़ा उ.मा.वि. गंगाशहर में भामाशाहों का सम्मान

श्रावण मास के प्रथम सोमवार 10/7/17 के पावन अवसर पर राजकीय चौपड़ा उच्च माध्यमिक विद्यालय, गंगाशहर, बीकानेर में भामाशाहों द्वारा भेंट किए गए 32 सीसीटीवी. कैमरों, 40 पंखों तथा 50 ट्यूबलाइटों का विधिवत् उद्घाटन किया गया। प्रधानाचार्य श्री मोहर सिंह यादव ने प्रधानाचार्य कक्ष से बटन दबाकर विधिवत् सीसीटीवी कैमरों का उद्घाटन किया। यह जिले का प्रथम राजकीय विद्यालय है जिसमें सीसीटीवी. कैमरे लगे हैं। इस अवसर पर विद्यालय के द्वितीय बैच के एलुमनी आसकरण सुराणा, दिलीप बोथरा, जयंत मरोठी, केशरी चन्द मालू, मनोज राठी, राजकुमार दुग्गड़, नवरतन डागा, अशोक चांडक, डालचन्द भूरा, पुखराज दुग्गड़, मधुसूदन मारू इत्यादि शाला में मौजूद रहे। श्री सुनील कुमार बोड़ा (व्याख्याता) ने प्रेरक की भूमिका निभाई। कार्यक्रम के समापन पर व्याख्याता श्री करणीदान कच्छावा एवं श्री कमल भारद्वाज ने भामाशाहों तथा एलुमनी को साधुवाद ज्ञापित किया। प्रधानाचार्य श्री मोहरसिंह यादव ने एलुमनी से विचार-विमर्श कर आगामी रूपरेखा तैयार की। विद्यालय में प्रत्येक कक्षा व मैदान में कैमरे लगे है व प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था की गई है।

रा.उ.मा.वि. डोली, जोधपुर में किया मंत्री जी ने निरीक्षण

रा.उ.मा.वि. डोली (जोधपुर) में दिनांक 12.7.17 को माननीय शिक्षा मंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी जी, विधायक श्री जोगाराम जी पटेल के निरीक्षण पर विद्यालय के श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम, सह शैक्षिक गतिविधियों, भौतिक संसाधनों के बारे में संस्थाप्रधान रूपाराम जी पटेल ने जानकारी दी। छात्रों से पूछ-ताछ करके मंत्रीजी व विधायक महोदय ने शाला में गुणवत्ता व व्यवस्था पर विद्यालय की प्रशंसा की।

शाला में नये ब्लॉक निर्माण हेतु शिलान्यास व भूमि पूजन समारोह

रा.उ.मा.वि. रतननगर, चूरू में दानदाता श्री हरिप्रकाश बुद्धिया, श्रीनारायण बुद्धिया, श्री किशन बुद्धिया द्वारा प्रारंभिक ब्लॉक के नये सिरे से पुनः निर्माण हेतु उसी स्थान पर शिक्षा विभाग के अधिकारी एवं संस्थाप्रधान के सान्निध्य में शिलान्यास एवं भूमि पूजन का कार्यक्रम किया। कार्यक्रम में उपनिदेशक मा.शि. चूरू श्री महेन्द्र सिंह चौधरी, उपनिदेशक प्रा. शि. चूरू श्रीमती आशा तिवाड़ी जिशिअ. मा. चूरू श्री तेजपाल उपाध्याय को माल्यार्पण व शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। छात्र/छात्राओं ने सरस्वती वंदना, स्वागत गीत व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। अधिकारियों द्वारा दानदाता/भामाशाहों को भी सम्मानित किया गया।

उपस्थित शिक्षा अधिकारियों ने अपने आतिथ्य उद्बोधन में कहा कि विद्यालय में नामांकन वृद्धि, भामाशाहों को प्रेरित करने व गुणवत्ता पर जोर देना चाहिए। शाला के परीक्षा परिणाम पर संस्थाप्रधान श्रीमती कुसुम शेखावत एवं स्टाफ को धन्यवाद दिया। संचालन श्री हरदयाल सिंह व.अ. ने किया।

संकलन : **नारायण दास जीनगर**

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

हमेशा ऊर्जा देने वाला रिएक्टर इस साल तैयार होगा

येकातेनरिंगबर्ग : चेन्नई के पास कलपक्कम में बंगाल की खाड़ी के किनारे बन रहा भारत का पहला फास्ट ब्रीडर रिएक्टर निर्माण के अंतिम चरण में हैं। इस रिएक्टर से मिलने वाली ऊर्जा कभी खत्म नहीं होगी। कलपक्कम में बन रहे इस प्रोजेक्ट पर 15 साल से काम चल रहा है। रूस के येकातेनरिंगबर्ग में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेन्सी के सम्मेलन में इस पर चर्चा की गई। इंदिरा गाँधी सेंटर फॉर अटॉमिक रिसर्च, कलपक्कम के निदेशक अरुण कुमार भंडारी ने कहा-''अभी दुनिया में व्यावसायिक तौर पर संचालित एकमात्र फास्ट ब्रीडर रिएक्टर रूस के उराल पर्वतों में बेलायार्सक परमाणु ऊर्जा संयंत्र में स्थित है। इसको लेकर दिलचस्पी इतनी अधिक है कि 30 से ज्यादा देशों से 700 से ज्यादा परमाणु विज्ञानी सम्मेलन में हिस्सा लेने पहुँचे।''

कमाल की होगी इंटरनेट स्पीड

नई दिल्ली : इसरो के आगामी संचार उपग्रह जीसैट-19 और जीसैट-11 भारत के संचार क्षेत्र की दशा और दिशा बदल सकते हैं। इनके प्रक्षेपण के साथ ही डिजिटल भारत को मजबूती मिलेगी तथा ऐसी इंटरनेट सेवाएँ मिलेगी जैसे कि पहले कभी नहीं मिली। इसरो श्रीहरिकोटा में भारत के रॉकेट पोर्ट से इसके प्रक्षेपण की योजना बना रहा है। एक शानदार नया रॉकेट नए वर्ग के संचार उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजने के लिए तैयार है। जीसैट-19 उपग्रह को अंतरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र, अहमदाबाद में बनाया गया है। केन्द्र के निदेशक तपन मिश्रा ने इसे भारत के लिए संचार के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी उपग्रह बताया है। अगर यह प्रक्षेपण सफल रहा तो अकेला जीसैट-19 उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित पुराने किस्म के 6-7 संचार उपग्रहों के समूह के बराबर होगा। उन्होंने कहा, ''सही मायने में यह मेड इन इंडिया उपग्रह डिजिटल भारत को सशक्त करेगा।''

अगले साल सूर्य पर विश्व का पहला मिशन शुरू करेगा नासा

वाशिंगटन : नासा अगले साल सूर्य पर विश्व के पहले मिशन की शुरुआत करेगा जिसमें हमारे तारे का वायुमंडल संबंधी अन्वेषण किया जाएगा और सौर भौतिकी के बारे में उन प्रश्नों का उत्तर खोजा जाएगा जिन्होंने छह दशकों से वैज्ञानिकों को उलझाया हुआ है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी ने घोषणा की कि 'पार्कर सोलर प्रोब' का नाम, दिग्गज खगोल भौतिकीविद यूजीन पार्कर के सम्मान में रखा गया है। उन्होंने करीब 60 साल पहले सौर पवन की मौजूदगी की भविष्यवाणी की थी। नासा के 'साइंस मिशन डायरेक्टोरेट' के सहायक प्रशासक थॉमस जुरबुचेन ने कहा, नासा ने पहली बार किसी जीवित व्यक्ति के नाम पर अंतरिक्ष यान का नाम रखा है। एक छोटी कार के बराबर के आकार वाला अंतरिक्ष यान हमारे तारे के बारे में कई बड़े रहस्यों का खुलासा करेगा। यह इस रहस्य पर से भी पर्दा उठाने की कोशिश करेगा कि सूर्य का कोरोना इसकी सतह से इतना गर्म क्यों होता है।

दुनिया का पहला बैटरीमुक्त फोन

वाशिंगटन : वैज्ञानिकों के एक दल ने दुनिया के पहले बैटरीमुक्त सेल फोन का आविष्कार किया है। यह फोन लगभग शून्य ऊर्जा की खपत करता है और रोशनी से ऊर्जा हासिल करके चलता है। इन वैज्ञानिकों ने इस बैटरीमुक्त फोन का इस्तेमाल कर स्काइप कॉल भी किया और दिखाया कि यह उपकरण किसी भाषण को ग्रहण या प्रसारित कर सकता है। साथ ही यह किसी बेस स्टेशन के साथ संवाद भी कायम कर सकता है।

अर्णव का आईक्यू आइंस्टीन से ज्यादा

लंदन : ब्रिटेन में भारतीय मूल का 11 साल का लड़का 'मेन्सा आईक्यू टेस्ट' में सर्वाधिक 162 अंक हासिल कर ब्रिटेन का सबसे ज्यादा बुद्धिमान बच्चा बन गया है। उसने आईक्यू टेस्ट में महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन और स्टीफन हॉकिंग से दो अंक अधिक हासिल किए हैं। दक्षिण इंग्लैण्ड में रीडिंग टाउन में रहने वाले 'अर्णव शर्मा' ने कुछ सप्ताह पहले मेन्सा आईक्यू टेस्ट को पास किया। उन्होंने सबसे मुश्किल टेस्ट माने जाने वाले मेन्सा को बिना किसी तैयारी के पास किया। उन्होंने इससे पहले भी कभी यह टेस्ट नहीं दिया था।

जैतून कैंसर रोकने में सहायक

लंदन : जैतून के तेल का एक प्रमुख घटक लोगों को मस्तिष्क कैंसर से बचाने में सहायक हो सकता है। एक नए अध्ययन के नतीजों में शोधकर्त्ताओं ने यह दावा किया है। शोधकर्त्ताओं के अनुसार, जैतून के तेल में ओलिइक एसिड नामक एक घटक पाया जाता है। यह कैंसरकारी जीन को कोशिकाओं में सक्रिय नहीं होने देता, जिससे ट्यूमर का निर्माण नहीं हो पाता। इस तरह यह मस्तिष्क में कैंसर को विकसित होने से रोकता है। उन्होंने कहा, ''ओलिइक एसिड शरीर को एक कोशिकीय कण के उत्पादन के लिए प्रेरित करता है, जिसका काम कैंसर का कारण बनने वाले प्रोटीनों के निर्माण को रोकना है।'' ब्रिटेन की एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी के प्रमुख शोधकर्त्ता ग्रांजान माक्लेवस्की ने कहा, ''हालांकि अभी हम यह नहीं कह सकते कि आहार में जैतून के तेल का इस्तेमाल करने से मस्तिष्क कैंसर को रोकने में मदद मिलेगी। लेकिन हमारे अध्ययन के नतीजों ने दिखलाया है कि इसमें पाया जाने वाला ओलिइक एसिड कोशिकाओं में ट्यूमररोधी कणों का उत्पादन करने में सहायक है।''

दिमागी क्षमता जाँचने वाली प्रणाली शुरू

नई दिल्ली : विद्यार्थियों को सीखने-समझने में आ रही समस्याओं की पहिचान करने वाली एक वैश्विक प्रणाली की शुरुआत भारत में हुई है। इससे विद्यार्थियों को अपना शैक्षणिक कौशल सुधारने में मदद मिलेगी। स्वतंत्र कौशल आधारित मूल्यांकन परीक्षा (आईसीएएस) ऑस्ट्रेलिया की यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू साउथ वेल्स की पहल है। भारत में इसकी शुरुआत 'मैक्मिलन एज्यूकेशन इंडिया' ने की है। इससे अभिभावकों व शिक्षकों को छात्रों की योग्यता जानने में मदद मिलेगी।

स्वचालित वाहन वायु प्रदूषण के मुख्य स्रोत

बीजिंग : चीन के पर्यावरण संरक्षण मंत्रालय की नई रिपोर्ट में स्वचालित वाहन चीन के वायु प्रदूषण के प्रमुख स्रोत के रूप में उभरे है। सन् 2016 के अंत तक चीन में स्वचालित वाहनों की संख्या 29.5 करोड़ हो चुकी थी। इनसे लगभग 4.47 करोड़ टन वजनी प्रदूषक तत्वों का उत्सर्जन हुआ है। हालांकि यह साल दर साल की अवधि से 1.3% कम है। फिर भी यह खासी बड़ी मात्रा है। जो चिंता का विषय है।

संकलन : **नारायण दास जीनगर**

झालावाड़

रा.बा.उ.मा.वि., रायपुर तह. पिडावा को श्रीमती रामकन्या चन्द सेना से अलमारी हेतु 32,000 रुपये प्राप्त हुए, शाला परिवार से विद्यार्थियों के स्वेटर व जूते-मौजों हेतु 7,000 रुपये प्राप्त हुए, गुप्तदान से एक अलमारी प्राप्त हुई। **रा.आ.उ.मा.वि., हरीगढ़** तह. खानपुर में श्रीमती कमला बाई द्वारा पानी की टंकी मय फिटिंग हेतु 10,000 रुपये प्राप्त हुए। श्री जयप्रकाश बोहरा से विद्यार्थियों के स्वेटर हेतु 3,000 रुपये प्राप्त हुए, श्री रामस्वरूप शर्मा से 21,000 रुपये नकद, श्री बजरंगलाल नागर (पूर्व सरपंच) से 1,100 रुपये नकद, श्री बृजराज नागर से 1,100 रुपये नकद, श्री विजयशंकर नागर से 1,100 रुपये नकद विद्यालय विकास हेतु प्राप्त हुए। **रा.आ.उ.मा.वि. पारा पीपली** को श्री नटवर सिंह झाला एक लेपटॉप प्राप्त हुआ। जिसकी लागत 32,000 रुपये। **रा.आ.उ. मा.वि., नारायण खेड़ा** पं.स. भवानीमण्डी को डॉ. मनमोहन शर्मा शिक्षक संघ अध्यक्ष व श्री सुरेश कुमार कुम्हार द्वारा एक कम्प्यूटर प्रिन्टर, स्केनर, जेरोक्स मशीन UPS प्राप्त हुई जिसकी लागत 35,000 रुपये, श्री दिनेश कुमार शर्मा (प्रधानाचार्य) से दो सोफा बेन्च जिसकी लागत 7,000 रुपये, श्री बजरंग सिंह सिसोदिया से 5 ऑफिस चेयर जिसकी लागत 5,500 रुपये, श्री जाकिर भाई द्वारा लेटबाथ रिपेयर हेतु 11,000 रुपये नकद प्राप्त हुए, सर्व श्री सन्तोष कुमार शर्मा (शा.शि.), अशोक कुमार जोशी, अशोक कुमार नागर, उमाशंकर शर्मा, श्रीमती रेखा चौहान, मोना शुक्ला, रश्मि शर्मा, मनोज मीणा, श्रीनाथ गुप्ता प्रत्येक से एक-एक पंखा प्राप्त हुआ जिसकी प्रत्येक की लागत 1,250 रुपये। **रा.मा.वि. कलेक्ट्री झालावाड़** को श्री अरविन्द उपाध्याय व श्री रमेश प्रजापत द्वारा छात्र-छात्राओं हेतु स्वच्छ व ठण्डे पेयजल हेतु वाटर कूलर विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 35,000 रुपये, भारतीय जीवन बीमा निगम झालावाड़ (LIC) के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में विद्यालय को 25,000 रुपये का चैक दिया। **रा.उ.प्रा.वि., गंगापुरा का खेड़ा** को श्री रामचन्द्र संताणी (प्रधानाध्यापक) से एक लक्जरी कुर्सी व एक पंखा प्राप्त हुआ जिसकी लागत 5,000 रुपये।

झुंझुनूँ

रा.आ.उ.मा.वि., भुकाना में श्रीमती गीता देवी स्वामी द्वारा पानी की टंकी का निर्माण करवाया गया जिसकी 1,00,000 रुपये, ग्रामीणों द्वारा एक कम्प्यूटर, एक स्केनर व एक प्रिन्टर जिसकी लागत 40,000 रुपये। **शहीद मोहर सिंह काजला रा.आ.उ.मा.वि., हरड़िया तह. खेतड़ी** को इंजीनियर श्री कैलाश चन्द्र रोहिलाण द्वारा एक लाख रुपए की लागत से समस्त कक्षा-कक्षों में सीसीटीवी. कैमरे लगवाए, श्री रामसहाय काजला से एक वाटर कूलर मय आर.ओ. प्राप्त हुआ जिसकी लागत 50,000 रुपये, श्री मूलचन्द मंगावा (से.नि. प्रधानाचार्य) से एक प्रिंटर मय स्केनर प्राप्त हुआ जिसकी लागत 15,000 रुपये। **रा.आ.उ. मा.वि., भूदे का बास** को श्री सीताराम शर्मा द्वारा सम्पूर्ण विद्यालय भवन, दरवाजों, खिड़कियों पर सफेदी तथा रंग-रोगन का कार्य करवाया गया जिसकी लागत 1,50,000 रुपये। **रा.आ.उ.मा.वि., लोहरड़ा** (लोहार्गल), नवलगढ़ को श्री जनार्दन अग्रवाल हाल प्रवास मुम्बई से एक CPU, मोनीटर, HP प्रिन्टर, UPS, की-बोर्ड, साथ में माऊस प्राप्त हुआ जिसकी लागत 43,386 रुपये। **रा.आ.उ.मा.वि., गोठड़ा** तह.

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-वरिष्ठ संपादक**

हमारे भामाशाह

नवलगढ़ को श्री विजेन्द्र सिंह सींगड़ (राज. विज्ञान व्याख्याता) द्वारा सत्र 2015-16 में कक्षा 10-12 वीं (बोर्ड परीक्षा) में प्रथम श्रेणी अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को अपने वेतन से 1,000 रुपये की प्रति छात्र को नकद राशि इनाम स्वरूप तथा सत्र 2016 में 26 विद्यार्थियों को 26,000 रुपये वार्षिक उत्सव पर छात्र-छात्राओं को इनाम स्वरूप प्रदान किए। **रा.आ.उ.मा. वि., शिमला** को श्री कृष्ण कुमार से एक वाटर कूलर प्राप्त हुआ जिसकी लागत 20,000 रुपये, श्री राव का ईश्वर सिंह पचेरियाँ से 11,000 रुपये नकद, श्री धर्मेन्द्र (सरपंच) कम्प्यूटर लैब हेतु एक बैटरी प्राप्त हुई जिसकी लागत 12,500 रुपये। सर्व श्री श्याम सुन्दर, श्रीमती नीरजा, राजेन्द्र प्रसाद, विरेन्द्र सिंह, कर्ण सिंह, बाबूलाल पचेरियाँ से विद्यार्थियों हेतु दरियों के लिए 20,700 रुपये प्राप्त हुए, सर्व श्री गजानन्द, अशोक कुमार, तोताराम यादव (व्याख्याता) की ओर से कुर्सियों हेतु 7,200 रुपये प्राप्त हुए, श्री हरिराम बोहरा से 1,100 रुपये नकद प्राप्त हुए व अन्य भामाशाहों से 12,00 रुपये नकद प्राप्त हुए।

लाठ रा.उ.मा.वि., मण्डेला को अध्यक्ष मण्डेला नगर विकास परिषद् कलकत्ता द्वारा विद्यालय भवन का रंग-रोगन हेतु 21,000 रुपये प्राप्त हुए। **वीर चक्र स्व. कप्तान बसंताराम रा.उ.मा.वि., भगेरा, तह. नवलगढ़** को श्री बनवारी लाल कटारिया से वोल्टास कूलर विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत- 37,500 रुपये। **रा.आ.उ. मा.वि., माधोगढ़** को श्री मातादीन फागणा से 100 टेबिल, 100 स्टूल, 11 डेस्क, एक माईक सैट व चार दीवारी का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,81,000 रुपये, श्री किशोरी लाल से 5 टेबिल, 5 स्टूल प्राप्त हुई जिसकी लागत 5,500 रुपये, श्री महेन्द्र सिंह (से.नि. व्याख्याता) से एक सिलिंग फैन लागत 3,000 रुपये। **स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्री बालाराम रा.उ.मा.वि., बुडाना** में श्री मेवा सिंह बोला द्वारा 5,00,000 रुपये की लागत से एक हॉल का निर्माण करवाया गया, श्री दलीप सिंह कृष्णियाँ द्वारा 1,50,000 रुपये की लागत से 25×30 फीट का टिन शेड तथा 30 छात्र टेबिल जिसकी लागत मूल्य 25,000 रुपये, छात्र-छात्राओं हेतु 4 झूले जिसकी लागत 35,000 रुपये, वाटर कूलर मय स्टैण्ड जिसकी लागत 50,000 रुपये, जिमनास्टिक गद्दे लागत 10,000 रुपये, सीसीटीवी. कैमरे लागत 60,000 रुपये एवं 181 निर्धन छात्र-छात्राओं को स्वेटर भेंट की, श्री महावीर सिंह (व.अ.) से विद्यालय को 21,000 रुपये नकद प्राप्त हुए, श्री विद्याधर सिंह द्वारा 2 कमरों की 10 खिड़कियों के किवाड़ भेंट जिसकी लागत 30,000 रुपये।

रा.उ.मा.वि., डूमरा को श्री दयानन्द महला व श्री धर्मपाल महला से अपने पिताजी स्व. श्री सुवालाल (अ.) की स्मृति में 6 शामियानें 29 पाइप सैट, 3 कारपेट व 2 पर्दे विद्यालय को प्राप्त हुए जिसकी लागत 30,000 रुपये। **सेठ रामप्रसाद सौंथलिया रा.उ.मा.वि., इस्लामपुर** को श्री रामधार माहेश्वरी फाउंडेशन मुम्बई द्वारा 50,000 रुपये की लागत से निर्मित बास्केट बाल का एर्किलिक बोर्ड विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.मा.वि., घुमनसर खुर्द, तह. चिड़ावा** को श्री मुकेश शर्मा से कम्प्यूटर सैट, माइक सैट एक लागत 26,000 रुपये, श्री मुरारी लाल, गुलझारी लाल शर्मा द्वारा पानी की टंकी का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,00,000 रुपये, श्री महेश धतरवाल (सरपंच) से 11,000 रुपये नकद, श्री सुनील कुमार शर्मा से 5,100 रुपये नकद, श्री हनुमान राम (भू.पू. सरपंच) से 2,100 रुपये नकद, श्री सुनिल कुमार लाम्बा से 2,100 रुपये, श्री मूलचन्द भाम्बू से पाँच पंखा जिसकी लागत 6,500 रुपये, श्री सरदारा राम सहा. क. से एक पंखा, जिसकी लागत 1,300 रुपये, प्राप्त हुआ।

शेष अगले अंक में.....

संकलन- रमेश कुमार व्यास

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अगस्त, 2017 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्द जाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे को गार्ड ऑफ ऑनर प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय गीत 'वन्देमातरम्' का ओजस्वी गान गरिमामय मंच द्वारा।

माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे द्वारा दीप प्रज्वलन। साथ हैं माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी एवं शासन सचिव स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग श्री नरेशपाल गंगवार।

माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे को पुष्पगुच्छ भेंट कर अभिनंदन करते हुए माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी और गरिमामय मंच।

सर्वाधिक राशि का सहयोग करने वाले भामाशाह का सम्मान।

भामाशाहों के सम्मान में प्रकाशित 'प्रशस्तियाँ' का लोकार्पण।

(बाएँ) सम्मानित भामाशाहों शिक्षकों, अधिकारियों और गणमान्य अतिथियों को सम्बोधित करते हुए माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे, माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी तथा प्रारंभिक शिक्षा निदेशक श्री पी.सी. किशन। (दाएँ) समारोह में माननीया मुख्यमंत्री और माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के उद्‌बोधन को सुनते हुए माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल, साथ हैं विशिष्ट अतिथिगण।

फोटो : मोहन गुप्ता 'मितवा' मो. 9414265628

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● अगस्त, 2017 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 अगस्त, 2017 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

अमर जवान ज्योति

भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् इण्डिया गेट को अखिल भारतीय युद्ध स्मारक कहा जाता है। नई दिल्ली के राजपथ पर स्थित 43 मीटर ऊँचा विशाल द्वार है। यह भारत का राष्ट्रीय स्मारक है। इस स्मारक का निर्माण आजादी से पूर्व उन 9000 भारतीय सैनिकों की स्मृति में किया गया था जो प्रथम विश्व युद्ध में और अफगान युद्धों में शहीद हुए थे। यूनाइटेड किंगडम के कुछ सैनिकों सहित 13000 सैनिकों के नाम गेट पर उत्कीर्ण हैं। लाल व पीले बलुआ पत्थरों से बना यह स्मारक दर्शनीय है। इसी गेट के मेहराब के ठीक नीचे अमर जवान ज्योति स्थापित की गई है। अनाम सैनिकों की स्मृति में यहाँ एक राइफल के ऊपर सैनिक की टोपी सजाई गई है। जिसके चारों कोनों पर सदैव एक ज्योति जलती रहती है। इस अमर जवान ज्योति पर प्रतिवर्ष प्रधानमंत्री व तीनों सेना के सेनाध्यक्ष पुष्पचक्र चढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

संकलन : प्रकाश चन्द्र जाटोलिया, वरिष्ठ संपादक (शिविरा), माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर, मो. 9413926806

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011